सरोही जिले के जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन

COMPARATIVE STUDY OF EDUCATIONAL STATUS AND EDUCATIONAL PROBLEMS OF THE STUDENTS OF TRIBAL AND NON TRIBAL AREA OF SIROHI DISTRICT

A Thesis

Submitted for the Award of the Ph. D. degree of

PACIFIC ACADEMY OF HIGHER EDUCATION

AND RESEARCH UNIVERSITY

By

SMRITA SINGH MEENA

Under the Supervision of

DR. ANJALI DASHORA

Assistant Professor

FACULTY OF EDUCATION

DEPARTMENT OF

PACIFIC ACADEMY OF HIGHER EDUCATION & RESEARCH UNIVERSITY UDAIPUR

2024

भारतीय गैर न्यायिक

एक सौ रुपये Rs. 100

रु. 100 ONE HUNDRED RUPEES

सत्यमेव जयते

भारत INDIA

INDIA NON JUDICIAL

राजस्थान RAJASTHAN BS 070077

DECLARATION

I Ms. **SMRITA SINGH MEENA D/O CHATURBHUJ SINGH MEENA** resident of Meena Was Ghandhinagar Aburoad Dist. Sirohi (Raj.) hereby declare that the research work incorporated in the present thesis entitled **"COMPARATIVE STUDY OF EDUCATIONAL STATUS AND EDUCATIONAL PROBLEMS OF THE STUDENTS OF TRIBAL AND NON TRIBAL AREA OF SIROHI DISTRICT "** is my own work and is original. This work (in part or in full) has not been submitted to any university for the award of a degree or a diploma. I have properly acknowledged the material collected from secondary sources wherever required. I solely own the responsibility for the originality of the entire content.

Date: 15-02-2024 Singnature of the Candidate

Place: ABU ROAD

NOTARY B.S.CHAUHAN ADVOCATE ABU ROAD (Raj.) Reg.No :355 Dt.:3-12-97 GOVT.OF RAJASTHAN

ATTESTED 15.02.2024 (B.S. CHAUHAN) NOTARY PUBLIC ABU ROAD Dist.Sirohi (Raj.)

15 FEB 2024

नाम मुद्रांक विक्रेता महेश कुमार, दानवाव, ला. नं. 03/2021

मुद्रांक क्रेता का नाम श्री.......................पुत्र श्री..................

जाति...................... ....जिला..................

रजिस्टर क्रमांक............. दि. 15 FEB 2024

मुद्रांक देय...... ....वास्ते..............

....

....

मुद्रांक विक्रेता के हस्ताक्षर

15 FEB 2024

राजस्थान स्टाम्प अधिनियम 1998 के अन्तर्गत स्टाम्प राशि पर प्रभारित अधिभार

1 आधारभूत आवसंरचना सुविधाओं हेतु धारा (3-क) -10 % } रुपये..........

2 गाय और उसकी नस्ल के संरक्षण और संवर्धन हेतु धारा (3-ख) प्राकृतिक आपदाओं एवं मानव निर्मित आपदाओं के निवारण हेतु 20 % } रुपये..........

कुल योग..........

स्टाम्प वेंडर के हस्ताक्षर..........................

DECLARATION

I Mrs. **SMRITA SINGH MEENA** D/o **Shri CHATURBHUJ SINGH MEENA** resident of Near hanuman temple, Meenawas Gandhinagar, ABUROAD (district-sirohi) PIN code- 307026 hereby declare that the research work incorporated in the present thesis entitled **"COMPARATIVE STUDY OF EDUCATIONAL STATUS AND EDUCATIONAL PROBLEMS OF THE STUDENTS OF TRIBAL AND NON TRIBAL AREA OF SIROHI DISTRICT"** is my own work and is original. This work (in part or in full) has not been submitted to any University for the award of a Degree or a Diploma. I have properly acknowledged the material collected from secondary sources wherever required. I solely own the responsibility for the originality of the entire content.

Date: **Signature of the Candidate**

CERTIFICATE

Its gives me immense pleasure in certifying that the thesis entitled **COMPARATIVE STUDY OF EDUCATIONAL STATUS AND EDUCATIONAL PROBLEMS OF THE STUDENTS OF TRIBAL AND NON TRIBAL AREA OF SIROHI DISTRICT** and submitted by **SMRITA SINGH MEENA** is based on the work research carried out under my guidance. He/ She has completed the following requirements as per Ph.D. regulations of the University;

i. Course work as per university rules.
ii. Residential requirements of the University.
iii. Regularly presented Half Yearly Progress Report as prescribed by the University.
iv. Published/ accepted minimum of two research paper in a refereed research journal.

I recommend the submission of thesis as prescribed/ notified by the University.

Date: Name and Designation of Supervisor/s

COPYRIGHT

I, **SMRITA SINGH MEENA** hear by declare that the Pacific Academy of Higher Education and Research University Udaipur, Rajasthan shall have the rights to preserve, use and disseminate this dissertation/ thesis entitled **COMPARATIVE STUDY OF EDUCATIONAL STATUS AND EDUCATIONAL PROBLEMS OF THE STUDENTS OF TRIBAL AND NON TRIBAL AREA OF SIROHI DISTRICT** in print or electronic format for academic/research purpose.

Date:

Signature of the Candidate

Place:

आभार

शोध ग्रन्थ का प्रारम्भ करते हुए सर्वप्रथम में परमेश्वर को नमन कर विद्या की देवी माँ सरस्वती के श्री चरणों में नतमस्तक हूँ। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध सरोही जिले के जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन **"COMPARATIVE STUDY OF EDUCATIONAL STATUS AND EDUCATIONAL PROBLEMS OF THE STUDENTS OF TRIBAL AND NON TRIBAL AREA OF SIROHI DISTRICT"** जैसे विषय पर शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करना गुरु के मार्गदर्शन के बिना सम्भव नहीं।

आभार प्रदर्शन मात्र औपचारिक प्रतिक्रिया ही नहीं अपितु दिल की गहराईयों से निकले वह उद्‌गार है जिन्हें शब्दों में व्यक्त करना संभव नहीं हैं। फिर भी कृतज्ञता व्यक्त करने हेतु उन उद्‌गारों को शब्दों से व्यक्त करने का प्रयास कर रही हूँ।

मैं शोधार्थी अपनी हार्दिक कृतज्ञता डॉ. अंजलि दशोरा, सहायक आचार्य, उदयपुर के प्रति अपार अभिव्यक्त करती हूँ, जिन्होंने शोध समस्या के निर्धारण, क्रियान्वयन, समापन, प्रतिवेदन, प्रस्तुती आदि हेतु समय–समय पर सटीक निर्देशन, सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार, आत्मीयता, निःस्वार्थ ज्ञान, प्रेरणादायक पथ–प्रदर्शन कर शोध कार्य को उत्कृष्टता प्रदान की। सचमुच आपके निर्देशन में व्यतीत ये वर्ष सदैव अविस्मरणीय रहेंगे।

मैं पेसेफिक विश्वविद्यालय के डीन "उच्च शिक्षा' प्रोफेसर हेमन्त कोठारी जी के प्रति कृतज्ञ एवं श्रद्धा अभिभूत हूँ जिनके स्लेहिल व्यवहार एवं मार्गदर्शन ने मुझे यह शोध कार्य करले हेतु सदैव प्रेरित किया। आप द्वारा आयोजित शोध कार्यशालाओं द्वारा प्राप्त मार्गदर्शन से मेरा शोधकार्य निरन्तर प्रगति करता रहा।

मैं, उन लेखकों, विचारकों की भी ह्रदय से कृतज्ञ हूँ जिनके विचारों का समावेश इस शोध कार्य में स्थान–स्थान पर किया गया हैं।

मैं आभारी हूँ उन सभी ग्रंथालयों का जिन्होंने गन्थों के उपलब्धता एवं वांछित जानकारी प्रदान कर अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

मैं शोधकर्ती महाविद्यालय के समस्त संकाय सदस्य एवं मित्रगणों का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके निरन्तर सहयोग एवं प्रेरणा द्वारा शोध कार्य पूर्णता को प्राप्त कर सका। शोधकर्ती सभी विषय विशेषज्ञों जिन्होंने उपकरण निर्माण एवं शोध कार्य में अपने अमूल्य सुझाव व मार्गदर्शन प्रदान किया, उनकी हृदय से आभारी है।

शोधकर्ती अपने पिता श्री चतुर्भुज सिंह मीना एवं पूजनीय माता श्रीमती शान्ति देवी की भी आभारी है, जिनके मार्गदर्शन और संस्कार से यह शोध कार्य पूर्ण कर सकी। उनका वात्सल्य एवं आशीर्वाद इस शोध कार्य के प्रारंभ से लेकर पूर्ण होने तक अनन्य प्रेरणा स्रोत बना।

शोधकर्ती अपने जीवन साथी श्री मनीष शर्मा के अपार सहयोग का हृदय से आभार व्यक्त करती है। शोधकार्य को पूर्ण करने में स्वयं को अक्षम महसूस करने पर इन्होंने इस शोध कार्य को पूर्ण करने हेतु आवश्यक शांतिमय वातावरण प्रदान किया तथा हमेशा सहयोग व प्रोत्साहन प्रदान किया व अनन्य प्रेरणा स्रोत बने।

अंत में उन सभी को जिन्होंने जाने–अनजाने, प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से शोधकर्ती का मनोबल बढ़ाया तथा प्रस्तुत शोध कार्य को समय पर संपादित करने में पूर्ण सहयोग किया। उनके सहयोग के बिना यह शोध कार्य पूर्ण नहीं हो सकता था। सभी का हृदय से आभार, कोटिशः धन्यवाद ।

ईश्वर अनुकम्पा तो सदैव हर क्षण मुझे अनुप्राणित करती ही रहती हैं।

TABLE OF CONTENTS

	Particulars	Page No.
	Title Page	
	Declaration	**i**
	Certificate	**ii**
	Copyright	**iii**
	Acknowledgement	**iv**
	Table of Contents	**vi**
	List of Tables	**viii**
	List of Chart	**ix**
1	प्रस्तावना	**1-31**
1.1	प्रस्तावना	**1**
1.2	अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व	**19**
1.3	अध्ययन का औचित्य	**23**
1.4	समस्या कथन	**24**
1.5	अध्ययन के उद्देश्य	**25**
1.6	परिकल्पनाएँ	**26**
1.7	शोध शीर्षक में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या	**27**
1.8	अध्ययन क्षेत्र	**28**
1.8.1	अध्ययन का परिसीमन	**30**
2	संबंधित साहित्य का अध्ययन	**32-80**
2.1	प्रस्तावना	**32**
2.2	सम्बन्धित साहित्य का अर्थ व परिभाषाएँ	**32**
2.3	सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन का महत्व	**33**
2.4	सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के उद्देश्य	**33**
2.5	सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं के स्त्रोत	**34**
2.6	सम्बंधित साहित्य समीक्षा का प्रस्तुतीकरण	**36**
2.7	शोध अतंराल	**79**
2.8	उपसंहार	**79**
3	शोध प्रविधि	**81-91**
3.1	प्रस्तावना	**81**

3.2	शोध न्यादर्श	**82**
3.3	वर्तमान शोध में प्रयुक्त न्यादर्श	**83**
3.4	प्रस्तुत शोध में अनुसंधान विधि	**85**
3.5	सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए प्रयुक्त सांख्यिकी	**89**
3.6	उपसंहार	**91**
4	प्रदत्तों का विश्लेषण	**92-127**
5	शोध सारांश, निष्कर्ष एवं व्याख्या	**128-141**
5.1	प्रस्तावना	**128**
5.2	शोध सारांश	**129**
5.3	परिकल्पना परीक्षण	**134**
5.4	सुझाव	**138**
	संदर्भ ग्रंथ सूची	**142-152**
	परिशिष्ट	**153-155**
	प्रश्नावली	153
	प्रकाशित शोध पत्र	154-155
	प्रकाशित शोध पत्र–1	-
	प्रकाशित शोध पत्र–2	-
	संगोष्ठी प्रमाण–पत्र	-
	साहित्य जांच रिपोर्ट	-

LIST OF TABLES

Sr. No.	List of Table	Page No.
4.1	संसाधनों का अभाव	93
4.2	गतिविधि	94
4.3	रूचिपूर्ण	96
4.4	कार्यशाला, सेमीनार का आयोजन	97
4.5	कार्यक्रमों में हिस्सा लेने हेतु प्रेरित	99
4.6	कठिनाई का सामना	101
4.7	व्याख्यान	102
4.8	समस्याओं पर चर्चा	104
4.9	नये विचारों का ज्ञान	105
4.10	नवीन विधियों का प्रयोग	107
4.11	कक्षाओं का संचालन	108
4.12	छात्रावासों की पूर्ण सुविधा	109
4.13	पत्र–पत्रिकाओं का अभाव	111
4.14	ध्ययन के अलावा अन्य कार्य	112
4.15	आय का स्त्रोत	114
4.16	जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति में अंतर	116
4.17	जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति अंतर	118
4.18	गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में अंतर	120
4.19	जनजातिय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं में अंतर	122
4.20	जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में अंतर	124
4.21	गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में अंतर	126

LIST OF CHART

Sr. No.	List of Chart	Page No.
4.1	संसाधनों का अभाव	94
4.2	गतिविधि	95
4.3	रूचिपूर्ण	97
4.4	कार्यशाला, सेमीनार का आयोजन	98
4.5	कार्यक्रमों में हिस्सा लेने हेतु प्रेरित	100
4.6	कठिनाई का सामना	102
4.7	व्याख्यान	103
4.8	समस्याओं पर चर्चा	105
4.9	नये विचारों का ज्ञान	106
4.10	नवीन विधियों का प्रयोग	108
4.11	कक्षाओं का संचालन	109
4.12	छात्रावासों की पूर्ण सुविधा	110
4.13	पत्र–पत्रिकाओं का अभाव	112
4.14	अध्ययन के अलावा अन्य कार्य	113
4.15	आय का स्त्रोत	115
4.16	t-Test: Paired Two Sample for Means	117
4.17	t-Test: Paired Two Sample for Means	119
4.18	t-Test: Paired Two Sample for Means	121
4.19	t-Test: Paired Two Sample for Means	123
4.20	t-Test: Paired Two Sample for Means	125
4.21	t-Test: Paired Two Sample for Means	127

अध्याय-प्रथम

प्रस्तावना

प्रथम अध्याय

प्रस्तावना

1.1 : प्रस्तावना : (Introduction)

शिक्षा के बिना एक आदमी नींव के बिना एक इमारत की तरह है। हमारे जीवन में शिक्षा का बहुत अधिक महत्व होता है। शिक्षा मानव जीवन का अभिन्न अंग है। शिक्षा और ज्ञान न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि यह अर्थव्यवस्था के विकास के लिए भी आवश्यक है। शिक्षा एक व्यक्ति की सोच का पोषण करती है और उन्हें जीवन में सोचने, कार्य करने और आगे बढ़ने की क्षमता प्रदान करती है। शिक्षा लोगों को सशक्त बनाती है और उन्हें काम के संबंधित क्षेत्रों में रहने और अनुभव के सभी पहलुओं में कुशल बनने में मदद करती है। शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है, यह लोगों के दिमाग को खोलती है और समझ, आगे बढ़ने और विकास करने की क्षमता प्रदान करती है। शिक्षा एकमात्र मूल्यवान संपत्ति है जिसे मनुष्य प्राप्त कर सकता है। शिक्षा एकमात्र आधार है जिस पर मानव जाति का भविष्य निर्भर करता है।

नवजात शिशु असहाय तथा सामाजिक होता है वह न बोलना जानता है और चलना फिरना। उसका न कोई मित्र होता है न शत्रु यही नहीं उसे समाज के रीति रिवाजों तथा परम्पराओं का ज्ञान भी नहीं होता और न ही उसमें किसी आदर्श तथा मूल्य को प्राप्त करने की जिज्ञासा पायी जाती है परन्तु जैसे–जैसे वो बड़ा होता जाता है वैसे वैसे उस पर शिक्षा के औपचारिक तथा अनौपचारिक साधनों का प्रभाव पडता जाता है इस प्रभाव के कारण उसका जहां एक ओर

शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक विकास होता जाता है वही दूसरी ओर उसमें सामाजिक भावना भी विकसित होती जाती है परिणामस्वरूप वह शनै–शनै प्रौढ़ व्यक्तियों के उत्तरदायित्वों को सफलतापूर्वक निभाने के योग्य बन जाता है। इस प्रकार बालक के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन लाने के लिए व्यस्थित शिक्षा की परम आवश्यकता है।

शिक्षा माता के समान पालन पोषण करती है पिता के समान उचित मार्गदर्शन द्वारा अपने कार्यों में लगाती है तथा पत्नी की भांति सांसारिक चिन्ताओं को दूर करके प्रसन्नता प्रदान करती है। शिक्षा के द्वारा ही हमारी कीर्ति का प्रकाश चारों ओर फैलता है तथा शिक्षा हमारी समस्याओं को सुलझाती है तथा हमारे जीवन को सुसंस्कृत बनाती है। संक्षेप में शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है जिससे वह समाज का उत्तरदायी घटक एवं राष्ट्र का प्रखर चरित्र सम्पन्न नागरिक बनकर समाज की सर्वागीण उन्नति में अपनी शक्ति का उत्तरोत्तर प्रयोग करने की भावना से ओत–प्रोत होकर संस्कृति तथा सभ्यता को पुर्नजीवित एवं पुर्नस्थापित करने के लिए प्रेरित हो जाता है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में जन्म लेता है और समाज में रहकर उसकी विभिन्न शक्तियों का विकास होता है तथा इस विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। मनुष्य को पूर्ण सामाजिक प्राणी बनाने में या उसका सामाजीकरण करने में शिक्षा का विशेष योगदान रहता है। शिक्षा को मानव जाति के सर्वागीण प्रगति का श्रेष्ठतम साधन कहा जा सकता है। पाषण युग से आज तक मानव सभ्यता ने परमाणु युग और कम्प्युटर युग में प्रवेश कर

लिया है। इसका श्रेय मुख्यतः शिक्षा को ही जाता है। शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। इससे वह समाज का एक उत्तरदायी घटक एवं राष्ट्र का प्रखर चरित्र–सम्पन्न नागरिक बनकर समाज की सर्वागीर्ण उन्नति में अपनी शक्ति का उत्तरोत्तर प्रयोग करने की भावना से ओत–प्रोत होकर संस्कृति तथा सभ्यता को पुनर्जीवित एवं पुर्नस्थापित करने के लिए प्रेरित हो जाता है। शिक्षा की आधुनिक धारणा के अनुसार शिक्षा बालक के अन्दर छिपी हुई समस्त शक्तियों को सामाजिक वातावरण में विकसित करने की कला है।

कई हजार वर्षो तक भारतीय आचार्यों एवं पथ–प्रणेताओं ने इस परम्परा और शिक्षा पद्धति को स्थिर बनाए रखा, परन्तु कालांन्तर में शिक्षा का रूप बदलने लगा और गुरू–केन्द्रित शिक्षा धीरे–धीरे परिधि की ओर बढ़ने लगी तथा व्यावहारिक दृष्टि से इसका निरूपण होने लगा। गुरू की केन्द्रीय स्थिति में विद्यार्थी आ गया और शिक्षा बाल–केन्द्रित हो गई। इसलिए प्राचीन कालीन मान्यताओं पर प्रश्नचिन्ह लगने लगे। उस समय की पूरी शिक्षा प्रणाली में गुरू का महत्वपूर्ण स्थान था, परन्तु उस समय भी विषय विशेष के सामान्य गुरू होने की परम्परा थी।

धीरे–धीरे इस परम्परा में सुधार हुआ और शिक्षा का स्वरूप बदलने लगा। पुरातन शिक्षा प्रणाली के गुरूकुल वर्तमान में विद्यालय एवं महाविद्यालयों मे परिवर्तित होते चले गए और उसी के अनुरूप शिक्षा का स्वरूप भी बदलता गया।

''यह सत्य ही है कि भारत के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है। भारत की भावी सुरक्षा, कल्याण, समृद्धि एवं सम्पन्नता वास्तव में उन्हीं लोगों पर अवलम्बित है जो हमारे विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अध्ययन कर रहे हैं। किसी समाज या देश का पुनःनिर्माण कर उसको प्रगति एवं उन्नति के पथ पर अग्रसर करने के लिए अति आवश्यक है कि विद्यालय एवं महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास किया जाये।

सृष्टि में जीवन का उत्कर्ष एक अद्‌भुत तथा विलक्षण घटना है। अब तक की जान कारी, अनुमान, वैज्ञानिक परीक्षण एवं शोधो से यह ज्ञात नहीं हो सकता है कि प्रकृति तथा ब्रह्माण्ड की घटनाएँ ऐसे ही क्यों घटित होती हैं? जैसी हमें परिलक्षित होती हैं। मनुष्य अपनी चिन्तन शक्ति, तर्कशक्ति, रूचि व कल्पना के आधार पर ज्ञान–विज्ञान की शाखाएं सृजित करता जा रहा है परन्तु वह ऐसा क्यों कर रहा है? इस क्यों का जवाब शायद वह स्वयं भी नहीं जानता है। मनुष्य को जानकारी केवल यह है हम अपने जीवन की सत्ता को सुरक्षित रखें तथा सृष्टि के नियमों में किसी प्रकार का व्यवधान ना हो। मानव इसे ही अपने जीवन की संतुष्टि, आवश्यकता तथा अनुभूति मानकर चल रहा है। प्रकृति और मानव की इसी वैचारिक यात्रा के पथ पर अनेक मान्यताओं, विचारधाराओं तथा दार्शनिक अवधारणाओं का जन्म हुआ। दर्शन के सिद्धान्तों का शिक्षा में व्यावहारिक प्रयोग विगत शताब्दी से शुरू हुआ जो ज्ञान की दिशा में मनोविज्ञान का नवीनतम प्रयास है।

आज शिक्षाशास्त्र, समाज विज्ञान तथा मनोविज्ञान में किए जा रहे शोधों का मुख्य विषय मानवीय त्रासदी से जीवन की सुरक्षा हेतु उपायों पर विचार करना रह गया है, क्योंकि विज्ञान चाहे कितने ही दावे करे कि उसने प्रकृति पर विजय प्राप्त कर ली है परन्तु उनके दावे उस समय पलक झपकते ही खोखले नजर आते हैं, जब सुनामी जैसी त्रासदी घटित हो जाती है, उस वक्त मन में विचार उठते हैं कि कहां गया विज्ञान? कहाँ गये वे लोग, जो वैज्ञानिक क्रान्ति का दावा करते हैं व मंगल ग्रह पर मनुष्य जीवन को संभव बताते हैं? अगर ऐसा है तो मानव जीवन को ऐसी त्रासदी से क्यों नहीं बचाया जा सकता? क्यों नहीं एक दिन या 2 दिन या 72 घंटे पहले बता देते कि अमुक घटना घटित होने वाली है। अगर ऐसा संभव नहीं हो सकता तो फिर हम कैसे सोच सकते हैं कि मानव ने प्रकृति पर विजय प्राप्त कर ली है। औपचारिक शिक्षामें यही शोध की बातें विद्यार्थी, शिक्षक, समाज, शिक्षण विधि तथा विषयवस्तु पर केन्द्रित हो जाती है।

शिक्षक अपने छात्रों को शिक्षादेकर उसके भविष्य को सुखद तथा निरपवाद बनाना चाहता है। आज का बालक कल की राष्ट्रीय धरोहर है, उसे सुरक्षित करने के लिए प्रत्येक शिक्षक अपने विद्यार्थी के विकास, उन्नति तथा अभ्युदय की कामना करता है। परन्तु आज का विद्यार्थी कल के लिए किस प्रकार तैयार किया जाये, यह जटिल प्रश्न सदा से ही कौतूहल का विषय बना रहा है व बना रहेगा। क्यों शिक्षक व अभिभावक चाहते कुछ हैं, विद्यार्थी बनता कुछ और है, ऐसा क्यों? क्योंकि सभी समानताएँ होने के बावजूद भी विद्यार्थी, अभिभावक व शिक्षक के मनोविज्ञान में अन्तर विद्यमान रहता है। भौतिक, शारीरिक एवं जैविकीय दृष्टि से चाहे हमें मर्यादा समान दिखाई देती हो किन्तु हम

मनोवैज्ञानिक पक्षों में समानता ढूंढने अथवा एकरूपता लाने में आज भी असमर्थ हैं। इसका कारण वैयक्तिक भिन्नता का होना है, जिस पर व्यक्ति के व्यक्तित्व, कल्पना, तर्क, भावना, उसका आत्मबोध, सामाजिक वर्ग, जीवन संतुष्टि एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा सर्वथा एक दूसरे से भिन्न होते हैं।

विद्यार्थी भी ऐसे ही मनोवैज्ञानिक चरों के आधार पर शिक्षकों से भिन्न होता है। बुद्धि, शरीर, आदत, अभिप्रेरणा, संतुष्टि इत्यादि में समानता होने पर भी सूक्ष्म दृष्टि से समानता नहीं हो सकती, क्योंकि यह नैसर्गिक सत्यता है। इसी का विवेचन प्रस्तुत शोध के माध्यम से करने का प्रयास किया गया है। विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सम्पूर्ण मनोवैज्ञानिक क्षमता का अध्ययन एक शोध में नहीं हो सकता, परन्तु कुछ चरों पर विचार करके कुछ काल्पनिक अवधारणाओं का वैज्ञानिक सत्यापन खोजा जा सकता है। शिक्षा का उद्देश्य ही व्यक्तित्व का परिमार्जन है, उसका विकास उचित दृष्टि से हो सके, उनके व्यक्तिगत मूल्य समाज और राष्ट्र की मुख्यधारा के अनुकूल हो, उसकी उपलब्धि अभिप्रेरणा उच्च स्तर की बनी रहे, इन्हीं दृष्टिकोणों से शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक शोधों का औचित्य बनता है। इस शोध में कुछ ऐसे ही मूलभूत पक्षों पर विचार किया गया है।

प्राचीनकाल से भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की अपनी कुछ विशेषताएँ रही हैं जिसके कारण भारतीय समाज विश्व के अन्य देशों के समाजों के मुकाबले उन्नति एवं प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है। संस्कृति एवं सभ्यता की दृष्टि से इसे सदैव शीर्ष स्थान दिया जाता रहा है। भारतीय समाज में सभ्यता एवं

संस्कृति के इतिहास का अध्ययन करने पर पाते हैं कि प्राचीन समय में समाज कई वर्गों में विभक्त कर दिया गया था। सामन्ती एवं प्रारम्भिक मध्ययुगीन काल में परिस्थिति का निर्धारक तत्व 'जन्म' था। परन्तु परिस्थिति निर्धारक के रूप में जन्म सामाजिक पद का नियन्त्रक तत्व उस समय तक रहा जब तक नये सामाजिक एवं आर्थिक विकासों ने सामन्ती प्रणाली को विस्थापित नहीं कर दिया। औद्योगिक क्रान्ति एवं व्यापारिक, वित्तीय तथा धर्मशाला उत्पाद के उद्यम के विकास के साथ सम्पति की पुनः परिभाषा की गई। सम्पति का सामाजिक मूल्य के रूप में विकास हुआ जिससे परिस्थिति के निर्धारक तत्व के रूप में जन्म का स्थान कम महत्वपूर्ण हो गया। बाद में एक नयी वर्ग व्यवस्था का जन्म हुआ, जिसमें व्यक्तिगत उपलब्धियों के आधार पर उद्यमी एवं उपक्रमी व्यक्ति पद क्रम में ऊंचे चढ़ सकते थे। व्यक्ति की सामाजिक स्थिति अब जन्म के आकस्मिक तत्व के आधार पर सदा–सदा के लिए निर्धारित नहीं होती थी। नये गतिशील पूंजीवादी समाज में सम्पति ने अधिक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। आधुनिक समाजों में आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में घनिष्ठ सम्बन्ध है। परम्परागत वर्गीय समांकलन धुंधले पड़ते गये और एक नवीन सामाजिक संरचना का जन्म हुआ जिसमें श्रमिक एवं पूंजीपति दोनों पदक्रम में ऊँचा चढ़ने के लिए सामाजिक रूप से परिश्रम करने लगे। सम्पति सभी समाजिक विभाजनों में प्रवेश कर गयी और यह सामाजक स्थिरीकरण का एक सार्वभौमिक एवं महत्वपूर्ण आधार बन गयी। इसी आधार पर भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में भारतीय समाज को आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग में बांट दिया गया। सामाजिक वर्ग के संबोध का सैद्धान्तिक विकास अरस्तू के समय में ही हो चुका था। जब उसने जनसंख्या को तीन भागों

में बांटा यथा – वे लोग जो सम्पन्न थे, यानि सुविधाभोगी वर्ग, वे लोग जो निर्धन व विपन्न हैं यानि सुविधा वंचित वर्ग तथा वे लोग जो इन दोनों वर्गों के मध्य में स्थित हैं, यानि सामान्य वर्ग। परन्तु वर्तमान में अरस्तू की धारणा को विश्वसनीय न मानकर मात्र दो वर्ग रखे गये हैं – एक आरक्षित यानि जो सुविधावंचित (निम्नवर्ग) व दूसरा अनारक्षित अर्थात जो सुविधाभोगी वर्ग (उच्च वर्ग)। सामाजिक वर्ग का महत्व व्यक्ति व समय दोनों के लिए है। वर्ग ही यह निश्चित करता है कि जीवन में विभिन्न परिस्थितियों को प्राप्त करने के कितने अवसर उपलब्ध हैं। इतना ही नहीं बालक का सामाजीकरण व व्यक्तित्व का विकास ही वर्ग के आधार पर होता है। जन्म की विभिन्न परिस्थितियों से कितना समायोजन करना है और किस प्रकार से जीवन स्तर को उच्च बनाना है, यह वर्ग संस्कृति ही निर्धारित करती है।

भारतीय समाज एवं संस्कृति अतिप्राचीन है। इनमें अनेक विविधताएं और जटिलताएँ छिपी हैं। भारत भूमि पर अनेक प्रजातियों एवं संस्कृतियों का आगमन होता रहा है और अनेक सामाजिक तथा सांस्कृतिक व्यवस्थाओं ने इसी धरती पर जन्म लिया है। यही कारण है कि भारत में अनेक विविधताएं होते हुए भी ये सभी एकता के सूत्र में विद्यमान हैं। इस एकता एवं विविधताओं ने ही भारतीय समाज एवं संस्कृति की अपनी एक विशिष्टता बनाए रखी है, यद्यपि समय–समय पर बाहर से आने वाली संस्कृतियों के सम्पर्क में आने के कारण इसमें परिवर्तन एवं संशोधन होते रहे हैं।

प्राचीन भारत तथा आधुनिक भारत पर यदि सूक्ष्मता से दृष्टिपात करें तो हम पाऐंगे कि **''सर्वधर्म समभाव''** की भावना धीरे–धीरे लुप्त होती जा रही है। आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग की परस्पर दूरियाँ बढ़ती जा रही है। जिसके परिणामस्वरूप इन वर्गों के आधार पर सामाजिक संरचना भी प्रभावित हो रही है। वर्तमान सामाजिक जटिलताओं का प्रभाव न केवल बालक अपितु युवा वर्ग पर भी पड़ रहा है। कहा जाता है कि भारत के भविष्यका निर्माण विद्यालय में अध्ययनरत बालकों पर निर्भर करता है परन्तु यही बालक स्नातक स्तर की शिक्षाप्राप्त करने के लिए महाविद्यालय में प्रवेश लेते हैं तो उनकी व्यक्तिगत मूल्यों का भी भविष्यपर प्रभाव पड़ता है।

स्टेनले हॉल के अनुसार किशोरावस्था तनाव, दबाव व तूफान की अवस्था है परन्तु युवावस्था भी इससे कहीं अधिक जटिलतम परिवर्तनों की अवस्था कही जा सकती है। एक तो युवा विद्यार्थी विद्यालय को छोड़कर महाविद्यालयों में प्रवेश लेता है, दूसरा विभिन्न प्रकार के शारीरिक परिवर्तनों का सामना करता है ऐसी अवस्था में अपने साथियों के साथ महाविद्यालयी गतिविधियों एवं व्यवहार को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से प्रभावित किये बिना नहीं रह सकता। इस अवस्था में व्यक्ति विभिन्न प्रकार की चिन्ताओं और परेशानियों का सामना करता है।

शोधकर्ता का मानना है कि सिरोही जिले के जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्या वर्तमान में न केवल समाज के लिए हानिप्रद है वरन् स्वयं के लिए भी एक विकट समस्या बन जाती है। जब विद्यार्थी को जीवन संतुष्टि नहीं मिल पाती है तो वह मानसिक रूप से

विक्षिप्त हो सकता है और इसके लिए वह न केवल स्वयं को अपितु समाज को भी दोषी मानता है। परन्तु प्रश्न उठता है कि क्या आज मानव की उन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है जिनको वह प्राप्त करना चाहता है? आज भी इस आरक्षण की व्यवस्था में यह असंभव ही प्रतीत होता है। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि, जीवन संतुष्टि एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा में निरन्तर कमी आती जा रही है और विद्यार्थी परिवार, समाज व राष्ट्र के विकास में अपना सार्थक योगदान नहीं दे पाता है जिससे न केवल स्वयं उसका अपितु राष्ट्र का भविष्य भी प्रभावित होता है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में व्यक्ति की भिन्नता का मुख्य आधार बुद्धि है। बुद्धि के माध्यम से ही मनुष्य नई–नई परिस्थितियों का सफलतापूर्वक सामना करता है और आगे बढ़ने का प्रयास करता रहता है। मनुष्य की इसी बुद्धि को सही दिशा में अग्रसर करने में निर्देशन का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहता है। मानव जीवन के प्रत्येक कार्य में बुद्धि के साथ–साथ उचित निर्देशन की महता एवं उपयोगिता है। बुद्धि वह मानसिक योग्यता है जिसके द्वारा हल करने, किसी उद्देश्य की पूर्ति या किसी समस्या का समाधान करने के लिए सम्बन्धित वस्तुओं एवं विचारों को सोचते हैं। अतः इसी समस्या–समाधान के लिए बुद्धि को सही दिशा में परीक्षा द्वारा बुद्धि मापी जाती है, इसलिए उसकी भी बहुत अधिक उपयोगिता है। बुद्धि लब्धि के आधार पर व्यक्ति के बौद्धिक स्तर का पता लगाकर उसे उसी दिशा में उचित एवं सम्यक् दिशा–निर्देश दिया जा सकता है।

शैक्षिक ही नहीं वरन् किसी भी क्षेत्र में मनुष्य या बालक की बुद्धि लब्धि के आधार पर उन्हें उसी दिशा में जिसके वे योग्य हो आगे बढ़ने के लिए निर्देशित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए बुद्धि लब्धि ज्ञात करके बालक के शैक्षिक पिछड़ेपन के कारणों का पता लगाकर उसे दूर करने के लिए निर्देशित किया जा सकता है। बुद्धिलब्धि के आधार पर ही हम यह ज्ञात कर सकते हैं कि बालक का पिछड़ना विद्यालय में उसकी मानसिक योग्यता ही है या अन्य कोई कारण। अतः इन कारणों का पता लगाकर उन्हें सही दिशा में निर्देशित किया जाता है। निर्देशन का महत्व केवल शिक्षा में ही नहीं वरन् बुद्धि लब्धि के आधार पर उधोगों, प्रशासन या अन्य क्षेत्रों में अधिकारियों, कर्मचारियों तथा विशेषज्ञों के चुनाव में सहायक हो सकता है।

बुद्धि परीक्षा अध्यापकों और विशेषज्ञों को बालकों के लिए व्यावसायिक चुनाव में मदद करती है तथा उन्हें उचित निर्देशन प्रदान करती है। वर्तमान युग में बुद्धि परीक्षण शिक्षाके क्षेत्र में वरदान साबित हुआ है। इसी बुद्धि परीक्षण के आधार पर बालक की मानसिक योग्यता का पता लगाकर उसके आवश्यकतानुसार व्यावसायिक अथवा शैक्षिक निर्देशन दिया जा सकता है।

बुद्धि के अर्थ एवं स्वरूप को लेकर मनोवैज्ञानिकों में हमेशा मतभेद रहा है। प्राचीन काल में बुद्धि का प्रयोग/अर्थ संकुचित रूप में किया जाता था। सामान्यतः रहने की प्रवृति को बुद्धि का परिचायक माना जाता था, लेकिन आधुनिक युग में बुद्धि किसी व्यक्ति की क्षमताओं अथवा संज्ञानात्मक शक्तियों की सूचना देने के सम्बन्ध में प्रयुक्त की जाती है। बुद्धि को अनेक तरह से व्यक्त

किया जाता है। कोई इसे शक्ति मानता है तो कोई इसे मानसिक विकास, इनके उतर में यही कहा जा सकता है कि जिस तत्व के कारण बालकों के सीखने की क्षमता में अन्तर पाया जाता है। जिस तथ्य के कारण उनकी स्मृति में भिन्नता दिखाई देती है। जिस तथ्य के कारण किसी समस्या को हल करने में वैयक्तिक अन्तर दिखाई देता है। उस कारण को समझाने के लिए जो अर्थ हम देते हैं उस अर्थ में ही बुद्धि की संज्ञा दी जाती है। संक्षेप में बुद्धि एक अर्थ है, जिसे अंग्रेजी में ब्वदेजतनबज के नाम से जाना जाता है।

स्टर्न के अनुसार, ''बुद्धि एक व्यक्ति की सामान्य क्षमता है, जिसके द्वारा वह चेतनापूर्वक अपने विचारों को नवीन आवश्यकताओं से समायोजित करता है। यह नई समस्याओं तथा जीवन की परिस्थितियों के प्रति सामान्य मानसिक ग्रहणशीलता है।'' इस प्रकार स्टर्न ने बुद्धि में तीन बातें स्पष्ट बतायी है –

- यह सीखने की क्षमता है,
- भावात्मक सम्बोधन,
- समस्या समाधान की योग्यता

टरमैन के शब्दों में, ''भावात्मक विचारों के अनुरूप चिन्तन क्रिया ही व्यक्ति की बुद्धि कहलाती है।''

थार्नडाइक के अनुसार, ''वास्तविक परिस्थितियों के अनुसार अपेक्षित प्रतिक्रिया की योग्यता ही बुद्धि है।''

एच.ई.गैरेट के अनुसार, ''ऐसी समस्याओं को हल करने की योग्यता, जिनमें ज्ञान और प्रतीकों को समझने तथा प्रयोग करने की आवश्यकता है, जैसे – शब्द, अंक, रेखाचित्र, समीकरण और सूत्र ही बुद्धि है।''

उक्त तथ्य से यह कहा जा सकता है कि ''बुद्धि को लेकर भिन्नताएं दिखाई देती है फिर भी इन्हें आधार मानकर यह कहा जा सकता है कि बुद्धि सामान्य, मानसिक और जन्मजात योग्यताओं का वह समन्वय है जिसकी सहायता से व्यक्ति को उसके प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करने का अवसर मिलता है। यह नवीनतम परिस्थितियों में व्यक्ति का समायोजन कायम रखने में विशेष रूप से क्रियाशील होती है। इसका सम्बन्ध अनुभवों के विश्लेषण एवं आवश्यकताओं के नियोजन तथा पुनःसंगठन से होता है।''

जीवन संतुष्टि एक व्यक्ति को वह अपने जीवन में किस दिशा में और भविष्य में किस ओर आगे बढ़ने जा रहा है, आदि के बारे में महसूस कराती है और उनका मूल्यांकन करती है। जीवन संतुष्टि एक अच्छी तरह जीवन जीने के लिए किया जा रहा उपाय है। जिसके द्वारा दैनिक जीवन के साथ सामना करने के लिए अन्य लोगों के साथ हासिल लक्ष्यों, आत्म धारणाओं और आत्म कथित क्षमताओं के साथ सम्बन्धों का जीवन संतुष्टि के साथ मूल्यांकन करने की क्षमता होती है। जीवन संतोष अपनी शिक्षा अनुभव और रहने के स्तर के आधार पर आर्थिक स्तर पर खड़े होने की राशि है, जिससे कोई भी सुख समृद्धि पूर्ण अपने जीवन का निर्वाह कर लक्ष्योन्मुख हो सकता है।

परिवार शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द 'Family' का हिन्दी रुपान्तरण है तथा Family शब्द की उत्पत्ति शब्द Families से हुई है, जिसका अर्थ होता है 'Servant' अर्थात् वह इकाई जो बच्चों में समाज के प्रति सेवा भावना रखती है। भारत में प्राचीन काल से ही संयुक्त परिवार एवं एक दूसरे के प्रति सेवा की भावना पायी जाती थी।

क्रो एण्ड क्रो ने पारिवारिक वातावरण को स्पष्ट करते हुए कहा कि ''गृह स्थान वह होना चाहिए जहाँ पर बालक प्रत्येक प्रक्रिया में भाग लेता है। विद्यालय में तो वह केवल छः घंटे का समय व्यतीत करता है। शेष समय तो वह घर के सदस्यों के साथ ही व्यतीत करता है। अतः उस पर उसके पारिवारिक वातावरण का प्रभाव अधिक पड़ता है जो उसकी शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित करती है। जिन बालकों का पारिवारिक वातावरण अच्छा तथा संस्कारयुक्त होता है, वे बालक शिक्षा प्रक्रिया में अधिक सक्रिय होते हैं, अपेक्षाकृत उन बालकों से जिनका पारिवारिक वातावरण अच्छा नहीं होता तथा जिनके माता–पिता बालक की शिक्षा को अधिक महत्व देते हैं।''

परिवार सामाजीकरण का एक महत्त्वपूर्ण अवयव है। परिवार में बच्चों के व्यक्तित्व को एक आकार मिलता है जिसमें उनका व्यक्तित्व ढ़लता है और प्रभावी बनता है जो उन्हें विश्व, देश , समाज, एवं परिवार में एक महत्त्वपूर्ण पहचान दिलाती हैं। परिवार में बच्चों को अच्छी आदतों के विकास के लिए प्रशिक्षण भी दिया जाता है और बच्चों का मानवीकरण भी होता है जो बच्चों के जीवन को एक दिशा

प्रदान करता है। पारिवारिक वातावरण स्थितियों के अनुरूप व्यक्ति का प्रत्यीकरण करता है जो उसको समाज में सामाजिक–आर्थिक पहचान दिलाता है।

वर्तमान समय में परिवार में अनेक परिवर्तन हो रहे है जैसे परिवार के आकार में परिवर्तन, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में परिवर्तन, मनोरंजन के कार्यो या रूचियों में परिवर्तन, पारिवारिक कार्यो का मशीनरीकरण आदि परिवर्तनों के कारण परिवार के महत्व में कमी आयी है।

बालक के विकास पर परिवार के वातावरण का पूर्ण प्रभाव पड़ता है। पारिवारिक वातावरण के आधार पर ही बालक के व्यक्तित्व का विकास होता है वंशानुक्रम के साथ–साथ वातावरण भी बालक के विकास में पूर्ण योगदान देता है। वातावरण का तात्पर्य उन परिस्थितियों से है जिनका बालक के शारीरिक एवं मानसिक विकास पर प्रभाव पड़ता है। वातावरण की सृष्टि उन समस्त परिस्थितियों से होती है जो किसी जीवधारी के 23 चरित्रगत कार्यकलापों को अनुप्रेरित या बोधित करती तथा प्रोत्साहित या निषेचित करती है। इलियट के अनुसार ''चेतन वस्तु की किसी ईकाई के प्रभावशाली उत्तेजक तथा अन्तःक्रिया के क्षेत्र को पर्यावरण कहा जाता है। अतः पर्यावरण एक वाह्य शक्ति है जो सब पर प्रभाव डालती है।'' घर के पर्यावरण के प्रभाव से ही बालक में निहित सभी मूल शक्तियाँ विकसित अथवा कुण्ठित होती हैं। बालक अपने को पर्यावरण के अनुकूल बना कर ही समायोजित कर पाता है। वह परिवार के सदस्यों के व्यवहार, रीतियों उनकी रूचियों, मनोवृत्तियों, सामाजिक परम्पराओं तथा भाषा को सहज ही सीख लेता है और उनका प्रतीक बन जाता है। घर में बालक को

अपनी मूल प्रवृत्तियों के प्रदर्शन और उनकी संतुष्टि का पर्याप्त अवसर प्राप्त होता है। घर के आदर्श एवं व्यवस्था, बालक के भावी जीवन को संचालित करते हैं। यदि परिवार का वातावरण अच्छा एवं सहयोगात्मक है और माता–पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों में परस्पर प्रेम, विश्वास तथा सौहार्द की भावना है तो बालक का भावात्मक विकास भी समुचित रूप से होता है। इसके विपरीत प्रतिकूल वातावरण में बालक के मन में भावना ग्रन्थियाँ बन जाती हैं जो उसके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में बाधक होती हैं। इसलिये घर में सुव्यवस्था और अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण आवश्यक है, जिससे बालक का सुगमता से सर्वांगीण शारीरिक, मानसिक एवं भावात्मक विकास हो सके।

पारिवारिक वातावरण केवल शैक्षणिक उपलब्धि को ही नहीं बल्कि यह मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। परिवार का अच्छा वातावरण बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखता है और बच्चे अपने जीवन में उचित समायोजन कर पाते हैं वहीं दूसरी तरफ परिवार का खराब वातावरण बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है जिससे बच्चे हमेशा चिन्ता, तनाव व अन्तर्द्वन्द्व आदि समस्याओं से ग्रसित हो जाते हैं।

विद्यालय की विभिन्न कक्षाओं में अनेक प्रकार के छात्र शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते है। समान मानसिक योग्यताओं से सम्पन्न न होने के कारण वे समय की एक ही अवधि में विभिन्न विषयों और कुशलताओं मे विभिन्न सीमाओं तक प्रगति करते हैं। उनकी इसी प्रगति प्राप्ति या उपलब्धि का मापन या मूल्यांकन करने के लिए उपलब्धि परीक्षाओं की व्यवस्था की गई है। अतः हम कह सकते हैं कि

उपलब्धि परीक्षाएं वे परीक्षाएं हैं, जिनकी सहायता से विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विषयों और सिखाई जाने वाली कुशलताओं में छात्रों की सफलता या उपलब्धि का ज्ञान किया जाता है।

फ्रीमैन (1971) के अनुसार – ''शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण वह परीक्षण है जो एक विषय विशेष या पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान, समझ (बोध) एवं कौशल का मापन करता है।''

सुपर (1967) के अनुसार – ''एक उपलब्धि परीक्षण यह जानने के लिए प्रयुक्त किया जाता है कि व्यक्ति ने क्या और कितना सीखा और वह यह सीखा गया कार्य कितनी कुशलता से कर लेता है।''

गैरीसन – ''उपलब्धि परीक्षण बालक की वर्तमान योग्यता या किसी विशिष्ट विषय के क्षेत्र में उसके ज्ञान का मापन करती है।''

किसी भी राष्ट्र की प्रगति छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर निर्भर होती है। हर राष्ट्र अपने छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों को बेहतर बनाने के लिए प्रयत्नशील रहती है क्योंकि राष्ट्र का विकास छात्रों एवं छात्रओं पर ही निर्भर होती है।

शैक्षणिक उपलब्धियों का अर्थ होता है 'प्राप्त किये गये स्तर' हिन्दी या गणित आदि विषय जिसकी विद्यालय के अंक या प्राप्त किये गये श्रेणी के आधार पर गणना की जाती है। विद्यालय का वातावरण भी एक महत्त्वपूर्ण अंग है। अच्छी शिक्षण उपलब्धि के लिये इस वातावरण में शिक्षक, कक्षाएँ, शिक्षण सुविधाएँ, सहपाठी, शिक्षण की गुणवत्ता और स्कूल का परिवेश होता है। यह एक आदर्श एवं उच्च शैक्षणिक उपलब्धि के लिए आवश्यक अवयव है। शिक्षकों एवं

अभिभावकों की प्रेरणा छात्रों की शिक्षण व्यवस्था को अनुकूल बनाते हैं। अच्छी प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालयें जो कि नवीनतम पुस्तकों से परिपूर्ण हो, शांतिपूर्ण एवं सुरूचिपूर्ण वातावरण अच्छी शिक्षण उपलब्धि में सहायक की भूमिका निभाती हैं। कुछ विद्यार्थी ऐसे होते हैं जिनकी कक्षा में उपलब्धि उनकी योग्यताओं की अपेक्षा कम होती हैं। विद्यार्थियों की कम शैक्षणिक उपलब्धि का कारण परिवार, स्कूल और स्वयं विद्यार्थियों से संबंधित हो सकता है। जब विद्यार्थियों की पढ़ने में रुचि न हो तो उनकी शैक्षणिक उपलब्धि कम पायी जाती है।

कुछ विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियाँ उनकी योग्यताओं की अपेक्षा अधिक अच्छी होती है। बहुधा ऐसे विद्यार्थियों को पढ़ने की अधिक सुविधाएं प्राप्त होती हैं तथा अच्छे शिक्षकों से सीखने की भी सुविधा प्राप्त होती है। विद्यालय से केवल उन्हीं विद्यार्थियों को लाभ होता है जिनका विद्यालय में कार्य निष्पादन अच्छा होता है। विद्यालय में शैक्षणिक उपलब्धि के आधार पर ही विद्यार्थीयों की सफलताओं को ऑका जाता है। उनकी सफलता आंकते समय उनके सीखने के अन्य प्रकार के अनुभवों पर ध्यान नहीं दिया जाता है। विद्यालय में विद्यालय का वातावरण, सहपाठी, शिक्षक आदि के व्यवहार से भी विद्यार्थी प्रभावित होते हैं। जिस प्रकार बालक पर पहला प्रभाव घर का होता है। वैसे ही दूसरा प्रभाव विद्यालय का होता है जहाँ वे पढ़ते हैं। विद्यार्थी विद्यालय में ज्ञान प्राप्त करते हैं, अपनी कुशलता का विकास करते हैं और शैक्षणिक अवधि के दौरान जिन विषयों का वे अध्ययन करते हैं उनमें वे प्रतिस्पर्धात्मक बनते हैं। शैक्षणिक उपलब्धियाँ कक्षा में विद्यार्थियों के स्तर को दृढ़ बनाती है। विद्यार्थियों की उपलब्धियों की गणना परीक्षा द्वारा या अध्यापकों द्वारा परीक्षा में दिये गये अंक के आधार पर

किये जाते हैं। शिक्षाका उद्देष्य छात्र एवं छात्राओं का विकास करना है और यह तभी संभव है जब उन्हें केन्द्र मानकर शिक्षादी जाये तथा समाज एवं विद्यालय का वातावरण संतुलित हो, जिससे भेद–भाव मिट सके। सभी को आदर्श शिक्षामिल सकें। शिक्षाका कार्य मार्ग दर्शन करना है।

समस्त तथ्यों पर गहराई से विचार करने के बाद एवं देश के विकास के लिए समस्त वर्गों में समानता की आवश्यकता को महत्वपूर्ण मानने के बाद शोधकर्ता के मन में जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन पर शोधकार्य करने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई, जिसके लिए शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन हेतु प्रस्तुत समस्या का चयन किया।

1.2 : अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व : (Importance & Significance of the Study)

किसी भी समाज समुदाय में सर्वांगीण विकास में चाहे वह आर्थिक हो, सामाजिक हो या सांस्कृति हो लेकिन इन सबसे ज्यादा सर्वप्रथम शैक्षिक विकास प्रमुख स्थान रखता है। भारत में सामाजिक एवं धार्मिक सुधारकों ने शिक्षा को महत्वपूर्ण माना था और उन्होनें शिक्षा के उत्थान के लिये कार्य भी किये। उन्होने यह अनुभव किया कि पिछड़ी जातियों एवं जनजातियों का आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान केवल शैक्षणिक सुधार द्वारा ही संभव है।

शिक्षा के स्तर के आधार पर ही किसी समाज की सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रगति का अनुमान लगाया जा सकता है क्योंकि शिक्षा का संस्कृति के साथ अभूतपूर्व संबंध होता है। इसलिये विशेषकर आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा के प्रति

व्यापक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति एवं उसके वातारण के बीच परस्पर सम्बन्ध पाया जाता है। व्यक्तित्व के प्रत्येक पहलू पर वातावरण का व्यापक प्रभाव पड़ता है और वह इन सबसे निर्देशित होता है। अतः शिक्षा संस्कृति पर निर्भर है और संस्कृति शिक्षा से संबंधित है।

आदिवासी नाम उन लोगों को दिया जाता है जो पहले से ही इन क्षेत्रों में बसे हुए थे। इनके पिछड़े हुए होने का प्रमुख कारण आदिवासी शिक्षा का स्तर अन्य जातियों से निम्नतम स्तर पर होना है।

जनजाति के लोग आर्थिक क्षेत्र में पराश्रित, शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े हुए और सामाजिक दृष्टि से सर्वाधिक कष्टभोगी, अलगाव व अस्पृश्यता के शिकार रहे है जहां तक आदिवासियों का संबंध है उनके सबसे बड़ी समस्या या कठिनाई अलगांव है जिसके फसलस्वरूप इनमें शिक्षा का अभाव है।

भारत में जनता की उन्नति के लिये अनेक विविध उपक्रम का अमल करने के बावजूद भी जनजातिय एवं गैर जनजातिय वर्ग के लोगों की आर्थिक एवं सामाजिक शैक्षिक परिस्थिति संतोषजनक नहीं है। समाज का यह बड़ा शिक्षा से वंचित न रह जाये। उन्हें शिक्षित करना, उन्हें आत्मनिर्भर बनाना आज की आवश्यकता बन गई है।

उनके रहन–सहन और तौर–तरीके से पता लगता है कि वे लोग आज भी समाज में कितने पीछे है। इन वर्गो में शिक्षा प्रमाण औसम से कम है। इसका प्रमुख कारण कुपोषण, आर्थिक दरिद्रता काम की अयोग्य आदतें, केलापन, आत्मविश्वास का प्रभाव उच्च वर्ग के लोग तथा छात्रों के साथ समायोजन की

समस्या आदि है। आजादी के बाद प्रथम एवं द्वितीय पंचवर्षीय योजनाओं में कुछ विशेष प्रावधान रखकर उनकी उन्नति की कोशिश की गई। छात्रों की शिक्षा के संदर्भ में मुख्य समस्या उनकी बोली व भाषा है क्योंकि पाठशाला में मानक भाषा का उपयोग होता है छात्रों को अपनी मातृभाषा के अलावा अन्य भाषा को सीखना पड़ता है। इसलिय विद्यार्थी पाठशाला में आने से अप्रसन्न होते है।

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (नीपा) द्वारा 23 से 25 नवम्बर 1985 तक शिक्षा नीति योजना एवं प्रबन्ध विषयक शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्या के सम्मिलित प्रतिवेदन में यह स्वीकार किया गया कि राष्ट्रीय लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए उत्तरदायित्व की प्रक्रिया की स्पष्टता में शैक्षित स्थिति एवं समस्या का निवारण किया जा सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 शिक्षा में आयोजन एवं प्रबन्ध पर बल देती है तथा वास्तव में यह शिक्षा नीति भारतीय शिक्षा में सर्वप्रथम सिद्ध हुई। शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार की इस नीति को दर्शाने वाला ''शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्या'' नामक दस्तावेज कई स्थानों पर भारतीय शिक्षा की ओर इंगित किये गये। उक्त योजना वर्ष 1986 के प्रकाशन के पश्चात् ही इसमें गति देखने में आई।

व्यक्ति के जीवन में उनका विद्यार्थी जीवन सर्वप्रथम पहलू होता है क्योंकि शिक्षण काल में विद्यार्थी जो कुछ भी सीखता है उसी पर उसका भविष्यनिर्भर करता है, परन्तु जब विद्यार्थी को जीवन संतुष्टि नहीं मिल पाती तो उसके व्यक्तिगत मूल्यों

एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रश्न खड़ा हो जाता है। इसके साथ ही विद्यार्थी के मानसिक विकास के लिए व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पर्याप्त मात्रा में संतुष्टि होना आवश्यक है। प्राथमिक तथा गौण आवश्यकताओं के कारण शरीर के अन्दर कुछ करने की प्रेरणा होती है जिसके कारण व्यक्तिगत मूल्यों का स्तर भी घटता – बढ़ता रहता है। यदि विद्यार्थी की अधिकांश आवश्यकताएँ सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप पूरी हो जाती है तो उसकी जीवन संतुष्टि एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर उच्च हो जाता है, परन्तु यदि बाह्य वातावरण उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति में अवरोध डालता है या विभिन्न आवश्यकताएँ आपस में क्षतिपूर्ति के लिए संघर्ष करती हैं तो उसकी जीवन संतुष्टि का स्तर निम्न होता चला जाता है। ऐसी परिस्थितियों में यदि विद्यार्थी अधिकतर उपयुक्त व्यवहार करके अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता है या केवल आंशिक रूप से ही अपने लक्ष्य की पूर्ति कर पाता है तो उसकी जीवन संतुष्टि, उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सांवेगिक बुद्धि के निम्न स्तर प्रदर्शित करने की काफी सम्भावना होती है।

बालक चाहे उच्च उपलब्धि प्राप्त हो या निम्न उपलब्धि प्राप्त, उसमें अपने जीवन से सन्तुष्ट होना और परिस्थितियों का संतोषजनक निदान ढूंढ़ लेना उसकी क्षमता होती है और वह नये लक्ष्य ढूंढ लेता है जो उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के साथ–साथ सामाजिक दृष्टि से मान्य होता है।

वर्तमान परिवेश में राष्ट्रीय स्तर पर समस्त साहित्यिक, सामाजिक एवं शैक्षिक मंचों से व्यक्तिगत मूल्यों की गिरावट पर चिन्ता व्यक्त की जा रही है, जो एक गम्भीर एवं विचारणीय प्रश्न है। वर्तमान में संस्कारों, जीवनादर्शों एवं प्रतिमानों को गिरावट से बचाने की महती आवश्यकता अनुभव की जा रही है। इस दृष्टि से शिक्षाविद्, समाजशास्त्री, राजनेता, धार्मिक संगठनों के लोग जीवन–मूल्यों की सुरक्षा हेतु प्रयासरत हैं।

1.3 : अध्ययन का औचित्य : (Relevance of the Study)

वर्तमान समाज में भौतिकता की पराकाष्ठा जनजातीय एवं गैर जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक स्तर की जटिलता, विद्यार्थियों की निम्न स्तर के शैक्षिक स्तर के कारण बढ़ती जा रही है। वर्तमान में न केवल जनमानस अपितु विद्यार्थियों के अन्दर भी शैक्षिक संतुष्टि का अभाव देखने को मिलता है और इसका प्रभाव उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा पर अवश्य पढ़ता है। राख के भीतर छिपी हुई चिंगारी पर फूंक मारने से अग्नि खण्ड प्रकाश की बहुमुखी किरण दे सकता है। शैक्षिक समायोजन यदि उच्च स्तर के हैं तो शैक्षिक स्तर एवं शैक्षिक स्तर की जटिलता का स्तर क्या होगा? सब बातों का अध्ययन करें तो शोध समस्या के चयन का औचित्य प्रतीत होता है।

सारस्वत, भानुप्रताप (2011) ने ''विभिन्न वर्गों के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन'' किया, शाह, गोपाल चन्द्रा; हेडलर, शान्तनु एवं दास, पुलिन (2013) ने ''अवसाद के साथ आत्म–बोध और जीवन सन्तुष्टि का

सहसम्बन्ध'' किया, सोनारा, निकिता एस. (2013) ने–''युवाओं एवं वृद्धों में जीवन सन्तुष्टि का अध्ययन'' किया, सारण, धर्माराम (2015) ने ''विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, व्यक्तिगत मूल्य, अध्ययन आदतों एवं आकांक्षा स्तर का अध्ययन'' किया। इसी प्रकार अन्य शोधार्थियों ने दशकीय अन्तराल पूर्व उच्च उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों से सम्बन्धित विभिन्न चरों पर शोधकार्य सम्पन्न किये हैं, लेकिन शोधार्थी द्वारा चयनित शीर्षक पर हुए शोधकार्यों की संख्या नगण्य हैं। इसलिए चयनित शोध शीर्षक का औचित्य स्वयमेव ही सिद्ध हो जाता है।

इस प्रकार शोधकर्ता के मन में निम्न प्रश्न उठे – जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति का शैक्षिक समस्याओं के साथ क्या सम्बन्ध होता है? इस से सम्बंधित प्रश्नों के उत्तर खोजने हेतु शोधकर्ता ने '' सिरोही जिले के जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन '' विषय पर अध्ययन करने का निश्चय किया ।

1.4 : समस्या कथन : (Statement of the Problems)

" सिरोही जिले के जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन "

"COMPARATIVE STUDY OF EDUCATIONAL STATUS AND EDUCATIONAL PROBLEMS OF THE STUDENTS OF TRIBAL AND NON TRIBAL AREA OF SIROHI DISTRICT"

1.5: अध्ययन के उद्देश्य : (Objectives of the Problems)

बिना किसी उद्देश्य के आरम्भ किये गए कार्य की सफलता पर हमेशा प्रश्न चिन्ह लगा रहता है। इसलिए यह आवश्यक है कि कार्य कोई भी हो उसको आरम्भ करने से पूर्व उसके उद्देश्यों को निर्धारित कर लिया जाये। उद्देश्य निर्धारित करने के उपरान्त किया गया कार्य निश्चित रूप से सफल होता है। इसीलिए कोई अनुसंधान कार्य करने से पूर्व उसके उद्देश्यों को निर्धारित करना आवश्यक है। किसी भी शोध कार्य को निश्चित दिशा देने के लिये उसके उद्देश्यों का निरूपण अत्यन्त आवश्यक होता है। ये वस्तुतः शोध प्रश्नों पर आधारित होते है जिन्हें औपचारिक भाषा में लिखा जाता है। प्रस्तावित शोध कार्य के निम्नलिखित उद्देश्य है

- जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के बालक– बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति का अध्ययन करना।
- जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के निजी एवं राजकीय विद्यालयों के बालक– बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति का अध्ययन करना।
- जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के निजी एवं राजकीय विद्यालयों के बालक– बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के बालक– बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन करना।
- जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के निजी एवं राजकीय विद्यालयों के बालक– बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन करना।

- जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के निजी एवं राजकीय विद्यालयों के बालक– बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.6 : परिकल्पनाएँ : (Hypothesis)

परिकल्पना किसी समस्या के वे संभावित परिणाम होते है जिनका परिणाम संभव होता है। समस्या के चयन, उसके अध्ययन के उद्देश्यों के निर्धारण एवं मूल मान्यताओं को निर्धारित कर लेने के बाद यह आवश्यक है कि शोधकर्ता अपने उपलब्ध ज्ञान, अनुभव तथा बुद्धि कौशल के आधार पर यह पूर्वानुमान लगायें कि इस अध्ययन से क्या निष्कर्ष प्राप्त हो सकते हैं। अध्ययनकर्ता के इस बुद्धिमतापूर्ण अनुमान को ही शोध के क्षेत्र में परिकल्पना कहते हैं। परिकल्पना सदैव अस्थायी होती है। शोध के निष्कर्ष के अनुरूप उसे स्वीकृत अथवा अस्वीकृत किया जाता है। प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ निर्धारित की है –

- जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

- जनजातिय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

1.7: शोध शीर्षक में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या :–

जनजातीय :

डॉ मजमदार के अनुसार – एक जनजाति परिवार या परिवारों के समूह का संकलन होता है। जिसका एक सामान्य नाम होता है। जिसमें सदस्य एक निश्चित भू–भाग पर रहते है। विवाह, व्यवसाय या उद्योग के विषय में निषेधात्मक नियमों का पालन करते है।

जनजातिय क्षेत्र :

अनुसूचित जनजाति' शब्द सबसे पहले भारत के संविधान में आया था। अनुच्छेद 366 (25) ने अनुसूचित जनजातियों को "ऐसी जनजातियों या जनजातीय समुदायों या ऐसी जनजातियों या जनजातीय समुदायों के कुछ हिस्सों या समूहों के रूप में परिभाषित किया है जिन्हें इस संविधान के प्रयोजनों के लिए अनुच्छेद 342 के तहत अनुसूचित जनजाति माना जाता है"। अनुच्छेद 342, जिसे नीचे

पुनः प्रस्तुत किया गया है, अनुसूचित जनजातियों के विनिर्देश के मामले में पालन की जाने वाली प्रक्रिया को निर्धारित करता है।

शैक्षिक स्थिति :

जनजातिय बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति के दृष्टिकोण से देखा जाये तो जनजाति समुदाय अन्य समुदाय की तुलना में बहुत पीछे है। साक्षरता की दृष्टि से जनजातिय बालक–बालिकाओं की शिक्षा पिछड़ी है। जनजातिय बालक–बालिकाएं शिक्षा के अवसरों से वंचित रहती है। इसमें जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की वर्तमान पारिवारिक, शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक स्थिति को सम्मिलित किया जायेगा।

1.8: अध्ययन क्षेत्र

राजस्थान के दक्षिण–पश्चिमी भाग में सिरोही राज्य मुख्यालय जयपुर से 418 किमी., संभागीय मुख्यालय जोधपुर से 196 किमी. दूरी पर राष्ट्रिय राजमार्ग संख्या 14 पर स्थित है। यह 24°53´6" उतरी अक्षांश और 72°51´45" पूर्वी देशांतर पर माध्य समुद्र तल से 321 मीटर उंचाई पर स्थित है। सिरोही सड़क मार्ग द्वारा देश के विभिन्न भागों से भली–भांति जुड़ा है। नजदीक का रेलवे स्टेशन 22 किलोमीटर की दूरी पर सिरोही रोड़ है।

सिरोही नगर का पश्चय क्षेत्र काफी विस्तृत है। यहाँ वाणिज्यिक एवं कृषि से सम्बन्धित गतिविधियाँ प्रमुख रूप से संचालित है। इस क्षेत्र की फसलों में बाजरा,

ज्वार, मक्का, मूंग–मोठ, तिल, सरसो, अरण्डी, सौंफ आदि फसलों की पैदावार होती है। सिरोही में रीको द्वारा ओद्यौगिक क्षेत्र की स्थापना से यहाँ उद्योग क्षेत्र में तीव्र विकास हुआ है। यहाँ विभिन्न प्रकार की कई ओद्यौगिक ईकाइयाँ स्थापित है। इससे रोजगार का सृजन हुआ है। ओद्यौगिक विकास के साथ–साथ नगर में व्यापार एवं वाणिज्यिक गतिविधियों का काफी विस्तार हुआ है। इस क्षेत्र में यह नगर आस–पास की जनसंख्या के लिए क्रय–विक्रय का प्रमुख केन्द्र होने के साथ–साथ प्रशासनिक केन्द्र के रूप में कार्यरत है।

सिरोही की जनसंख्या वर्ष 1961 में 14451, वर्ष 1971 में 18774, वर्ष 1981 में 23903, वर्ष 1991 में 28117 थी, जो वर्ष 2001 में बढ़कर 35544 हो गयी। सर्वाधिक वृद्धि दर वर्ष 1961–71 के दशक में 29.91 प्रतिशत हुई तथा वर्ष 1991 से 2001 के दशक में वृद्धि दर 26.41 प्रतिशत हुई है।

सिरोही, दक्षिण–पश्चिमी राजस्थान का एक मुख्य नगर है। सिरोही जिला मुख्यालय होने के साथ–साथ उपखण्ड, तहसील व पंचायत समिति मुख्यालय भी है। इससे यह सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व वाणिज्यिक गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु है। राजस्थान में अरावली पर्वतमाला दक्षिण–पश्चिम से उत्तर–पूर्व दिशा में विस्तृत है। अरावली पर्वतमाला की प्राकृतिक स्थिति का इसके धरातल, भौतिक स्वरूप, जलवायु तथा मानवीय गतिविधियों पर प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रहा है। राजस्थान में सिरोही के दक्षिण–पूर्व दिशा में, पहाड़ियां है तो दूसरी तरफ उत्तर–पश्चिम दिशा में मरूस्थल है। सिरोही का धरातल सभी भागों में भौतिक दृष्टि से एक समान नहीं है। भूमि उबड़–खाबड़ है। सिरोही

नगर अरावली पहाड़ी क्षेत्र में स्थित है। कई प्राकृतिक नाले विद्यमान है। इस नगर की जलवायु अर्द्ध शुष्क है। यहाँ के मौसमीय तापमान में असमानता रहती है। जून माह सर्वाधिक गर्म एवं जनवरी माह अधिक ठण्डा माह होता है। यहाँ का वार्षिक औसत अधिकतम तापमान 33 डिग्री एवं वार्षिक औसत न्यूनतम तापमान 18 डिग्री सेल्सियस तक रहता है। यहाँ वर्षा का वार्षिक औसत 634 मिलीमीटर है। वर्षा दक्षिण–पश्चिमी मानसून से होती है। राजस्थान में अरावली की श्रेणीयों का विस्तार मानसूनी हवाओं के समानान्तर होने तथा ऊँचाई अधिक न होने के कारण ये श्रेणीयां जल से भरी हवाओं को रोककर वर्षा कराने में सहायक नहीं होती है। वर्षा ऋतु में तापमान में गिरावट आ जाती है। इस ऋतु में हवा में नमी अधिक रहने से सापेक्षिक आर्द्रता 80 प्रतिशत तक रहती है। ग्रीष्म ऋतु में प्रचलित हवाओं की दिशा दक्षिण–पश्चिम से उत्तर–पूर्व की ओर तथा शरद ऋतु में उत्तर–पूर्व से दक्षिण–पश्चिम की ओर रहती है।

1.8.1 : अध्ययन का परिसीमन : (Delimitation of the Study)

किसी भी वृहद् क्षेत्र के अध्ययन को सरल एवं प्रभावी बनाने हेतु उसका परिसीमन करना आवश्यक है। यदि समस्या स्पष्ट एवं सीमित होगी तो उसका अध्ययन गहनता से किया जा सकता है। अतः अनुसंधान की वैधता, विश्वसनीयता व उपयोगी परिणामों को निर्धारित समय में प्राप्त करने हेतु अध्ययन क्षेत्र का परिसीमन आवश्यक हो जाता है। अतः शोधार्थी ने भी अध्ययन की सुलभता व समयाभाव के कारण शोध का परिसीमन किया है यथाः

- प्रस्तुत शोध दक्षिणी राजस्थान के सिरोही जिले के आबू रोड क्षेत्र के सभी ब्लाक स्तर से लिया गया है।
- प्रस्तुत शोध दक्षिणी राजस्थान के सिरोही जिले के आबू रोड क्षेत्र के सभी ब्लाक स्तर के जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जायेगा।
- प्रस्तुत शोध हेतु जिले के निजी एवं राजकीय स्तर के विद्यालयों तक ही सीमित रखा गया है।
- शोध में छात्र/छात्राओं के रूप में लिंग भेद किया गया है।
- प्रस्तुत शोध केवल माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक ही सीमित रहेगा।
- शोध में विद्यार्थियों के सामाजिक, आर्थिक व पारिवारिक परिदृष्य का अध्ययन सम्मिलित नहीं किया जायेगा।
- प्रस्तुत शोध में जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के कुल 480 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जायेगा।

अध्याय-द्वितीय

संबंधित साहित्य का अध्ययन

द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य का अध्ययन

2.1 प्रस्तावना

साहित्य की समीक्षा के अंतर्गत हम अपने शोध विषय से संबंधित पहले से मौजूद किसी साहित्य या शोध पत्रिका का अध्ययन करते है। इसके अंतर्गत हम इस बात का अध्ययन करते है कि हमारे द्वारा चुने गए क्षेत्र में कितना काम हो चुका है एवं किस प्रकार का काम हुआ है, अभी शोध का नया ट्रेड क्या है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन अनुसंधान की नींव है जिस पर अनुसंधान का विशाल भवन निर्मित होता है व्यक्ति सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से ही अपने अनुसधान का आधार प्राप्त करता है। वास्तव में शोध समस्या के मूल तक पहुँचने के लिए सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक है। सम्बन्धित सहित्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबधों एवं अभिलेखों आदि में है। जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या की परिकलपनाओं के निर्माण करने मे, अध्ययन की रूपरेखा बनाने एवं कार्य को आगे बढाने में सहायता प्राप्त होती है।

2.2 सम्बन्धित साहित्य का अर्थ व परिभाषाएँ

अनुसंधान के क्षेत्र में सम्बन्धित साहित्य एक प्रथक एवं महत्वपूर्ण इकाई है। सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से शोधकर्त्री को पूर्व मे हुए शोध कार्यो एवं दशाओं तथा भावी शोधकार्यो की संभावनाओ का ज्ञान भी होता है। यह शोधकर्त्री को सही दिशा निर्देशन देने के साथ–साथ पुनरावर्ति से भी रोकता है।

सम्पूर्ण मानव ज्ञान पुस्तकों तथा पुस्तकालयो मे सुरक्षित रहता है। अन्य जीवधारियों से भिन्न जो प्रत्येक नई पीढियों के साथ पुनः नये सिरे से कार्य प्राम्भ करते है मनुष्य अतीत के संचित व अधोलिखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान सृजन करता है।

किसी क्षेत्र की समस्याओं तथा तथ्यों से सुपरिचित होने के लिए विषय से सम्बन्धित होने के लिए उस विषय से सम्बन्धित साहित्य को पढना होता है।

जे. एफ रमल के अनुसार, श्शनियमानुसार कोई भी शोध नहीं हो सकता, जब तक की उस शोध से सम्बन्धित साहित्य का लिखित विवरण प्रस्तुत अध्ययन में न दिया गया हो।श्श

2.3 सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन का महत्व

- वास्तविक तथ्यों की सूचनाओं का ज्ञान।
- पुनरावृति से बचना।
- सभी प्रकार के विज्ञानों शास्त्रों में अध्ययन का आधार।
- अध्ययन की रूप रेखा तैयार करने में सहायक।
- पूर्व में किये गये आँकड़े वर्तमान अध्ययन में सहायक।
- पूर्व की गलतियों से बचना।
- समय की बचत में सहायक।

2.4 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के उद्देश्य

- समस्या के निर्माण हेतु यह महत्वपुर्ण साधन होता है।
- अनुसंधान कर्ता के ज्ञान कोश की अभिवृद्धि हेतु।
- अनुसंधान की उचित विधि के चयन हेतु आवश्यक
- अध्ययन की परिकल्पनाओं, आंकड़ों का संकलन व सारणीयन करना।

- तुलनात्मक आंकडों को प्राप्त करने व विश्लेषण में सहायक।
- यह परिणामों के विश्लेषण में सहायक होता है।

2.5 सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं के स्त्रोत

सम्बन्धित साहित्य की सूचना प्राप्त करने हेतु पुस्तकालय सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्त्रोत है। पुस्तकालय के साथ–साथ अन्य साधनों से भी परिचित होना आवश्यक है।किसी भी शोध के क्षेत्र मे विद्यमान सूचनाओं के स्त्रोत मुख्यतः दो प्रकार के होते है।

1- प्रत्यक्ष **2- अप्रत्यक्ष**

इन्हें प्राथमिक स्त्रोत और द्वितीय स्रोत भी कह सकते है। प्राथमिक स्त्रोत पाठ्य पुस्तकें, विश्वकोष तथा अन्य लेख है जो लोगों द्वारा लिखे गये है।

पी. वी. यंग ने सूचनाओं के स्त्रोतों को दो भागों में विभक्त किया है–

1- लिखित **2- सकंलित**

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए अनुसंधानकर्त्री ने निम्न समस्या से सम्बन्धित चरों के साहित्य का अध्ययन किया जो निम्न प्रकार वर्णित है।

श्श्माध्यमिक विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षक–प्रभावशीलता का मानसिक स्वास्थ्य, कार्य संतुष्टि एवं कार्य अभिप्रेरणा से सम्बन्ध का अध्ययनश्श

सामान्यतः सब इस बात से सहमत है कि किसी शैक्षिक प्रणाली की गुणवता उसका ऐसा क्षेत्र है जो शिक्षकों की गुणवता पर निर्भर करता है। एक स्कूल में

उत्कृष्ट भौतिक ससांधन जैसे उपकरण, बिल्डिंग, लाइब्रेरी व अन्य सुविद्यायें तथा समुदाय की आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम उपलब्ध हो सकता है। किन्तु अगर शिक्षक अनुपयुक्त एवं अपनी जिम्मेदारी के प्रति उदासीन हो तो पूरे कार्यक्रम के अप्रभावी और व्यर्थ होने की संभावना है। अतः समस्या प्रभावी शिक्षकों के पहचान की है। वांछनीय शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, साकार करने के लिए सभावित कारकों पर अध्ययन के अनेक प्रयास किए गए है जो सामान्य रूप से शिक्षक प्रभावशीलता से जुड़े हुए है। और लगातार अनुसंधान प्रयास उन चरों को समझने के लिए किये जा रहे है जो शिक्षक प्रभावशीलता को प्रभावित करते है। शिक्षक प्रभावशीलता पर सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से पता चलता है कि कोई ऐसा एक मात्र कारक नही है जो कि शिक्षक प्रभावशीलता को प्रभावित करते है।

शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य, कार्य संतुष्टि एवं कार्य अभिप्रेरणा ऐसे महत्वपूर्ण कारक है जो शिक्षक प्रभावशीलता को प्रभावित करते है। कार्य संतुष्टि शिक्षक के प्रदर्शन के साथ–साथ उसकी प्रभावशीलता को बढाता है। आज स्कूलों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि कैसे उन शिक्षकों के कार्य दबाब का प्रबंधन करे जो कार्य स्थल के वातावरण से असंतुष्ट है। अतः यह अनुसधान का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है कि कैसे स्कूल शिक्षकों के प्रदर्शन में सुधार किया जाये। कई बार यह भी देखा गया है कि जो शिक्षक अपनी नौकरी से संतुष्ट है। वे भी अच्छे से कार्य नहीं कर रहे है। यह उनके व्यवसाय/पेशे में प्रेरणा एवं प्रतिबद्वता की कमी के कारण हो सकता है।

2.6 सम्बंधित साहित्य समीक्षा का प्रस्तुतीकरण

प्रस्तुत अध्याय के लिए शोधार्थी ने शोध समस्या के विभिन्न चरों से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया। जो निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया है–

सम्बंधित साहित्य को दो भागों में विभाजित किया गया है

- **भारत में हुए शोध से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन**
- **विदेशों में हुए शोध से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन**

भारत में हुए शोध से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

मीना, सावित्री देवी (2023) के शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य दक्षिणी राजस्थान में उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् जनजातीय बालिकाओं की वर्तमान स्थिति, समस्याओं एवं भविष्य में अवसरों का अध्ययन करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए दत्त संकलन हेतु उपकरणों के रूप में प्राचार्यों, व्याख्याताओं तथा अभिभावकों के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया जबकि बालिकाओं के लिए एक व्यक्तिगत सूचना पत्रक तथा स्वयं शोधार्थी के लिए एक अवलोकन सूची का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध सर्वेक्षण विधि के अन्तर्गत सम्पादित किया गया है जिसमें कुल 376 अभिधारकों के न्यादर्श समूह (320 बालिकाएँ, 8 प्राचार्य 16 व्याखरता एवं 32 अभिभावक) पर इस उपकरण का प्रशासन किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष यह बताते हैं कि वर्तमान स्थिति के प्रत्येक पहलू यथा– शैक्षिक, पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में शहरी जनजातीय बालिकाओं की स्थिति ग्रामीण जनजातीय बालिकाओं की तुलना में सुदृढ पाई गई है। जहाँ तक समस्याओं का प्रश्न है शहरी क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में बेहतर सामाजिक, आर्थिक एवं

शैक्षिक वातावरण पाया जाता है जिसके कारण शहरी जनजातीय बालिकाओं की पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएँ इतना विकराल रूप धारण नहीं कर पाती हैं। भविष्य में अवसरों के संदर्भ में शहरी क्षेत्रों की स्थिति ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में बेहतर प्राप्त हुई है। दूसरे शब्दों में, ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में जनजातीय बालिकाओं के लिए भविष्य में अधिक अवसर विद्यमान हैं। अन्य अभिधारक जैसे प्राचार्य, व्याख्याता एवं अभिभावक इत्यादि भी जनजातीय बालिकाओं के भविष्य को लेकर आशावान है।

ज्योति बाला (2022) ने अपने शोध पत्र में आदिवासी तथा गैर आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल का अध्ययन किया। इसके लिए सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत उदयपुर जिले के 400 आदिवासी तथा 400 गैर आदिवासी शिक्षकों का चयन न्यादर्श के तौर पर किया गया। इनके जीवन कौशल से सम्बंधित दत्तों का संकलन करने के लिए पाँच विकल्प आधारित अभिमतावली का निर्माण किया गया। शोध निष्क्रयों में आदिवासी शिक्षकों की भांति गैर–आदिवासी शिक्षकों का जीवन कौशल भी समग्र क्षेत्रों में उच्च पाया गया है। तुलनात्मक दृष्टि से गैर–आदिवासी शिक्षको का जीवन कौशल अधिक उच्च पाया गया है।

अमित कुमार (2022) ने अपने शोध पत्र में आदिवासी तथा गैर आदिवासी शिक्षकों की अध्यापन दक्षता का अध्ययन किया। इसके लिए सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत उदयपुर जिले के 400 आदिवासी तथा 400 गैर आदिवासी शिक्षकों का चयन न्यादर्श के तौर पर किया गया। इनके जीवन कौशल से सम्बंधित दत्तों का संकलन करने के लिए तीन विकल्प आधारित अभिमतावली का निर्माण किया गया। शोध निष्कषों में

आदिवासी शिक्षकों की भांति गैर–आदिवासी शिक्षकों की अध्यापन दक्षता भी समग्र क्षेत्रों में उच्च पाई गई है। तुलनात्मक दृष्टि से आदिवासी तथा गैर–आदिवासी शिक्षको की अध्यापन दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

बानोथु, डॉ. बोंद्यालु (2021) ने आदिवासी समाज और आधुनिक शिक्षा हिडिम्ब के सन्दर्भ में विषयक शोध अध्ययन किया। इस शोध निष्कर्ष में पाया गया कि आदिवासियों के सम्पूर्ण विकास के लिए, संविधान में कई तरह के प्रावधान दिए गये हैं। सरकार आदिवासियों के लिए एक रूपया देती हैं तो, उसमें नब्बे प्रतिशत, बीच के दलाल खा जाते हैं। आदिवासियों के पास मात्र दस प्रतिशत पहुँचता है, ऐसे में आदिवासियों का विकास कहाँ से होगा। आदिवासी युवक तमाम संघषों के बावजूद, उच्च शिक्षा, पीएच. डी. कर लेते हैं, फिर भी नौकरी नहीं मिलती है। आदिवासियों के स्थान पर गैर आदिवासियों को भर्ती किया गया है। अगर इसी प्रकार आदिवासियों का शोषण होता रहा तो आदिवासियों का विकास कैसे सम्भव है। आदिवासियों को हर अन्याय के विरोध में संघर्ष करना होगा।

मीणा, मनीराम (2021) ने राजस्थान के जनजातीय समाज में ऋणग्रस्ता के कारणों का अध्ययन किया। इन्होंने शोध के निष्कर्ष में पाया कि राजस्थान की जनजातीय समाज अज्ञानता, अन्धविश्वासी, होने के कारण आज भी सभ्यता से दूर हैं। जनजातीय समाज सामाजिक कुरीतियों जैसे मृत्यु, दहेज, त्यौहार और मेले पर आय से ज्यादा खर्च कर देता हैं शराब भी पीते हैं तथा कृषि के लिए भी कर्ज लेते हैं जो एक बार लिया गया कर्ज चूकता नहीं और वह ऋणी ही होता चला जाता है। ऋण

में ही जन्म लेता है और ऋण में ही मर जाता है। अपनी आय का सही उपयोग नहीं करने के कारण जनजातीय समाज ऋण में ही डूबा रहता है।

जैन, अनिलकुमार, सिंह, रजनीरंजन (2020) ने सीमान्त वर्ग की बालिकाओं के शैक्षिक सशक्तिकरण में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की भूमिका का मूल्यांकन किया। इस अध्ययन के उद्देश्य के.जी.बी.वी. ब्लॉक बडागांव डायट बरुआसागर, झांसी में अध्ययनरत बालिकाओं के नामांकन ठराव की स्थिति, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अध्ययन करना एवं बालिकाओं के शैक्षिक और आन्तरिक बाह्य विकास का अध्ययन करना था। शोध निष्कर्ष में इन्होंने पाया कि अनुसूचित जाति एवं जनजाति, अल्पसंख्यक व गरीबी की रेखा के नीचे रहने वाली सीमांत वर्ग की लडकियाँ जो हाशिये पर धकेल दी गयी थी। विद्यालय में इनके मानसिक विकास के साथ साथ उनके आन्तरिक बाहरी विकास पर भी बल दिया जा रहा है जिससे उनके शैक्षिक सशक्तिकरण में वृद्धि हुई है तथा बालिका साक्षरता का स्तर बढ़ा है।

धाभाई, सीमा (2020) ने आदिवासी आवासीय विद्यालयों के शिक्षा के स्तर का विवेचन किया। इन्होंने इस शोध अध्ययन में पाया कि उदयपुर जिले के आदिवासी विद्यालय के तीनों शाखा (कोटड़ा, खेरवाड़ा, सलुम्बर) में छात्र–छात्राओं को उनके शिक्षा के स्तर के निर्धारत कारकों में से तहसील एवं जिला मुख्यालय की दूरी, परिवहन साधनों की उपलब्धता, अध्ययन क्षेत्र में अवस्थित आदिवासी की संख्या के निर्भर चर का आवासीय विद्यालयों की छात्रों की संख्या पर विपरीत प्रभाव पाया गया है। आदिवासी विद्यालयों की छात्रों की संख्या एवं शिक्षा के स्तर पर जनसंख्या एवं जाति

वर्ग, चिकित्सा सुविधाओं, आध्ययन क्षेत्र में संचालित शैक्षणिक गतिविधियां, अध्ययन क्षेत्र का स्टाफ, पुस्तकालय एवं प्रयोगशाला के स्तर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं जो कि मुख्य रूप से विद्यार्थियों के शिक्षा के स्तर को प्रभावित करता है।

भारद्वाज, मधुकुमार (2019) ने सहरिया जनजाति तथा विस्थापित बांग्लादेशी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पर शोध कार्य किया इस शोध कार्य का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के सहरिया जनजाति व विस्थापित बांग्लादेशी छात्र–छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना था। इस अध्ययन में राजस्थान के हाडौती के बारों जिले की किशनगंज एवं शाहबाज तहसील के 600 विद्यार्थियों का चयन किया। इस शोध के निष्कर्ष में पाया कि सहरिया जनजाति व बंगाली छार–छात्राओं की सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

अहारी, रमेश चन्द्र (2019) ने जनजातीय महिला स्वास्थ्य के सांस्कृतिक आयाम विषयक शोध कार्य किया। इस शोध निष्कर्ष में इन्होंने पाया कि जनजातीयमहिलाओं में स्वच्छता एवं स्वास्थ्य की आदतों का परम्परागत होना अधिक प्रतिशत में है, शौचालय प्रयोग एवं शौच के बाद साबुन से हाथ धोने के व्यवहार अपेक्षाकृत कम है, अस्वच्छ से ज्यादा जादू–टोने को बिमारी का कारण मानना यह स्पष्ट करता है कि स्वच्छता रखने से बेहतर स्वास्थ्य की प्रर्याप्त जानकारी दृष्टिकोण एवं व्यवहार परिवर्तन की आवश्कता है।

यादव, शरद कुमार (2019) ने भारत में जनजाति समुदाय के लिए शिक्षा और विकास की नीतियां विषयक शोध अध्ययन किया। इस शोध अध्ययन के परिणामस्वरूप इन्होंने पाया कि अनुसूचित जनजाति समुदाय में शिक्षा की स्थिति बहुत दयनीय अवस्था में है, आदिवासी बच्चों को प्राथमिक शिक्षा उनकी मातृभाषा में देने की जरूरत है, शिक्षक आदिवासी भाषा को ठीक से नहीं समझने के कारण उनके बीच सही तरीके से समायोजन नहीं कर पाते हैं। आदिवासियों की शिक्षा का स्वरूप उनके समाज की पृष्ठभूमि पर केन्द्रित हो। अनुसूचित जनजाति वर्ग में शिक्षा के प्रति रुझान तभी बढ़ सकता है जब शिक्षा का स्वरूप जनजाति समाज की पृष्ठभूमि को केन्द्र में रखकर पाठ्यक्रम का निर्माण हो। साथ ही इन क्षेत्रों में वंचित बचों के लिखने पढ़ने और सिखने का आनन्दप्रद अनुभव बनाया जाये, दूर–दराज के जनजातियं क्षेत्रों के स्कूलों में दूरदर्शन फिल्मों आदि के जरिये दूरस्थ शिक्षा पद्धति की सहायता भी करने की जरूरत है।

राजपूत, उदयसिंह (2018) ने मध्यप्रदेश में जनजातीय विकास प्रयास, बाधाएँ एवं सुझाव विषयक शोध अध्ययन किया। शोधकर्ता ने अपने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया की आदिवासी विकास का अर्थ ऊपर से योजना बना कर लागू करना नहीं है वरन आदिवासियों को स्वयं अपने विकास के लिए योजना बनाने योग्य बनाना होगा। आदिवासी विकास की सम्पूर्ण धारणाओं में बदलाव लाना बहुत जरूरी हैं। गरीबी, बेरोजगारी दूर करने के लिए कार्यक्रमों तथा स्वास्थ्य शिक्षा एवं मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ लोकतांत्रिक समाज की मूल धारणा को लोगों के बीच पहुँचाना परम आवश्यक है।

पारगी, लोकेश (2017) ने जनजातीय विकास में गैर–सरकारी संगठनों की भूमिका विषयक शोध अध्ययन किया और पाया कि जनजातीय विकास के पंचशील सिद्धांन्त विकास के स्थायी एवं मार्गदर्शी सिद्धान्त है और आज ही जनजातीय विकास योजनाओं को लागू करने में एवं लोगों तक पहुँचाने में गैर–सरकारी संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ये संगठन सरकार की विभिन्न योजनाओं को ग्रामीण क्षेत्रों में जनजाति एवंअधिकारों के प्रति निःस्वार्थ भाव से सामाजिक भावना से कार्य करते हैं इसलिए जनजातिय विकास में गैर–सरकारी संगठनो की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

शर्मा, निर्मला (2017) के शोध का मुख्य उद्देश्य महाविद्यालयी अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति, सामाजिक मान्यताओं एवं समस्याओं काअध्ययन करना है। इसके लिए बांदा जनपद के अनुसूचित जनजाति के स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं में अध्ययनरत् 400 छात्र–छात्राओं को दैव निदर्शन के माध्यम से सूचनाप्रदाता के रूप में चुना गया। अध्ययन के निमित्त प्राथमिक दत्तों का संकलन साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया है। यहीं द्वितीयक आंकड़ों का संकलन सांख्यिकीय विभाग, महाविद्यालयों कार्यालयों एवं सांख्यिकीय कार्यालय के माध्यम से किया गया। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि अत्यन्त जटिल एवं अभावग्रस्त आर्थिक परिस्थितियों में निवास करने वाले तथा परम्परागत सामाजिक कुण्ठाओं और असमानताओं से ग्रसित युवा समूह के सदस्य शिक्षा के माध्यम से अपने सामाजिक– आर्थिक परिस्थितियों के परिवर्तन हेतु प्रयत्नशील हैं। निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के होते हुए भी उनके शैक्षिक उपलब्धि का स्वरूप सन्तोषजनक है। उनके शैक्षिक जीवन की प्रमुख समस्या परिवार की आर्थिक स्थिति

का असन्तोषजनक तथा परिवार में शैक्षिक परिवेश की अनुपयुक्तता है। शिक्षण संस्था में उनके सामाजिक सम्पर्क और अन्तः क्रिया की परिधि विस्तृत हो रही है। शिक्षक से उन्हें अपेक्षित सहयोग व सहानुभूति प्राप्त नहीं है जिसका कारण इन विद्यार्थियों की संकोची एवं अतमुखी प्रकृति तथा इन समुदायों के प्रति परम्परागत रूप से व्याप्त पूर्व धारणा, पक्षपात और हेय दृष्टिकोण है। परम्परागत संस्थाएं व्यवहार प्रतिमान और मूल्य शिथिल पड़ते जा रहे हैं तथा आधुनिकता की ओर भी अग्रसर हो रहे हैं।

चंद्रवंशी, छैल कुमार (2016) ने छत्तीसगढ़ राज्य के कसडोल विकासखंड के बिंझवार जनजाति के विशेष सन्दर्भ में जनजातियों में शिक्षा एवं स्वास्थ्य का एक समाजशास्वीय अध्ययन किया। इसके लिए उल्लेखित अध्ययन क्षेत्र के कुल 8 ग्रामों का चयन कर प्रत्येक ग्राम से 80 परिवारों का चयन सविचार एवं उद्देश्यपूर्ण निदर्शन प्रविधि के द्वारा किया गया। प्राथमिक दत्तों का संकलन एक साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा किया गया। शोध के निष्कर्षों में विकासखंड मुख्यालय के निकट के ग्रानों में शिक्षा एवं स्वास्थ्य की स्थिति दूरदराज के ग्रामों की तुलना में बेहतर पाई गई। परम्परागत जीवन शैली एवं उदासीनता की प्रवृत्ति के कारण शिक्षा एवं स्वास्थ्य की स्थिति निम्न पाई पाई गई है। जनजातियों में शिक्षा एवं स्वास्थ्य हेतु नियोजित विकास के लिए किये गये सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों के कार्य पूर्ण रूप से सफल नहीं हुए हैं। प्रस्तुत शोध में यह भी पाया गया कि जनजातीय सांस्कृतिक मान्यताएँ शिक्षा एवं स्वास्थ्य की स्थिति को काफी हद तक प्रभावित करती हैं।

प्रगति, कोल, साईबरी (2015) ने अनुसूचित जाति एवं जनजाति छात्रों के शैक्षणिक विकास पर मध्यप्रदेश शासन द्वारा संचालित मेट्रिकोत्तर छात्रवासों का प्रभाव विषयक शोध अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य छात्रावासों में रह रहे छात्रों के शैक्षणिक विकास एवं शासन द्वारा दी गई सुविधाओं एवं व्यवस्था का अध्ययन करना था। इन्होंने अपने अध्ययन के निश्वर्ष में पाया की अनुसूचित जाति एवं जनजाति के छात्रों के शैक्षणिक विकास के लिए छात्रावास खोले गये हैं। इन छात्रावासों में संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन ठीक से नहीं हो रहा है जिसका प्रभाव छात्रो के क्षणिक विकास पर पड रहा है। छात्रावासों में रह रहे छात्रों के शैक्षणिक विकास में कोई विशेष प्रगति नहीं हुई है।

भारद्वाज, गीतिका (2015) ने आदिवासी बालिकाओं में स्वास्थ्य विषयक जागरूकता का अध्ययन किया। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण व शहरी आदिवासी बालिकाओं में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना था। इन्होंने ग्रामीण व शहरी 100 आदिवासी बालिकाओं का चयन किया। निष्कर्ष में पाया कि आदिवासी बालिकाओं में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता ग्रामीण आदिवासी बालिकाओं की तुलना में अधिक थी, परन्तु ये अन्तर कम पाया गया।

यदुलाल, कुसुम (2014) ने अनुसूचित जाति एवं जनजाति की स्कूली छात्राओं की मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक समस्याओं पर शोध कार्य किया। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य अनुसूचित जाति एवं जनजाति छात्राओं की शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं की प्रकृति एवं स्वरूप का पता लगाना था। इन्होंने अपने अध्ययन में

परिणाम स्वरूप पाया कि माध्यमिक स्तर की अपेक्षा उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राये भावात्मक रूप से अधिक समायोजित है साथ ही उच्च शिक्षित एवं अल्पशिक्षित अभिभावको की छात्राओं, बच्चों में तुलनात्मक रूप में भिन्त्रता पाई गई हैं। अल्पशिक्षित और उब शिक्षित छात्राओं के शैक्षिक सामंजस्य में अन्तर है। शोध निष्कर्ष में पाया गया है कि अनुसूचित जाति एवं जनजाति की अधिकांश छात्राओं के माता–पिता और अभिभावक निरक्षर अथवा अशिक्षित हैं वे परंपरागत रूढ़िवादिता से ग्रस्त हैं व बालिका शिक्षा के पक्ष में नहीं होते हैं।

व्यास, डॉ. आशुतोष (2014) ने राजस्थान में अनुसूचित जनजाति की महिलाओं में शिक्षा की स्थिति विषयक शोध अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि दो दशकों में राजस्थान में शिक्षा व साक्षरता के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई है। 2006 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने शिक्षा व साक्षरता के क्षेत्र में राजस्थानको बीमारू राज्य की श्रेणी में घोषित किया गया है। यद्यपि सर्वशिक्षा अभियान तथा मिड–डे मील योजना के कारण जनजाति छात्राओं की संख्या में वृद्धि हुई है। क्योकि प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में नामांकन और ठहराव को अधिक महत्व दिया गया है लेकिन शिक्षा की गुणवत्ता गौण है। प्राथमिक शिक्षा में ऐसे मूल्यों को महत्त्व दिया गया है जो समाज निर्माण में आवश्यक है। ग्रामीण व जनजातीय महिलाओं के लिए इसकी आवश्यकता और अधिक महत्त्वपूर्ण है।

निराला, कुमार संजय,, भगत, कु.अंजनी, (2013) ने छत्तीसगढ़ की भैना जनजाति की शैक्षणिक स्थिति का अध्ययन किया। शोध अध्ययन के निष्कर्ष में इन्होंने पाया की भैना जनजाति में बालक बालिकाओं के विवाह 14 से 18 की उम्र में कर दिये जाते हैं, माता–पिता के अर्थोपार्जन के कार्य में संलग्नता के कारण परिवार में अन्य छोटे भाई–बहनों की देख–रेख की जिम्मेदारी का निर्वहन भी इन बालक बालिकाओं को करना पड़ता है। अशिक्षित सदस्य द्वारा पारिवारिक दायित्वों में संलग्नता एवं आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण भी भैना जनजाति के युवा सदस्यों में अपनी भावी पीढ़ी ने शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूकता का अभाव पाया गया।

नैयर, सोच्या. (2012) ने छत्तीसगढ़ के भुजियां एवं कमार जनजाति समुदाय के बालक बालिकाओं की सामाजिक स्थिति का अध्ययन किया। इन्होंने शोध निष्कर्ष में पाया कि कमार एवं भुजियां जनजाति के बालक–बालिकाये नियमित रूप से विद्यालय जाते हैं साथ ही विद्यालय नियमित रूप से पढाई व अन्य गतिविधियां भी कराई जाती है। इन समुदाय के बच्चों में यह पाया गया कि ये पढाई के साथ घर का भी काम करते हैं। सरकार द्वारा उन्हें शैक्षणिक सुविधाएं प्रदान की जाती हैं, इनको पंचायत सुविधा प्राप्त होती है, इन समुदायों के बालक बालिकाएं सामाजिक नियमों से परिचित है एवं उनका पालन करते हैं। विवाह की उम्र 18व 21 वर्ष है, इस समाज के लोग हिन्दी, छत्तीसगढ़ी, कमार, भुजियां भाषा का प्रयोग करते हैं।

भाट (2014) द्वारा, हाईस्कूल के छात्रों की गणित की उपलब्धि पर समस्या समाधान योग्यता का प्रभाव का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन हेतु अध्ययनकर्ता ने दक्षिण

कश्मीर के विभिन्न संस्थाओं के 10 वीं कक्षा के 598 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रुप में लिया। छात्रों की समस्या समाधान योग्यता के मापन के लिए ए.एन. दूबे द्वारा निर्मित परीक्षण का प्रयोग किया गया तथा शैक्षिक उपलब्धि हेतु आंकड़े छात्रों की पिछली कक्षा के प्राप्त उपलब्धि पत्र द्वारा लिये गये। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि समस्या समाधान योग्यता व गणित की उपलब्धि के मध्य धनात्मक सम्बन्ध है तथा गणित विषय की उपलब्धि की सर्वश्रेष्ठ भविष्यवक्ता है। अध्ययन यह भी बताता है कि 78.3 प्रतिशत छात्रों व 78.2 प्रतिशत छात्राओं के सन्दर्भ में अनुमानित परिणाम, मूल्यांकित परिणामों के समान थे।

हूडा एण्ड रानी देवी (2014) द्वारा समस्या समाधान योग्यता का किशोरों के लिए महत्व पर अध्ययन किया गया। इन्होनें अपने अध्ययन में पाया कि समस्या समाधान की योग्यता मनुष्य की प्राकृतिक प्रक्रिया है जिसे इच्छाशक्ति, अथक प्रयास और विशिष्ट प्रशिक्षण द्वारा उत्पन्न किया अथवा बढ़ाया जा सकता है।

जीना (2014) द्वारा स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली तथा समस्या समाधान योग्यता पर अध्ययन किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली व समस्या समाधान योग्यता का अन्तर लिंग के संदर्भ में अध्ययन करना था। इस उद्देश्य के परीक्षण हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाएं बनाई गई – 1) स्नातक स्तर के विज्ञान के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली में सार्थक अंतर होता है। 2) स्नातक स्तर के विज्ञान के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता में सार्थक अन्तर होता है। 3) स्नातक स्तर के विज्ञान के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली और समस्या समाधान में सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन हेतु निम्न मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया। संज्ञानात्मक शैली हेतु प्रवीन कुमार झा द्वारा निर्मित संज्ञानात्मक शैली इन्वेन्टरी का प्रयोग किया गया। समस्या समाधान योग्यता के परीक्षण हेतु एल.एन.दूबे निर्मित परीक्षण प्रयोग किया गया। अध्ययन हेतु जम्मू कश्मीर के फुलवा तथा अनंतनाग जिले के 300 विद्यार्थियों को सरल यादृच्छिक विधि द्वारा न्यादर्श के रुप में लिया गया, जिसमें 150 छात्र व 150 छात्राएं थी। जीना ने अपने अध्ययन में पाया कि संज्ञानात्मक शैली तथा समस्या समाधान योग्यता के मध्य सार्थक अन्तर व धनात्मक संबंध होता है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि छात्र–छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

सिंह (2013) द्वारा उच्च व निम्न शैक्षिक उपलब्धि प्राप्तकर्ताओं की चिंता व समायोजन तरीके पर अध्ययन किया गया। इस अध्ययन हेतु इन्होंने 100 आदिवासी महाविद्यालय के विधार्थियों का न्यादर्श के रुप में चयन किया जिसमें से 50 विद्यार्थी उच्च शैक्षणिक उपलब्धि व 50 निम्न शैक्षणिक उपलब्धि वाले थे। अध्ययन में पाया गया कि उच्च शैक्षणिक उपलब्धि वाले छात्रों में चिंता का स्तर अधिक था परन्तु इसका समायोजन स्तर पर बेहतर प्रभाव था जबकि निम्न शैक्षणिक उपलब्धि वाले विधार्थियों पर इसका विपरीत प्रभाव देखा गया अर्थात उनका चिंता का स्तर कम था व इसका उनके समायोजन स्तर पर अच्छा प्रभाव नहीं था। दोनों ही समूहों के लिए चिंता व समायोजन के मध्य सार्थक प्रभाव पाया गया।

शर्मा (2007) द्वारा हायर सेकेण्डरी के विधार्थियों की समस्या समाधान योग्यता तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का शैक्षिक उपलब्धि के निर्धारक के रुप में अध्ययन पर कार्य

किया इस अध्ययन के उद्देश्य लिंग के आधार पर विधार्थियों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अध्ययन करना था तथा शैक्षणिक उपलब्धि, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा समस्या समाधान योग्यता के मध्य संबंध का अध्ययन करना था। इन्होनें 240 विधार्थियों पर अध्ययन किया, व अपने शोध में पाया कि वर्तमान पाठ्यचर्या केवल सामान्य स्तर का वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा समस्या समाधान योग्यता विकसित करने में सहायक है तथा शैक्षणिक उपलब्धि, समस्या समाधान योग्यता व वैज्ञानिक दृष्टिकोण के मध्य एक सकारात्मक संबंध है।

सुकुल (2007) द्वारा समस्या समाधान प्रदर्शन पर व्यक्तिगत व समूह निर्धारण के प्रभाव का अध्ययन किया गया इस अध्ययन के उद्देश्य थे व्यक्तिगत स्थिति का समस्या समाधान पर प्रभाव तथा समूह सहभागिता का समस्या समाधान पर प्रभाव, सकुल ने अपने अध्ययन में पाया व्यक्तिगत स्थिति समस्या समाधान के लिए समूह सहभागिता से बेहतर होती है, समूह सहभागिता द्वारा समस्या समाधान की गति बढ़ जाती है।

सास्वता, एन. विश्वास और उर्मि (2007)ने आध्यात्मिकता, धार्मिकता और कार्य–अभिप्रेरणा पर अध्ययन किया जो कि एक अनुभवजन्य अनुसधांन है। उन्होंने आध्यात्मिकता और धार्मिकता के बीच सम्बन्ध की खोज की ओर कार्य–अभिप्रेरण पर उनके प्रभाव का अध्ययन किया। इसके लिए एक बड़ा न्यादर्श (N=1150) विभिन्न सेवा क्षेत्रों जैसे बैकिंग, बीमा और परिवहन जैसे क्षेत्रों के प्रबंधकों का लिया गया।

इनके द्वारा धार्मिकता आध्यात्मिकता, स्वायत्ता, योग्यता लक्ष्य अभिविन्यास सीखना और निषपादन अभिविन्यास का मापन किया गया। प्रतिभागियों से उम्र, वेतन स्तर, संगठन के स्तर और कार्य अनुभव के वर्ष के आधार पर जनसांख्यिकी आंकड़े एकत्रित किये गये। परिणाम ये सुझाव देते है कि आध्यात्मिकता द्वारा आन्तरिक अभिप्रेरणा और लक्ष्य अभिविन्यास का पूर्वानुमान लगता है। इन निष्कर्षों का निहिता संगठन और प्रबंधकों के सम्पूर्ण विकास और उच्चतर सजृनात्मकता में है।

सक्सेना एवं सिंह (2007) विवाहित एवं अविवहित सेवारत महिलाओं की विभिन्न कार्यक्षेत्रों में कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए चार कार्यक्षेत्रों (शिक्षा, चिकित्सा अभियांत्रिकी एवं विधि) में सेवारत 200 महिलाओं की (100 विवाहित एवं 100 अविवाहित) का चयन न्यादर्श हेतु किया। इस अध्ययन में प्रदत्तों को संकलित करने के लिए व्यावसायिक सन्तुष्टि मापक का प्रयोग हुआ तथा सांख्यिकीय विलेषण के द्वारा प्राप्त हुए निष्कर्ष इस प्रकार आये –(1) विवाहित तथा अविवाहित सेवारत महिलाओं की कार्य सन्तुष्टि में अन्तर पाया गया। (2) चारों कार्य क्षेत्रों में कार्यरत विवाहित एवं अविवाहित महिलाओं की कार्य सन्तुष्टि में अन्तर पाया गया।

पाण्डेय (2007) ने माध्यमिक विद्यालय एवं महाविद्यालय के अध्यापकों के मध्य व्यावसायिक सन्तुष्टि एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए कानपुर नगर के विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के 150 अध्यापकों का चयन न्यादर्श के रूप में किया। इस अध्ययन में प्रदत्तों का संकलन व्यावसायिक

सन्तुष्टि मापक (शोधकर्ता) एवं सामाजिक समायोजन परिसूची (आर. सी. देवा) की सहायता से किया गया तथा प्राप्त आँकड़ों के सांख्यिकीय विलेषण के आधार पर निम्न तथ्य प्रकाश में आये–(1) माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि तथा समायोजन के मध्य ऋणात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया। (2) महाविद्यालय के अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि तथा समायोजन के मध्य भी ऋणात्मक सह– सम्बन्ध पाया गया।,

वर्मा (2007)– प्रस्तुत शोध में उच्च शैक्षिक स्तर की विवाहित तथा अविवाहित महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य तथा अवसाद पर उनके रोजगार के प्रभाव का अध्ययन किया गया। अध्ययन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु यादृच्छिकी विधि द्वारा 21 से 35 आयु वर्ग तथा उच्च शैक्षिक स्तर की 60 विवाहित तथा 60 अविवाहित कुल 120 महिलाओं को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। जिनमें से 60 महिलाये कार्यरत तथा 60 महिलायें अकार्यरत थीं। प्रदत्तों के संकलन हेतु बैकस डिप्रेशन इन्वेटरी तथा थोर्प, क्लार्क एवं टिगस द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से परिणामित हुआ कि रोजगार एवं वैवाहिक स्थिति महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य तथा अवसाद को प्रभावित करते हैं। रोजगार एवं विवाह महिलाओं की आर्थिक, भावात्मक तथा सामाजिक आवश्यकताओं को काफी हद तक संतुष्ट करते हैं। महिलाओं के अवसाद मानों से यह स्पष्ट हुआ कि महिलायें रोजगार तथा विवाह दोनों से अवसादित होती हैं। साथ ही यह ज्ञात हुआ कि अविवाहित तथा अकार्यरत महिलायें, विवाहित तथा कार्यरत महिलाओं से अधिक अवसादग्रस्त पायी गई।

राठौर एवं ब्यादवाल (2006) ने अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि पर उनके लिंग एवं वैवाहिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए 200 अध्यापकों। (50 महिला, 50 पुरुष 50 विवाहित 50 अविवाहित) का चयन किया। इस अध्ययन में प्रदत्तों का संकलन व्यावसायिक सन्तुष्टि मापक की सहायता से किया गया तथा प्राप्त आँकड़ों के सांख्यिकीय विलेषण के आधार पर पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में अधिक व्यावसायिक सन्तुष्टि पायी गयी।

सिंह एवं सिंह (2006)– प्रस्तुत शोध अध्ययन में वाराणसी शहर की मध्य आयु वर्ग की महिला शिक्षिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य स्तर का अध्ययन किया गया। अध्ययन का उद्देश्य शिक्षिकाओं की चिंता, अवसाद, पारिवारिक समस्या, कार्य समस्या आदि को विश्लेषित करना था। अध्ययन हेतु वाराणसी के 15 सरकारी विद्यालयों की 50 मध्य आयु वर्ग की शिक्षकाओं को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। प्रदत्त संकलन हेतु सामान्य स्वास्थ्य प्रश्नावली तथा साइको सोशल स्ट्रेस स्केल को समस्त न्यादर्श पर प्रशासित किया गया। साथ ही शिक्षकाओं का एक साक्षात्कार भी किया गया। साइको सोशल स्ट्रेस स्केल के प्राप्त मानों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि 54 प्रतिशत मामलों में उच्च स्तर तनाव, 18 प्रतिशत मामलों में निम्न स्तर तनाव तथा 28 प्रतिशत मामालों में मध्य स्तर तनाव पाया गया। 64 प्रतिशत मामलों में चिंता का स्तर निम्न तथा 32 प्रतिशत में मध्यम पाया गया। 92 प्रतिशत मामलों में अवसाद स्तर निम्न रहा। प्रायः मध्य आयु वर्ग की शिक्षिकाओं का स्वास्थ्य सामान्य पाया गया। मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से निजात के लिये शिक्षिकाओं द्वारा सही प्रकार से कार्य सम्पादन हेतु कार्यनीत विकसित करने की आवश्यकता है।

बंसीबिहारी पंडित और लता सुखड़े (2006) ने शिक्षक प्रभावशीलता पर संवेगात्मक परिपक्तवता के प्रभाव का अध्ययन किया और यह पाया गया कि महिला शिक्षक पुरुष शिक्षकों की तुलना में संवेगात्मक रूप से अधिक परिपक्व स्थिर थी।

मारे (2006) द्वारा समस्या समाधान विधार्थियों की अभिवृत्ति का मापन, अपेक्षा व विश्वास पर अध्ययन किया गया। इस अध्ययन के उद्देश्य थे कि विधार्थियों के समस्या समाधान योग्यता के प्रति स्वयं मूल्यांकन का अध्ययन करना, इन्होनें अध्ययन में पाया कि कोई व्यक्ति समस्या समाधान उसकी योजनाओं के बारे में अनुभव व प्रयास द्वारा सीख सकता है।

आदिनारायण रेड्डी पी. और उमा देवी डी. (2005) ने 'ट्राइबल' नामक पुस्तक लिखी जिसमें उन्होंने आदिवासी महिला शिक्षा–प्रतिबंध और रणनीतियाँ पर ध्यान आकर्षित किया उनके शोध में यह पाया गया की जनजातीय जनसँख्या देश की कुल जनसंख्या का लगभग केवल सात प्रतिशत हैं। उनके शोध के मुख्य उद्दश्य थे :साक्षरता से जुड़ी समस्याओं को तीव्र करना,तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में आदिम जनजातीय महिलाओं की समस्याओं के कारकों का चित्रण करना,आदिम जनजातीय महिलाओं के बीच साक्षरता की वृद्धि में योगदान देना, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश चल रहे विकास कार्यों की समीक्षा करना,आदिम जनजातियों के बीच साक्षरता को बढ़ावा देने पर जोर देने वाला कार्यक्रम का

अध्ययन करना,तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में महिलाओं के लिए उपयुक्त रणनीतियाँ विकसित करना,आदिम जनजातीय महिलाओं में साक्षरता को बढ़ावा देना,उनके शोध के अनुसार आदिवासी महिलाओं में साक्षरता की वृद्धि तुलनात्मक रूप से कम पाई गई।

जनजातीय शिक्षा प्रकोष्ठ, डीपीईपी/एसएसए (2005) ने भाषायी पाठ्यपुस्तकों प्रभाव पर एक अध्ययन किया । कक्षा–1 की भाषा की पाठ्यपुस्तकें आठ जनजातीय बोलियों में विकसित की गईं और स्कूलों में शुरू की गईं । इस शोध के उद्देश्य निम्न थे:भाषायी पाठ्यपुस्तकों का अनुसूचित छात्रों पर प्रभाव का अध्ययन करना,कक्षा में पाठ्यपुस्तक का संचालन का निरीक्षण करना,छात्र की भागीदारी का आकलन करना,नई पाठ्य पुस्तकों के प्रभाव का अध्ययन करना ।शोध के निष्कर्ष में यह पाया गया की छात्र नियमितता और समय की पाबन्दी को बढ़ाया गया। विद्यार्थियों के ठहराव में वृद्धि हुई छात्रों के मन से स्कूल का डर दूर हुआ।

चांद (2005) ने हिमाचल प्रदेश के उच्च विद्यालयों में पढाने वाले शारीरिक शिक्षा शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा एवं कार्य संतुष्टि का मौजूदा खेल सुविद्याओं के सन्दर्भ में मूल्यांकन किया। अध्ययन के लिए 300 शारीरिक शिक्षकों का न्यादर्श (Sample) लिया गया आंकडों के संकलन के लिए कार्य अभिप्रेरणा स्केल (के. जी. अग्रवाल) और कार्य संतुष्टि प्रश्नावली (कुमार और मुथा) का प्रयोग किया

गया। शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा की तुलना निर्भरता, संगठनात्मक अभिविन्यास, कार्य समूह सम्बन्ध, प्रोत्साहन, नौकरी की स्थिति जैसे घटकों पर की गई थी। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला कि शारीरिक शिक्षा शिक्षकों की कार्य संतुष्टि और कार्य प्रेरणा खेल सुविद्याओं के स्तर से सम्बन्धित नहीं थे। अध्ययन में यह भी पता चला कि निचले स्तर की खेल सुविद्या स्कूलों में पदस्थापित शिक्षकों के पास उच्च स्तर की प्रेरणा होती है। जबकि औसत स्तर के खेल सुविद्याओं वाले स्कूलों के शिक्षकों की कम।

आयशाबी एवं अमृत (2005) ने प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि तथा उनकी शिक्षण दक्षता में सम्बन्ध का अध्ययन करने के लिए केरल के विभिन्न जिलों के 224 प्राथमिक अध्यापकों का चयन यादृच्छिकी विधि द्वारा किया। इसमें आँकड़ों का संकलन करने के लिए शिक्षण दक्षता रेटिंग स्केल एवं व्यावसायिक सन्तुष्टि प्रश्नावली का प्रयोग किया गया तथा निष्कर्ष निकाला कि अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि तथा उनकी शिक्षण दक्षता में सकारात्मक सम्बन्ध था।

सहाय एवं राज (2005) ने पांडिचेरी राज्य के सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन विषय पर शोध कार्य किया। इस अध्ययन का उद्देश्य व्यावसायिक सन्तुष्टि तथा वेतन के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करना था। इसके लिए 82 अध्यापकों का चयन यादृच्छिकी विधि द्वारा किया गया तथा

प्राप्त आँकड़ों के सांख्यिकीय विलेषण के आधार पर व्यावसायिक सन्तुष्टि तथा वेतन के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

अमनदीप और गुरूप्रीत (2005) ने निष्कर्ष निकाला कि ै पुरुष और महिला शिक्षक महत्वपूर्ण रूप से भिन्न नही है, और शिक्षण योग्यता का परिवर्तन शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अग्रवाल एवं अग्रवाल (2004) ने विद्या भारती द्वारा संचालित कानपुर नगर के सरस्वती विद्या मन्दिर के अध्यापको की कार्य – संन्तुष्टि का अध्ययन करने के लिए कानपुर के 4 सरस्वती विद्या मन्दिर के 114 अध्यापकों (77 पुरुष व 3 महिला) का चयन किया। इस अध्ययन में महिला एवं पुरुष की व्यावसायिक सन्तुष्टि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया

विजय लक्ष्मी और माइथिल (2004) ने शिक्षक प्रभावशीलता और कार्य अभिविन्यास पर व्यक्तिगत चर (आयु,वैवाहिक स्थिति,लिंग) और पेशेवर चर (अनुभव योग्यता,शिक्षण का विषय, पद, कॉलेज प्रबधन के कॉलेज का प्रकार का स्तर) के प्रभाव का अध्ययन किया। आंध्र प्रदेश के विजयनगरम जिले के जूनियर कॉलेजों, डिग्री कॉलेजों और पेशेवर कॉलेजो में कार्यरत 220 शिक्षकों पर अध्ययन किया। परिणामों से पता चला कि 35वर्ष तक और 35वर्ष से अधिक आयु के शिक्षकों, विवाहितों और अविवाहित विभिन्न पदनाम वाले शिक्षकों और जूनियर डिग्री कॉलेजो में काम करने वाले शिक्षकों के बीच उनकी शिक्षक प्रभावशीलता

के सबंध में महत्वपूर्ण अन्तर था। उनके कार्य अभिन्यास के सबंध में विवाहित और अविवाहित, पुरुष और महिला शिक्षकों, विभिन्न सवंर्गो के शिक्षकों जूनियर और डिग्री कॉलेज के कर्मचारियों और सरकारी एवं निजी कॉलेज के शिक्षकों के बीच सार्थक अन्तर मौजूद था। शिक्षक प्रभावशीलता और उनके कार्य अभिविन्यास के बीच सकारात्मक और मध्यम सहसबंध था। 35वर्ष से अधिक आयु के शिक्षक विवाहित शिक्षक, महिला शिक्षक, सहायक प्रोफेसर और डिग्री कॉलेज शिक्षक अपने समकक्षो की तुलना में अधिक प्रभावी है।

वंदना और पुनिया (2004) ने शैक्षिक प्रबंधको की सहज क्षमताओं और मानव संसाधन प्रभावशीलता का अध्ययन किया।निष्कर्षों ने संकेत दिया कि शैक्षिक प्रबंधको को समस्याओं को खोजने और उनके प्रभावी कार्यान्वयन के माध्यम से समाधान तक पहुँचने से पहले उद्देश्यों को निर्धारित करने की आवश्यकता के विषय में अच्छी तरह से पता है। यहा लक्ष्य निर्धारण की पूरी प्रक्रिया में प्रशासकों की सहज क्षमताओं की बड़ी भूमिका होती है। वास्तव में ऐसी स्थिति में जब सब कुछ नियत्रंण से बाहर हो रहा है,संकट प्रबधंन में सक्ष्म लोगो की प्रतिक्रियाओं और निर्णयों में सहज क्षमताएँ जीवित हो जाती है। इस प्रकार तीव्र जटिलता और संधर्श द्वारा निर्मित समस्याओं का निदान करने की क्षमता के लिए सर्वोतम परिणाम प्राप्त करने के लिए एक सहज ज्ञानयुक्त दिमाग की आवश्यकता हो सकती है। जिसका अर्थ है कि अंर्तज्ञान शब्द तर्क विपरीत कुछ नही बल्कि कारणों के प्रांत के बाहर कुछ को दर्शाता है।

सिंह (2002) ने शिक्षकों के मूल्यो,शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण और शिक्षक प्रभावशीलता के सबंध में शिक्षक शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के परिणाम बताते है कि कार्य संतुष्टि –श्सामाजिक मूल्य सुखवादी मूल्य,शक्ति मूल्य के साथ धनात्मक रूप से सहसम्बन्धित है। शिक्षण के प्रति –ष्टिकोण कार्य संतुष्टि के साथ धनात्मक सहसंबधित है। शिक्षक प्रभावशीलता धनात्मक और सार्थक रूप से कार्य संतुष्टि के साथ सहसम्बन्धित पाई गई।

श्रीवास्तव (2004) प्रस्तुत शोध में आशावादी तथा निराशावादी छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और व्यक्तित्व समायोजन के मध्य सार्थक अंतर का अध्ययन किया गया। अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में 75 छात्रों तथा 75 छात्राओं कुल 150 जनपद कानपुर के इंटरमीडियेट स्तर के छात्रों को चयनित किया गया। अध्ययन हेतु पाराशर (1989) द्वारा निर्मित आप्टीमिस्टिक–पैसीमिस्टिक एटीट्यूड स्केल, कुमार एवं ठाकुर (1985) द्वारा निर्मित मिथिला मेंटल हेल्थ इन्वेंटरी तथा शर्मा (1972) द्वारा निर्मित पर्सनल एडजस्टमेंट इन्वेटरी का प्रयोग किया गया। अध्ययन के परिगामी विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि आशावादी छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य निराशावादी छात्रों की तुलना में सार्थक रूप से अच्छा था। व्यक्तिगत समायोजन के क्षेत्र में आशावादी एवं निराशावादी छात्रों के स्तर में सार्थक भिन्नता पाई गई।

खान (2003) राज. सी. सै. शिक्षकों और शिक्षक प्रदर्शन के बीच कार्य अभिप्रेरणा का प्रेक्षण किया। 250 सरकारी सीनियर सैकण्डरी स्कूल के शिक्षकों का न्यादर्श लिया गया। आंकडों के संकलन के लिए कार्य अभिप्रेरणा प्रश्नावली अग्रवाल द्वारा और कुमार एवं मुथा द्वारा शिक्षक प्रभावशीलता स्केल का उपयोग किया गया था। अध्ययन के परिणामों द्वारा निष्कर्ष निकाला गया कि पुरूष शिक्षक और महिला शिक्षकों मे कार्य प्रेरणा के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं था। पुरूष शिक्षकों को कार्य अभिप्रेरणा के तीन आयाम निर्भरता, कार्य समूह सम्बन्ध और मनोवैज्ञानिक कार्य प्रोत्साहन के सम्बन्ध में अपने समकक्षों से अधिक बेहतर पाया गया। विभिन्न आयु समूह वाले शिक्षकों की कार्य प्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं था। विद्यार्थियों की उपलब्धि के सम्बन्ध में उच्च व निम्न कार्य प्रेरणा वाले शिक्षकों के बीच सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

बेगम एवं राज (2003) ने जॉब सैटिस्फैक्शन एण्ड स्पीरीचूअलिस्टिक ओरियन्टस अमंग कॉलेज टीचर्स विषय पर शोध कार्य किया। इस शोध का उद्देश्य कला एवं विज्ञान संकाय के अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन करना था। इसके लिए केरल के 412 अध्यापकों (206 कला एवं 206 विज्ञान) का चयन स्तरीकृत यादृच्छिकी विधि द्वारा किया तथा सांख्यिकीय विलेषण के आधर पर निष्कर्ष निकाला कि कला एवं विज्ञान संकाय के अध्यापकों की व्यावसायिक व्यावसायिक सन्तुष्टि का स्तर समान था जबकि कला संकाय की महिला अध्यापकों में अधिक सन्तुष्टि थी।

अग्रवाल एवं जायसवाल (2003) ने सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन करने के लिए कानपुर नगर के 6 सरस्वती शिशु मन्दिर का चयन किया।इस अध्ययन में प्रदत्तों के संकलन हेतु व्यावसायिक सन्तुष्टि मापक का प्रयोग किया गया तथा निष्कर्ष निकाला कि महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नही होता है।

अलका सक्सैना (2002) ने अपनी पुस्तक 'द डायनामिक ऑफ ट्राइबल एजुकेशन' में जनजातीय जीवन पर आधुनिक शिक्षा के प्रभाव पर प्रकाश डाला । उनके अनुसार शिक्षा को उनके आर्थिक जीवन को बेहतर बनाने का एक शक्तिशाली साधन बनना चाहिए। उन्होंने आदिवासी शिक्षा के लिए ऐसी अंतर्दृष्टि प्रदान की जो इसकी गति को बदलने में काफी मददगार साबित होगी ।

खोपाध्याय, रवीन्द्रनाथ और घोष, सुधेष्णा (2002) ने जनजातीय साक्षरता की गुणवत्ता का अध्ययन किया उनके शोध के प्रमुख प्रमुख निष्कर्ष थे :अखिल भारतीय स्तर पर जनजातीय साक्षरता दर बहुत कम थी। सामान्य और जनजातीय दोनों के लिए साक्षरता के स्तर में विभिन्न राज्यों में भिन्नताएँ हैं ।

रेड्डी, पी. सुधाकर (2002) ने जनजातीय आश्रम विद्यालयों की कार्यप्रणाली का मूल्यांकन किया आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र के क्षेत्र के अध्ययन में यह पाया गया की आंध्र प्रदेश में आदिवासियों के बीच लड़कियों के नामांकन को प्रोत्साहित नहीं किया गया और माता–पिता को भी प्रोत्साहित नहीं किया गया उनकी शिक्षा

में कोई रुचि नहीं थी. महाराष्ट्र में केवल कुछ ही आश्रम विद्यालय व्यावसायिक एवं शिल्प शिक्षा में प्रशिक्षण की सुविधा थी। अभिभावक शिक्षक संघ आंध्र प्रदेश में केवल 4 स्कूलों और महाराष्ट्र में 6 स्कूलों में गठित किए गए थे और बैठकें प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष की पहली और आखिरी तिमाही में ही आयोजित की गईं बैठकें आयोजित करना कठिन था और अभिभावकों की प्रतिक्रिया भी कठिन थी ।

शुक्ला (2002) ने स्ववित्तपोशी तथा अनुदानित विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण मनोवृत्ति,कार्य–सन्तुष्टि तथा छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए स्ववितपोशी तथा अनुदानित प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के 200 अध्यापकों का चयन न्यादर्श के लिए किया। इसमें आँकड़ों क संकलन करने के लिए अध्यापक मनोवृत्ति परिसूची (एस0पी0 अहलूवालिया) एवं व्यावसायिक सन्तुष्टि मापक (मीरा दीक्षित) का प्रयोग हुआ तथा प्राप्त आँकड़ों के सांख्यिकीय विलेषण के आधार पर स्ववित्त पोशी तथा अनुदानित विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण मनोवृत्ति तथा कार्य–सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

भूयान एवं चौधरी (2002) ने कोरिलेटस ऑफ जॉब सैटिस्फैक्शन विषय पर शोध कार्य किया। जिसका उद्देश्य अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि के स्तर तथा अध्यापन अनुभव के मध्य साहचर्य का पता लगाना था। इस अध्ययन में न्यायदर्श के रूप में असम के कामरूप तथा गोलपार जिले के विभिन्न विद्यालयों के 210

अध्यापकों का चयन यादृच्छिकी विधि द्वारा किया गया। प्राप्त आँकड़ों के सांख्यिकीय विलेषण के आधार पर अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि के स्तर तथा अध्यापन अनुभव के मध्य कोई साहचर्य नही पाया गया।

डोटिया (2000)ने राजस्थान के वाणिज्य के अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि को प्रभावित करने वाले कारकों का पता लगााना तथा उसका छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन विषय पर शोध कार्य किया। इसका उद्देश्य अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि तथा मासिक आय के मध्य सम्बन्ध का पता लगााना था इस अध्ययन में इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में राजस्थान के वाणिज्य संकाय के अध्यापकों तथा छात्रों का चयन किया तथा निष्कर्ष निकाला कि अध्यापकों की व्यावसायिक तथा मासिक आय के मध्य धनात्मक सह– सम्बन्ध होता है।

बेगम व धर्मगदन (2000) ने केरल के अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का लिंग–भिन्नता के आधार पर अध्ययन किया। इसमें न्यादर्श के रूप में केरल के विभिन्न महाविद्यालयों में कार्यरत 415 अध्यापकों का चयन किया गया तथा आँकड़ों के संकलन के लिए व्यावसायिक सन्तुष्टि सूची का प्रयोग हुआ। इस अध्ययन में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में अधिक व्यावसायिक सन्तुष्टि पायी गयी।

अग्रवाल (2000) ने जॉब सैटिस्फैक्शन ऑफ टीचर्स इन रिलेशन टु सम–डैमोग्राफिक वैरिएबल्स एण्ड वैल्यूज विषय पर शोध कार्य किया। इस अध्ययन

का उद्देशय प्रशिक्षित तथा अपशिक्षित अध्यापकों के मध्य व्यावसायिक सन्तुष्टि का मापन करना था। इसके लिए प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों के 503 अध्यापकों का चयन करके पता लगाया कि प्रशिक्षित अध्यापकों में अपने व्यवसाय को लेकर अधिक सन्तुष्टि होती है। तथा आँकड़ों के सांख्यिकीय विलेषण के आधार पर महिलाओं में अधिक व्यावसायिक सन्तुष्टि पायी गयी।

विदेशों में किये गये शोध कार्य

Durie, M, (2021) ने अपने लेख में न्यूजीलैण्ड के माओरी जनजाति के अनुभवों संदर्भ में स्वदेशी उच्च शिक्षा के बारे में किये अपने शोध कार्य का सारांश प्रस्तुत किया है। इस पत्र में माओरी जनजाति की उच्च शिक्षा हेतु चार सिद्धांतों स्वदेशीयता, अकादमिक सफलता, भागीदारी एवं भविष्योन्मुखता के बारे में चर्चा की गई है। लेख में माओरी जनजाति के लिए अनेक शैक्षिक अवसरों, यथा– राष्ट्रीय नीतियों, शैक्षिक नीतियों, कैम्पस नवाचारों एवं स्वदेशीय नेतृत्व के बारे में भी बताया गया है।

Macfarlane, A. et al. (2020) का शोध पत्र न्यूजीलैण्ड के आदिवासी समुदाय 'माओरी' जनजाति की शैक्षिक स्थिति पर किये गये चार शोध कार्यों पर आधारित है। इस शोध पत्र में माओरी, जो कि न्यूजीलैण्ड के मूल निवासी हैं, के लिए सांस्कृतिक दृष्टि से सुरक्षित विद्यालयों की आवश्यकता पर बल दिया गया है। इसके लिए माओरी समुदाय के लिये एक ऐसी शैक्षिक रूपरेखा के बारे में कल्पना की गई है, जिसमें सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की साझेदारी के माध्यम से शिक्षण–व्यूहरचना का निर्माण किया जाये। इस कार्य के लिए दो विभिन्न मानवजातीय

वैयक्तिक अध्ययनों से ऑकडे एकत्रित कर उनका अध्ययन किया गया। इस प्रकार साक्ष्यों पर आधारित यह शोध पत्र माओरी जनजाति के विद्यार्थियों हेतु सांस्कृतिक रूप से सुरक्षित विद्यालयों की स्थापना की अनुशंसा करता है।

Sorkness, H.L. & Gibson, L.K. (2018) ने मूल अमरीकी निवासियों को समर्पित एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में अमरीका के मूल निवासियों 'रेड इंडियंस' के विद्यार्थियों को व्यस्त रखने हेतु प्रभावी शिक्षण–व्यूहरचनाओं पर एक शोध पत्र प्रस्तुत किया। इस पत्र में 'रेड इंडियंस' विद्यार्थियों में बढ़ती ड्रॉपआउट समस्या पर चिंता व्यक्त की गई। यह शोध कार्य सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया जिसमें प्रभावी शिक्षण–व्यूहरचनाओं के संदर्भ में कई प्रश्न पूछे गये। शोध परिणामों में पाया गया कि 'रेड इंडियंस' की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का प्रधान कारण उनकी सांस्कृतिक भिन्नता है। इन विद्यार्थियों हेतु विशिष्ट शिक्षण– व्यूहरचनाओं की ओर इंगित करते हुए शोधकर्ताओं ने शिक्षक की भूमिका एक अधिगमकर्ता के तौर पर विकसित किये जाने पर बल दिया।

Price, M. et al. (2017) ने अमरीका के मूल निवासियों 'रेड इंडियंस' के सीखने के तरीकों एवं कक्षा–कक्ष अभ्यास के निहितार्थों पर लेख लिखा। इस लेख में अमरीका के 'रेड इंडियंस' विद्यार्थियों एवं अन्य श्वेत विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धि में अन्तर की ओर इंगित किया गया है। इसमें बताया गया है कि 'रेड इंडियंस' विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धि चेत समुदाय के विद्यार्थियों की तुलना में काफी कम है। साथ ही विद्यालयी शिक्षा बीच में ही छोड़ देने की दर भी इन विद्यार्थियों में बेत विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पाई गई, जो कि एक चिंतनीय विषय है। इस

लेख में मूल अमरीकी 'रेड इंडियंस' विद्यार्थियों के सीखने के उन तरीकों का भी उल्लेख किया गया है, जो उन्हें अन्य समुदायों के समकक्ष लाने में मदद कर सकता है, यथा– विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण, क्रमबद्ध अध्ययन एवं तथ्यपरकता इत्यादि।

Aslam, M. (2016) ने पाकिस्तान के आदिवासी जिलों में लिंग के आधार पर विद्यालय छोड़ने वाले विद्यार्थियों की समस्याओं का अध्ययन किया। इस शोध के निष्कर्ष में पाया कि देश के आदिवासी जिलों में प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में लड़कियों की अपेक्षा लडको की संख्या अधिक है। विभिन्न अध्ययनों से लैंगिक असमानता का पता चला और पाया कि शिक्षा में लडकियों की संख्या में कमी का कारण ग्रामीण एवं आदिवासी माता– पिता में शिक्षा का अभाव पाया गया।

Ayub Buzdar, Muhammad; Ali, Akhtar (2014) ने बालिका शिक्षा के प्रति पाकिस्तान के डेरा गाजी खान जिले के आदिवासी क्षेत्रों के अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया। इस शोध कार्य का उद्देश्य आदिवासी माता–पिता का बालिका शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले कारको का अध्ययन करना था। शोध कार्य के निष्कर्ष में इन्होने पाया कि अधिकांश माता पिता बालिका शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते है। साथ ही कुछ प्रशासनिक कठिनाइयाँ बालिका शिक्षा को प्रभावित करती है। बालिका शिक्षा में कमी का कारण बुनियादी सुविधाओं का अभाव पाया गया। उन्होंने सिफारिश की कि नए स्कूल खोले जाएँ और इन समस्याओं को दूर करने से पहले स्कूल भवन बुनियादी ढांचे का समर्थन, शिक्षकों की कमी दूर की जाए और गरीब छात्रों को वित्तीय सहायता दी जाए।

किम व चोई (2014) द्वारा नर्सिंग के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता, व्यवसायिक आत्म संकल्पना और आलोचनात्मक मनन प्रवृत्ति के मध्य संबंध" पर शोध किया गया। इस अध्ययन का लक्ष्य नर्सिंग के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता का विश्लेषण करना तथा अन्वेषण करना था कि विश्लेषणात्मक चिन्तन तथा व्यवसायिक आत्म संकल्पना, समस्या समाधान योग्यता को कैसे प्रभावित करते हैं। अध्ययन के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु निम्न उद्देश्य थे –1) नर्सिंग के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता, व्यवसायिक आत्म संकल्पना व विश्लेषणात्मक चिन्तन का परीक्षण करना। 2) समस्या समाधान योग्यता, व्यवसायिक आत्म संकल्पना व विश्लेषणात्मक चिंतन में सम्बन्ध देखना। 3) समस्या समाधान योग्यता को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करना। शोध कार्य हेतु चार विभिन्न नर्सिंग कालेज में पढ़ने वाले विद्यार्थियों, दो डिप्लोमा कोर्स के विद्यार्थी व दो स्नातक कोर्स के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रुप में लिया गया। न्यादर्श का चयन सुविधानुसार प्रतिचयन (convenience sampling) के माध्यम से किया गया। चरों के मापन हेतु निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया–1) समस्या समाधान योग्यता – समस्या समाधान योग्यता का मापन 6 प्वांईट लिंकेट स्केल द्वारा किया गया, जिसमें 32 अनुवादित प्रश्नों का प्रयोग किया गया जो कि मूल रुप से हैप्नर व पीटरसन (1982) के उपकरण था। 2) व्यवसायिक आत्म संकल्पना – व्यवसायिक आत्म संकल्पना को मापने के लिए मूल रुप से आर्थर (1995) के उपकरण का प्रयोग किया गया। व्यवसायिक आत्म संकल्पना को मापने के लिए 4 प्वाईंट रेटिंग स्केल का प्रयोग किया गया। 3) विश्लेषणात्मक चिंतन प्रकृति – विश्लेषणात्मक चिंतन प्रकृति को मापने के लिए प्वाईंट लिकेट टाइप मापनी का प्रयोग किया गया। इसके मापन हेतु

पाक्र (1990) का उपकरण प्रयोग किया गया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि व्यवसायिक आत्म संकल्पना व विश्लेषणात्मक चिंतन प्रवृत्ति समस्या समाधान योग्यता को बढाने में सहायक हैं।

इरोजकन (2013) द्वारा सम्प्रेषण कौशल तथा अन्तर वैयक्तिक समस्या समाधान कौशल का सामाजिक आत्म प्रभावकारिता पर प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन हेतु इन्होंने 494 व्यक्तियों (जिसमें 226 महिलाएं व 268 पुरुष) थे, का न्यादर्श के रुप में चयन किया, ये न्यादर्श टर्की के हाईस्कूल के छात्र–छात्राएं थे। इस अध्ययन का उद्देश्य सम्प्रेषण कौशल अन्तरवैयक्तिक समस्या समाधान कौशल व सामाजिक आत्म प्रभावकारिता के मध्य सम्बन्ध देखना था। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये आंकडे एकत्रित करने हेतु निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया – 1) सामाजिक आत्म प्रभावकारिता देखने के लिए बिलगिन (1999) द्वारा निर्मित सोशियल सेल्फ़ इफ़िकेसी एम्सपैम्टेशन स्केल का उपयोग किया गया। 2) सम्प्रेषण कौशल को मापने हेतु (कम्यूनिकेशन स्किल इन्वेन्टरी) का प्रयोग किया गया था अन्तरवैयक्तिक।

वुस्टैनवर्ग व अन्य (2013) द्वारा जटिल समस्या समाधान और उसके निर्धारकों में अर्न्तराष्ट्रीय लिंग भेद पर अध्ययन किया गया। इस अध्ययन हेतु कुल 890 हाईस्कूल के विद्यार्थी (आठवीं से ग्याहरवीं कक्षा) तक शामिल किये गये। कुल 890 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रुप में चुना गया, जिसमें से 411 विद्यार्थी (जिसमें से 210 छात्र थे) जर्मनी के तीन विद्यालयों से लिये गये जबकि 479 विद्यार्थी जिसमें से 223 छात्र

हंगरी के विद्यालयों से चुने गये, अपने अध्ययन में इन्होंने पाया कि समस्या समाधान पर अर्न्तराष्ट्रीय लिंग भेद का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि छात्रों ने छात्राओं से बेहतर प्रदर्शन किया तथा जर्मन विद्यार्थी ने हंगरी के विद्यार्थियों से बेहतर प्रदर्शन किया।

मैकेंज़ी, पामेला (2009) ने भारत की समृद्ध बहुभाषी भाषा पर एक अध्ययन किया। बहुसांस्कृतिक समाज सरकार के प्रयासों में अपने जनजातीय समुदायों की शैक्षिक आवश्यकताओं को संबोधित करने के लिए एक जटिल चुनौती पैदा करता है यद्यपि स्कूलों की पहुँच में वृद्धि हुई है और नामांकन दर में सुधार हो रहा है, लेकिन स्कूल छोड़ने की दर अभी भी हैं। इसका एक कारण यह है कि जिस शिक्षा पद्धति का संचालन किया जाता है आदिवासी समुदाय इसे एक अपरिचित सांस्कृतिक मानते हुए वे इस भाषा को नहीं समझते हैं। शोध यह प्रदर्शित करता है की जो शिक्षा मातृभाषा में शुरू होती है उसी शिक्षा के माध्यम के छात्रों के सामने आने वाली भाषाई और सांस्कृतिक बाधाएँ कम हो जाती हैं भाषा की बाधा स्कूल वक्ताओं की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने में एक प्रमुख घटक है इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए भारत सर्कार ने कई राज्यों ने शिक्षा को विकसित करने और लागू करने का विकल्प चुना है कई कार्यक्रमों में स्थानीय भाषाओं, जनजातीय संदर्भ और पर्यावरण का उपयोग किया जाता है यह शोध इसमें प्रयुक्त प्रक्रियाओं की रूपरेखा प्रस्तुत करता है बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम की सफलता और स्थिरता के लिए चुनौतियों की जांच करता है।

सायडर (2008) ने आलोचनात्मक चिंतन शिक्षण तथा समस्या समाधान योग्यता पर शोध कार्य किया और इन्होनें पाया कि ताक्रिक चिंतन योग्यता को अभ्यास, निर्देश द्वारा बढ़ाया जा सकता है, इसके लिए आवश्यक है शिक्षक केवल व्याख्यान न दे बल्कि छात्रों को भी अधिगम प्रक्रिया में व्यस्त करें, मूल्यांकन विधियाँ इस प्रकार की हो जिससे पता चले कि उन्होनें कितना सीखा न कि कितना याद किया।

अमुथा जी विलियमस पेंनानाथम और डीबा, ए. (2007)ने व्यवसायों के बीच स्व–प्रेरक कौशल पर कार्य किया और यह देखा कि स्व–प्रेरणा पेशेवर को उच्च निष्पादन प्राप्त करने में मदद करती है। वर्तमान अध्ययन में कुछ चुने गये जनसांख्यिकी चरों के सम्बन्ध में पेशेवरों के स्व–प्रेरणाकौशल पर प्रयास किया गया। इस न्यादर्श में तमिलनाडु के कन्याकुमारी पिले के 100 प्रोफेशनल्स को लिया गया। यह देखा गया कि प्रोफेशनलन के स्व–प्रेरणा कौशल में उनके शैक्षिक योग्यता के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया। पोस्ट ग्रेजुएट में ज्यादा स्व प्रेरणा कौशल पाया जाता है। यहाँ पर पेशेवरों के स्व प्रेरणा कौशल में उनके लिंग वैवाहिक स्थिति आयु अनुभव और रोजगार की प्रकृति के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

नेवा (2007) ने नेपाल के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच कार्य संतुष्टि, मीडिया उपयोग और सूचना और संचार प्रोधौगिकी के उपयोग के प्रति दृष्टिकोण के संबंध में शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन किया।अध्ययन के न्यादर्श में काठमांडू घाटी के 300 सरकारी और निजी विद्यालयों के शिक्षक शामिल थे। अध्ययन के

परिणाम बताते है कि शिक्षक प्रभावशीलता कार्य संतुष्टि,मीडियो के उपयोग और सूचना और प्रौधोगिकी के प्रतिदृष्टिकोण से सकारात्मक संबंधित पायी गई। शिक्षक प्रभावशीलता के संबंध में विद्यालय के प्रकार और अकादमिक स्ट्रीम के शिक्षकों के बीच कोई सार्थक अन्तक्रिया नही पायी गई। अधिक प्रभावी शिक्षकों ने कार्य संतुष्टि, मीडियों उपयोग और सूचना एवं प्रौधोगिकी के प्रति दृष्टिकोण में अच्छा प्रदर्शन किया। माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान, गणित, भाषा, सामाजिक विज्ञान के अधिक प्रभावी और कम प्रभावी शिक्षकों ने कार्य संतुष्टि, मीडियों के उपयोग और सूचना एवं प्रौधोगिकी के प्रति दृष्टिकोण के प्रति तुलनीय प्रदर्शन किया।

डगलस रूटलेज (2007) ने सैदान्तिक मॉडल और शिक्षक प्रभावशीलता के पूर्वानुमानों पर शोध की तुलना अन्य व्यावसायों के साथ की।कार्यकर्ता प्रभावशीलता के तीन विशिष्ट पूर्वानुमानों पर ध्यान केन्द्रिता किया –संज्ञानात्मक क्षमता, व्यक्तित्व और शिक्षा। शिक्षकों और अन्य कर्मचारियों के अध्ययन की तुलना विभिन्न तरीको से की जा सकती है जिसमें शिक्षक – प्रभावशीलता पर शोध मे सुधार और विस्तार किया जा सकता है, पहला–कार्यकर्ता साहित्य विशिष्ट सैद्वान्तिक मॉडल दिखाता है जैसा कि कार्य संगठन फिट, जो शिक्षकों के कार्य संदर्भ में मौजुदा मॉडल का पूरक है। इस तरह से शिक्षण के लिए कार्यकर्ता मॉडल का विस्तार करने का संभावित मूल्य इस तथ्य से पुष्ट होता है कि उपर वर्णित तीन शिक्षक विशेषताएँशिक्षकों और अन्य कर्मचारियों के बीच समान तरीके से प्रभावशीलता की भविष्यवाणी करती है दूसरा–प्रभावशीलता के कई मॉडल को रेखांकित करके उन महत्वपूर्ण आयामों की पहचान करना सभंव है, जिन पर वे भिन्न होते है जैसे कि विश्लेषण की इकाई और

सगठन के सबंध में व्यक्तिगत कार्यकर्ता की कल्पित भूमिका।तीसरा–अन्य कर्मचारियों पर शोध परिक्षण स्कोर के उपयोग से परे जाकर तीन पूर्वानुमानों और शिक्षक प्रभावशीलता के माप में सुधार करने के कुछ तरीकों पर प्रकाश डालता है।

डॉनली एवं मौरीन (2007)– प्रस्तुत शोध अध्ययन में अप्रवासी महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अनुभवों का संस्कृति पर प्रभाव का स्वास्थ्य देखभाल प्रदाताओं के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया गया। अध्ययन में मानसिक स्वास्थ्य देखभाल से सम्बन्धित सात प्रदाता संस्थाओं में कार्यरत अप्रावासी महिलाओं को सम्मिलित किया गया। शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अप्रवासी महिलाओं को इस क्षेत्र में सांस्कृतिक एवं सामाजिक असमानताओं का सामना करना पड़ता है। धार्मिक विश्वास उनके कार्यो को प्रभावित करते हैं। अप्रवासी महिलाओं प्रदान की गई मानसिक स्वास्थ्य सेवायें सेवा प्रदाता संस्था तथा प्राप्तकर्ता के मध्य सम्बन्ध को पूर्णतया प्रभावित करती हैं। सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अप्रवासी महिलाओं के कार्य को सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों ही रूपों में प्रभावित करती हैं। शोधकर्ता ने अप्रवासी महिलाओं को सांस्कृतिक एवं सामाजिक ज्ञान प्रदान करने के लिये विशेष बल दिया, जिससे उनके कार्य को बेहतर बनाया जा सके।

ली एवं हेलन (2007)– प्रस्तुत अध्ययन में आस्ट्रेलियाई नवयुवतियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा जीवन संक्रमण का अध्ययन किया गया। अध्ययन हेतु राष्ट्रीय स्तर पर 7619 नवयुवतियों का न्यादर्श के रूप में चयनित कर आवासीय स्वतंत्रता, सम्बन्धों, शिक्षा एवं कार्य तथा मातृत्व से सम्बन्धित ऑकड़ें एकत्र किये गये। तीन वर्ष पश्चात

उन्हीं महिलाओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी जीवन के स्तर, आशावाद, अवसाद के लक्षण, जीवन संतुष्टि आदि के सन्दर्भ में जॉच की गई। अध्ययन के परिणामस्वरूप ज्ञात हुआ कि विवाह के उपरांत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सकारात्मक बदलाव पाये गये। महिलाओं के वैवाहिक अलगाव तथा तलाक के मामलों में समय अंतराल के साथ कमी देखी गई। जीवन के इस चरण में महिलायें जीवन परिवर्तन का अच्छी तरह सामना कर पाती हैं, लेकिन कुछ महिलाओं में मनोवैज्ञानिक बदलावों में ऋणात्मक अंतर पाया गया। अध्ययन से यह भी परिलक्षित हुआ कि सामाजिक ताना बाना नवयुवतियों को जीवन के महत्वपूर्ण संक्रमण काल में जीवन से सम्बन्धित चुनाव करने में पर्याप्त समर्थन प्रदान नहीं करता है, जिससे महिलायें अवसाद ग्रस्त हो जाती हैं।

कोवॉस (2006) ने फ्रांस के विद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य अैर शिक्षण स्तरका अध्ययन किया गया। इस सर्वेक्षण में 20–26 वर्ष के 3586 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया। इस सर्वेक्षण में पाया गया कि विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में सहयोग पायागया और मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित समस्याओं में देखा गया कि शाब्दिक यंत्रणा के कारण शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव पाया गया।

सुसलू (2006) ने प्राथमिक विद्यालयी शिक्षकों पर अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि प्रशासकों की अनुचित मांग, टीम की भावना का प्रोत्साहित करना, पुरस्कारों की उपेक्षा करना और वितीय समस्याएँ शिक्षकों के बीच डीमोटिवेशेन से सम्बन्धित कारक थे। शिक्षक अभिप्रेरणा और कार्य संतुष्टि में आन्तरिक अभिप्रेरणा को पूर्व कारक के

रूप में पाया गया। आन्तरिक रूप से प्रेरित शिक्षक कम प्रेरित शिक्षकों की तुलना मे अत्यधिक संतुष्ट थे।

सालामी एवं एरिम (2006) दक्षिण पश्चिमी नाइजीरिया के विद्यालयी किशोरों की समस्या समाधान योग्यता व अध्ययन व्यवहार के मध्य संबंध पर अध्ययन किया गया। अध्ययन हेतु उच्च माध्यमिक स्तर के 430 विद्यार्थियों (215 छात्र व 215 छात्राएं) को स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा न्यादर्श के रुप में लिया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यालयी छात्रों में समस्या समाधान योग्यता व अध्ययन व्यवहार के मध्य संबंध की जांच करना था। इस अध्ययन हेतु हैपनर (188) द्वारा निर्मित समस्या समाधान इनवैनटरी व एकिंनबाय (1977) द्वारा निर्मित एडोलसेन्ट पर्सनल डाटा इन्वेन्टरी का उपकरण के रुप में प्रयोग किया गया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि समस्या समाधान योग्यता व अध्ययन व्यवहार के मध्य धनात्मक सम्बन्ध है तथा समस्या समाधान योग्यता, अध्ययन व्यवहार की भविष्यवाणी करने में सार्थक रुप से समर्थ है।

जानस्टोन (2006) द्वारा स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों की (विश्लेषणात्मक चिंतन अभ्यास) द्वारा समस्या समाधान योग्यता के संवर्धन पर अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों की विश्लेषणात्मक चिंतन कौशल (Critical thinking skill) का मूल्यांकन किया गया। इस शोध हेतु आस्ट्रेलिया के महाविद्यालय के स्नातकोत्तर स्तर के कोर्स वर्ग के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रुप में

लिया गया। उपकरण के रुप में मेनसा स्टाइल परीक्षण का उपयोग किया गया। विश्लेषणात्मक चिंतन अभ्यास की प्रभावशीलता देखने हेतु पूर्व व पश्च परीक्षण किये गये। विद्यार्थियों को उपचार के रुप में विश्लेषणात्मक चिंतन अभ्यास कराये गये। विश्लेषणात्मक चिंतन को महाविद्यालयी शिक्षा के आवश्यक तत्व के रुप में लिया गया। अपने अध्ययन में इन्होंने पाया कि विश्लेषणात्मक चिंतन द्वारा समस्या समाधान योग्यता में सुधार होता है अर्थात् विश्लेषणात्मक चिंतन को बढ़ाकर समस्या समाधान योग्यता को सवंर्धित किया जा सकता है।

कांग एवं चंग (2006)– कांग व चेंग ने वीजिंग के ग्रामीण किशोर बालक–बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया गया। न्यादर्श के रूप में 758 ग्रामीण किशोरों को यादृच्छिकी विधि द्वारा चयनित किया। प्रदत्तों के संकलन हेतु सोशियो इकोनोमिक स्टेटस इन्वेंटरी तथा मेंटल हेल्थ चेक लिस्ट का प्रयोग किया गया। ग्रामीण किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य स्तर में लिंग के परिप्रेक्ष्य में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, जबकि किशोर बालक–बालिकाओं के दैहिक स्वास्थ्य स्तर में सार्थक अंतर पाया गया। लड़कों का दैहिक स्वास्थ्य लड़कियों की अपेक्षा अधिक बेहतर रहा।

रॉटम एवं देसाई (2006)– प्रस्तुत शोध अध्ययन में बेघर तथा मातृ–मानसिक बीमारी से ग्रस्त बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया गया। अध्ययन में अमेरिका के यू एस आर्मड फोर्सेज ऑथर्स एस्सैस्ड एसोशियेशन ऑफ मेटरनल होमलैसनेस एण्ड क्लीनिकल स्टेट्स की 195 अनुभवी माताओं को न्यादर्श के रूप

में लिया गया। संस्था बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य, विद्यालय पंजीकरण तथा विद्यालय में उनकी उपस्थिति के सन्दर्भ में अध्ययनरत है। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि माताओं के मानसिक स्वास्थ्य का बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर सार्थक प्रभाव होता है। विद्यालयी वातावरण तथा घरेलू एकान्तता बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को पूणरूपेण प्रभावित करते हैं। माता से निजी सम्बन्ध तथा बच्चों की भावात्मक समस्याओं में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया। बच्चों के अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है, कि परिवार में सभी से सहज सम्बन्ध हों।

सिक्लेयर कैथरीन डाऊसन, मार्टिन, थिस्टेलटन–मार्टिन जुडिथ (2006) ने सह शिक्षकों का एक प्रोफाइल विकसित किया जो छात्र शिक्षकों के साथ काम करने के लिए सहमत हुए और उन कारकों पर विचार–विमर्श किया जो उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को प्राप्त करने को प्रोत्साहित करते है या रोकते है। परिणाम सुझाव देते है कि शिक्षकों की सकारात्मक प्रेरणा व्यावहारिक छात्रों के स्वयं विद्यार्थियों और व्यवसाय के प्रति व्यावसायिक प्रतिबद्धता के लिए चारों ओर घूमती है। यह अनुसंधान प्रेरित, प्रतिबद्ध और सक्षम स्कूल आधारित सहयोगी शिक्षकों का एक समूह विकसित करने के लिए बहुत ही उपयोगी है जो कि भावी पीढी के शिक्षकों के साथ काम करेगे।

लिन एवं सेण्डीफर (2005) लिन एवं सेण्डीफर द्वारा अध्ययन पूर्ण कर चुके उन युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य तथा शारीरिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया गया, जो रोजगार प्राप्त करने के लिये प्रयासरत थे। अध्ययन हेतु सर्वप्रथम 300 युवाओं के

मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य के ऑकडें एकत्र किये गये। छः माह पश्चात जिन युवाओं को रोजगार प्राप्त हो गया, उनके मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित ऑकड़ें पुनः एकत्रित किये गये। बेरोजगार तथा रोजगार प्राप्त युवाओं के मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य ऑकड़ों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। बेरोजगार युवाओं में तनाव व अवसाद रोजगार प्राप्त युवाओं से अधिक पाया गया। रोजगार प्राप्त युवाओं में नौकरी खोने का अधिक डर था, जबकि बेरोजगार युवा किसी भी तरह का कार्य करने को तत्पर पाये गये। मध्यम तथा निम्न स्तरीय परिवार के बेरोजगार युवाओं की तुलना में, उच्च स्तरीय परिवारों के बेरोजगार युवाओं को परिवार से अधिक प्रोत्साहन रोजगार प्राप्ति के लिये प्राप्त हुआ। रोजगार युवाओं की अपेक्षा बेरोजगार युवकों ने बीमार होने की दशा में आराम को अधिक महत्व प्रदान किया।

रिचर्ड (2005) ने माध्यमिक स्कूल के शिक्षकों पर कार्य अभिवृति की भविष्यवाणी के रूप में प्रेरक कारकों को खोजने के लिए एक अध्ययन किया। इसके लिए नाइजीरिया के 706 माध्यमिक शिक्षकों को चुना गया। अन्वेषक ने शिक्षकों के प्रेरक सूचकांकों और कार्य अभिवृति के बीच सम्बन्धों का आकलन किया आर निष्कर्ष निकाला कि ये कॉलेज दोनों एक दूसरें से सम्बन्धित नहीं थे। शिक्षक प्रेरक सूचकांक कार्य अभिवृति के प्रति कोई पुर्वानुमान नहीं बताता।

आर्थिक प्रेरक कारक माध्यमिक विद्यालयी शिक्षकों से सम्बन्धित नहीं थे। गैर आर्थिक प्रेरक सूंचकाको और कार्य अभिवृति के बीच सार्थक सम्बन्ध पाया गया। अर्थात जब गैर आर्थिक प्रेरक सूंचकाक जैसे व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास, छात्र की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होने पर उच्च कार्य अभिवृति पायी जाती है।

जेबा (2005) प्रस्तुत अध्ययन में जिला विद्यालय प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षु अध्यापकों की शिक्षण सक्षमता तथा मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन के साथ शिक्षण सक्षमता तथा मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध जानने का प्रयास किया गया। अध्ययन हेतु वानारामुटि जिला विद्यालय प्रशिक्षण संस्थान, जनपद तुथुकुडी के 150 महिला तथा 150 पुरूष प्रशिक्षु अध्यापकों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। शोध उपकरण के रूप में अब्राहम व प्रसन्ना द्वारा निर्मित मेंटल हेल्थ स्टेटस स्केल तथा स्वनिर्मित टीचिंग काम्पीटेंसी असैसमेंट स्केल का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि प्रशिक्षु अध्यापकों की शिक्षण सक्षमता तथा मानसिक स्वास्थ्य में मध्य सार्थक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

राउल (2004) प्रस्तुत शोध में ऑटोनोमस तथा नॉन ऑटोनोमस कॉलेजों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन उनके मानसिक स्वास्थ्य के सम्बन्ध में किया गया। अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोध अध्ययन उड़ीसा के 3 ऑटोनोमस तथा 3 नॉन ऑटोनोमस उच्च शिक्षण संस्थाओं, जिनकी संगठनात्मक संरचना लगभग समान थी, के शिक्षकों पर किया गया।

प्रत्येक शिक्षण संस्थान के सात संकायों के सात शिक्षकों को यादृच्छिकी विधि द्वारा चयनित किया गया। अंतिम न्यादर्श के रूप में कुल 294 शिक्षकों को लिया गया, जिसमें 199 पुरूष तथा 95 महिला शिक्षक थे। शिक्षण प्रभावशीलता के प्रदत्तों के रूप में प्राप्त करने के लिये क्रास वैलीडेशन उद्देश्य की पूर्ति हेतु विद्यार्थियों का चयन विद्यालयी रेटिंग द्वारा किया गया। अन्ततः 21 स्नातक अंतिम वर्ष के विद्यार्थी यादृच्छिकी विधि द्वारा चयन किये गये। अध्ययन हेतु कुमार एवं मुथा द्वारा निर्मित शिक्षण प्रभावशीलता मापनी तथा जगदीश एवं श्रीवास्तव द्वारा निर्मित मेंटल हेल्थ इन्वेंटरी का प्रयोग किया गया। अध्ययन निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि ऑटोनोमस शिक्षण संस्थाओं के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं मानसिक स्वास्थ्य नॉन ऑटोनोमस शिक्षण संस्थाओं के पुरूष तथा महिला शिक्षकों की तुलना में सार्थक रूप से अधिक उत्कृष्ट पायी गई।

फ्लेरोट एवं बेडलेगेज (2003) ने सबर्लन कम्यूनिटी (चीन) के 12 विद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया। इसके लिए 12 प्रश्नों वाले गोलबर्ग स्वास्थ्य प्रश्नोत्तरी का प्रयोग किया गया। जिसमें 139 शिक्षकों पर इस प्रश्नोत्तरी के प्रयोग करने पर 120 शिक्षकों ने ही इनका उत्तर दिया, जिसमें 99 महिला एवं 21 पुरुष शिक्षक थे। जिसमें से 28 प्रतिशत शिक्षकों में संवेगात्मक अस्थिरता देखी गई। सामान्य जीवन से संबंधित समस्याऐं 32 प्रतिशत शिक्षकों में देखी गई जिसमें आपसी संबंध बच्चो से संबंधित समस्याऐं देखी गई। उम्र एवं कार्य अवधि ये दो कारको का मानसिक स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव देखा गया है।

कैसल (2003) ने वर्तमान राज्य मानकों और कौशल के साथ काम करने के लिए एक परिवर्तनकारी महत्वपूर्ण शिक्षाशास्त्र विकसित करने के लिए एक अध्ययन का प्रयास किया जिसकी शिक्षकों को वर्तमान में पढाने के लिए आवश्यकता है शिक्षकों की सहायता के लिए प्रायोगिक शिक्षण को विकसित करने जो कि प्रभावी शिक्षण और अध्यापन का हिस्सा है। एक मल्टीसेन सीरियल कम्पोनेट को तैयार किया गया। निष्कर्षों से पता चला कि एक कठोर शैक्षणिक कार्यक्रम के साथ एक महत्वपूर्ण सामाजिक रूप से निर्मित शिक्षण अधिगम वातावरण जो कि अन्तःक्रिया खोज और समस्या समाधान पर आधारित है,शिक्षक प्रभावशीलता में योगदान देता है और विद्यार्थी अधिगम प्रभावी था।

2.7 शोध अतंराल

अधिकांश शोध अध्ययन में विधार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य, व अन्य चरों से सम्बन्ध का अध्ययन किया गया है जबकि विधार्थियों की शैक्षिक स्थिति और शैक्षिक समस्याएं दोनों के साथ बहुत कम शोध हुए।

अधिकांश शोध में यह अध्ययन नहीं किया गया कि शैक्षिक स्थिति और शैक्षिक समस्याएं से कैसे सम्बन्धित है।अधिकांश शोधों में शोध कार्य में समूहों में तुलना की गई है जबकि चरों में परस्पर तुलना नहीं की गई है।

2.8 उपसंहार

प्रस्तुत अध्याय में शोध कार्य से सम्बन्धित शोध साहित्य के अध्ययन का सक्षेपण प्रस्तुत किया गया है। जिसके अन्तर्गत सम्बन्धित अध्ययनों के उद्देश्य, प्रक्रिया एवं

उनके निष्कर्षों स्थान दिया गया है। इस कार्य से शोधार्थी को जो शोध रिक्तियाँ प्राप्त हुई है उन्हे आधार बनाकर चयनित शोध समस्या के चयन को उचित एवं प्रासगिंक सिद्ध किया जा सका है। सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से शोधार्थी को उपकरण, न्यादर्श चयन, आकड़ों का सग्रहण तथा आकड़ों की व्याख्या और विश्लेषण हेतु मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है।

अध्याय-तृतीय

शोध प्रविधि

तृतीय अध्याय
शोध प्रविधि

प्रस्तावना :–

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा सम्पूर्ण शोध प्रविधि का विस्तृत वर्णन किया जायेगा। जिसमें शोध अध्ययन से सम्बन्धी अनुसंधान विधि, न्यार्य, चयन, शोध उपकरण निर्माण से सम्बन्धी चरण तथा शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी का विस्तृत वर्णन किया जायेगा। अनुसंधान एक सुनियोजित प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानवी ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है और मानव जीवन को सुगम एवं प्रभावी बनाया जाता है। शोधकार्यों द्वारा मानवीय तनावों और कठिनाइयों को भी कम किया जाता है। अनुसंधान में नवीन तथ्यों की खोज एवं नवीन तथ्यों का प्रतिपादन किया जाता है।

''नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिए व्यवस्थित प्रयास ही अनुसंधान है।''

रेडमेन एवं मोरी

प्रत्येक शोध कार्य कैसा भी क्यों ना हो उसकी सफलता बहुत अधिक सीमा तक उसकी समुचित योजना एवं क्रिया विधि पर निर्भर करती है। शोध अनुसंधान के अन्तर्गत सम्बन्धित चरों एवं घटनाओं के पारस्परिक सम्बन्धों का अन्वेषण तथा विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकी विधि तथा मनोवैज्ञानिक विधि द्वारा किया जाता है।

शैक्षिक अनुसंधान के महत्व को स्पष्ट करते हुए विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का कहना है कि अनुसंधान के बिना अध्ययन मृतप्रायः हो जायेगा। इसमें सिद्धान्तों की

खोज, रचना एवं पुष्टि की जाती है। विधि, उपकरण तथा न्यादर्श, सांख्यिकी प्रविधियां अनुसंधान की महत्वपूर्ण इकाईयां है।

शोध या अनुसंधान एक व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रदत्त का विश्लेषण कर किसी समस्या का विश्वनीय समाधान ज्ञात किया जाता है।

इस प्रकार अनुसंधान में शोधकर्ता किसी तथ्य को बार–बार देखता है। उसको सम्बन्धित प्रदत्त को एकत्रीकरण करता है तथा उनके विश्लेषण के आधार पर उसके सम्बन्ध में निष्कर्ष निकालता है।

मैक ग्रेथ तथा वाट्सन के अनुसार –''अनुसंधान एक प्रक्रिया है जिसमें खोज का प्रयोग किया जाता है जिसके निष्कर्ष की उपयोगिता हो, ज्ञान में वृद्धि की जाये, प्रगति के लिए प्रोत्साहित करे, समाज के लिए सहायक तथा मनुष्य को अधिक प्रभावशाली बना सके। समाज तथा मनुष्य अपनी समस्याओं को अधिक प्रभावशाली ढंग से हल कर सके।''

शोध न्यादर्श :–

न्यादर्श के बिना शोध कार्य पूरा नहीं किया जा सकता है। न्यादर्श सम्पूर्ण समष्टि का प्रतिनिधित्व करता है। शैक्षिक अनुसंधान में न्यादर्श या प्रतिदर्श का चयन एक महत्वपूर्ण रुप है। इस प्रकार न्यादर्श जनसंख्या में चुनी गई कुछ इकाइयों का समूह है जो सम्पूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

गुडे एवं हट्ट के अनुसार –''प्रतिदर्श जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है एक विस्तृत समूह का लघु प्रतिनिधित्व हैं।''

पी.वी. यंग के अनुसार –''न्यादर्श अपने समस्त समूह का लघुचित्र होता है''।

बोगार्डस के अनुसार –''पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार इकाइयाँ के एक समूह में से एक निश्चित प्रकाशित का चुनाव ही न्यादर्श है।

न्यादर्श चयन के लाभ :–

1. न्यादर्श चयन से समय, श्रम एवं धन की बचत होती है।
2. न्यादर्श चयन के द्वारा आंकड़ों के सम्बन्ध में अधिक परिशुद्धता एवं विश्वसनीयता रहती है।
3. व्यापक जनसंख्या की समस्या का अध्ययन सम्भव होता है।
4. न्यादर्श चयन से ओर अधिक गहन अध्ययन की सम्भावना रहती है।

वर्तमान शोध में प्रयुक्त न्यादर्श :–

न्यादर्श एक सम्पूर्ण जनसंख्या का वह अंग है जिसमें समग्र की समस्त विशेषताओं का स्तष्ट प्रतिबिम्ब रहता है। अनुसंधान का महत्वपूर्ण आधार जनसंख्या होती है। चूँकि सम्पूर्ण जनसंख्या पर अध्ययन करना कठिन होता है। जनसंख्या में से कुछ प्रतिनिधि न्यादर्श का चुनाव कर लिया जाता है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा न्यादर्श का चयन दक्षिणी राजस्थान के सिरोही जिले निजी एव ं राजकीय विद्यालय स्तर कुल 320 विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा। प्रत्येक निजी एव ं राजकीय विद्यालय से 160 जनजातीय एव ं160 गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों का यादृच्छिक

प्रतिचयन विधि के माध्यम से चयन किया जाएगा। जिसे निम्नानुसार समझा झा सकता है।

जिले का चयन :– सर्वप्रथम सौदेश्य प्रतिचयन विधि द्वारा शोधार्थी द्वारा दक्षिणी राजस्थान के सिरोही जिले का चयन किया गया। सौदेश्य प्रतिचयन विधि का प्रयोग इसलिये किया गया क्योंकि इस विधि के माध्यम से दक्षिणी राजस्थान की विशिष्ट समाष्टि का प्रतिनिधि करने वाले उल्लेखित जिले का चयन संभव हो पाया। इसके विपरीत यादृच्छिक प्रतिचयन से संभव है कि दक्षिणी राजस्थान की विशिष्ट समष्टि का प्रतिनिधित्व त्रुटिपूर्ण होता है।

विद्यालय का चयन :– जिले के चयन के उपरान्त शोधार्थी द्वारा सिरोही जिले से निजी एव ं राजकीय विद्यालय चयनित किये गये। इस न्यादर्शन में दो स्तर – जनजातीय क्षेत्र एव ं गैर जनजातीय क्षेत्र होने से स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि के चयन हेतु अपनाई गई।

विद्यार्थियों का चयन :– जनजातीय एव गैर जनजातीय क्षेत्र के अंतर्गत निजी एवं राजकीय विद्यालयों में से 80-80 कुल मिलाकर जनजातीय क्षेत्र से 160 एवं गैर जनजातीय क्षेत्र से 160 कुल 320 विद्यार्थियों का चयन स्तरीय यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया। इस यादृच्छिक प्रतिचयन हेतु ''दैव निर्देश'' विधि का चुनाव किया गया। इसके अंतर्गत सभी विद्यार्थियों को एक कागज की चिठ्ठी पर क्रमांक देकर उनकी गोलियां बना ली गई। इन गोलियों को दो अलग–अलग (निजी एवं

राजकीय) में रखकर दोनों प्यालों से निर्धारित न्यादर्श के अनुरूप 160.160 विद्यार्थियों का चयन कर लिया गया।

इनके न्यादर्शन में सौदेश्य प्रतिचयन विधि का ही प्रयोग किया गया। इस प्रकार अंतिम रूप से चयनित न्यादर्श समूहों का विवरण निम्न प्रकार से हैः

न्यादर्श :

विवरण	विद्यार्थी				
	निजी विद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	बालक	बालिकाए	बालक	बालिकाएं	
जनजातीय क्षेत्र	60	60	60	60	240
गैर जनजातीय क्षेत्र	60	60	60	60	240
कुल	120	120	120	120	480

प्रस्तुत शोध में अनुसंधान विधि :–

अध्ययन एक ऐसी विधि है या मार्ग है जिस पर चलकर सत्य की खोज की जा सकती है। शोधार्थी अपनी समस्याओं की प्रकृति एवं उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए सर्वेक्षण विधि का चयन किया जायेगा। यही वह विधि है जिसके द्वारा किसी समस्या का वस्तुस्थिति, समस्याओं और विद्यालयी उपलब्धि से संबंधित दत्त एकत्रित किये जा सकते है। सर्वेक्षण विधि के द्वारा तथ्यपूर्ण सामग्री या दत्त जो अज्ञात एव अछूते होते है को प्राप्त किया जा सकता है। इस विधि द्वारा कम समय में अधिक तथ्य एकत्रित किये जा सकते है। यह एक सर्वेक्षण और वर्णनात्मक अध्ययन है। शिक्षा के बारे में

जागरूकता का स्तर, छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि, शैक्षिक समस्याएं, आय, व्यवसाय, परिवार की सामाजिक स्थिति, परिवार की शैक्षिक स्थिति आदि जनजातीय एव ं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिये।

दत्त संकलन प्रस्तुत शोध कार्य में प्राथमिक एव द्वितीयक दोनों प्रकार के दत्त अर्थात् आंकड़े एकत्रित किये जायेगें। द्वितीयक आंकड़े जहां संबंधित साहित्य का अध्ययन हेतु संग्रहित किये गये है वहीं प्राथमिक आंकड़ों का संग्रहण चयनित न्यादर्श से उपकरणों के माध्यम से किया जायेगा।

शोध उपकरण किसी भी अध्ययन में दत्त संकलन के लिये उपकरण एक प्रभावी माध्यम होता है। प्रस्तावित शोध कार्य में प्राथमिक आंकड़ों के संग्रहण हेतु स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। जिसका संक्षितप्त उल्ल ेख निम्नलिखित किया गया है :–

शैक्षिक स्थिति – प्रश्नावली
शैक्षिक समस्याए ं – प्रश्नावली

- बालकों के लिये

सर्वेक्षण विधि –

शोधकर्त्री ने समस्या का सावधानी पूर्वक अध्ययन किया और निष्कर्ष प्राप्त किया कि शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन उचित है।

सर्वेक्षण विधि एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा विभिन्न शैक्षिक समस्याओं का सर्वेक्षण का प्राप्त दत्त के आधार पर मूल्यांकन विश्लेषण एवं समाधान किया जा सकता है। सर्वेक्षण विधि प्रमुखतः चरों व विशेषताओं की वर्तमान स्थितियों का वर्णन करती है।

बर्गेस के अनुसार :– सामाजिक सर्वेक्षण किसी समुदाय की दशाओं एवं आवश्यकताओं का एक वैज्ञानिक अध्ययन है जो सामाजिक प्रकृति का रचनात्मक कार्यक्रम बनाने के उद्देश्य से क्रिया करता है।

डिस्शनरी ऑफ सोशियोलॉजी के अनुसार – ''एक समुदाय के सम्पूर्ण जीव तथा उसके किसी एक के सम्बन्ध में व्यवस्थित और पूर्ण तथ्य संकलन तथा तथ्य विश्लेषण का नाम ही सर्वेक्षण है''।

सर्वेक्षण विधि के उद्देश्य :–

1. दो चरों के मध्य पारस्परिक सम्बन्धों का पता लगाना।
2. घटनाओं तथा उनमें सम्बन्धित प्रतिक्रियाओं का पता कर किसी प्रयोग या नवीन प्रक्रियाओं के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
3. सूचनाओं को संकलित कर किसी विशिष्ट कारक के अस्तित्व का पता लगाना।
4. समस्या से सम्बन्धित प्रश्नों का सर्वांगीण उतर प्राप्त कर वर्तमान स्थिति का पता लगाना।

उपर्युक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया।

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि के चयन के कारण –

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि के चयन के निम्न कारण है –

1. यह विधि वर्तमान स्थिति का स्पष्टीकरण तथा भावी नियोजन तथा परिवर्तन में सहायक है। अतः प्रस्तुत शोध में शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्यावओं से सम्बन्धी स्पष्टीकरण व भावी नियोजन के उद्देश्य से सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।
2. इस विधि द्वारा मानव के विभिन्न पक्षों की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। अतः प्रस्तुत अध्ययन में जनजातिय क्षेत्र के लिये शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं से सम्बनधी पक्षों की जानकारी के लिए यह विधि चयन की गई है।
3. भावी अनुसंधान के प्राथमिक अध्ययन में सहायक होती है।
4. इस विधि का सम्बन्ध किसी व्यक्ति विशेष से न होकर सम्पूर्ण जनसंख्या अथवा इसके न्यायदर्श से होता है।
5. यह विधि मनोवैज्ञानिक विशेषताओं का परिचय प्राप्त करने में तथा शैक्षिक नियोजन में सहायता प्रदान करती है।
6. इस विधि के द्वारा एक समय में अधिकांश मनुष्य से सम्बन्धित आंकड़े प्राप्त किये जाते है।
7. यह उचित उपकरण के चुनाव में सहायक होती है।
8. यह वर्तमान नीतियों का निर्धारण करती है तथा वर्तमान समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती है। इसलिए प्रस्तुत शोध में शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं के समाधान के लिए इस विधि का चयन किया गया।
9. यह स्थानीय समस्याओं के बारे में उपर्युक्त सूचनाएं प्रदान करती है।
10. इसके द्वारा गुणात्मक तथ्यों का अध्ययन एवं एकत्रीकरण किया जाता है।

उपयुक्त कारणों से प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

सर्वेक्षण विधि के सोपान

1. उद्देश्यों का निर्धारण
2. उपकरणों एवं प्रविधियों का चयन
3. उपकरणों का परीक्षण
4. दत्त संकलन एवं विश्लेषण
5. सर्वेक्षण कार्य एवं तिथियों का निर्धारण
6. न्यादर्श का चयन

सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए प्रयुक्त सांख्यिकी –

प्रस्तुत शोध में दत्त विश्लेषण के लिए निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है। प्रयुक्त शोध में निम्न सांख्यिकी का उपयोग किया गया है।

मध्यमान – मध्यमान को माध्य भी कहा जाता है, माध्य का अर्थ है कि किसी एक समूह के प्राप्त अंकों को जोड़कर समूह की संख्या में विभाजित करना। इस प्रकार जो राशी प्राप्त होती है उसे माध्य अथवा मध्यमान कहा जाता है।

मध्यमान का सूत्र –$M = \frac{\Sigma fx}{N}$

जहाँ–M मध्यमान

f- आवृतियाँ

Σ जोड़

x- वर्गान्तर के मध्य बिन्दु

N- न्यादर्श की संख्या

प्रमाणिक विचलन –इसके जन्मदाता कार्ल पीयरसन है। विक्षेपन के मापन तथा व्याख्या के लिए मानक विचलन एक अत्यन्त महत्वपूर्ण उपयोगी विधि है। इसे मध्यमान वर्ग त्रुटि भी कहा जाता है। इसका सूत्र निम्नलिखित है –

प्रमाणिक विचलन का सूत्र – $\sigma = \sqrt{\frac{\Sigma f d^2}{N}}$

जहाँ σ= मानक विचलन

f - आवृतियाँ

Σ कुल योग

N - न्यादर्श की संख्या

d^2 = विचलनों का वर्ग

टी–परीक्षण – इसका प्रयोग ऐसी परिस्थितियों में किया जाता है, जहाँ पर दो स्वतन्त्र समूह भिन्न न्यादर्शों से लिए जाएँ तथा उनके मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जाँच करनी हो। प्रस्तुत शोध में टी–परीक्षण का प्रयोग इसी प्रकार की शून्य परिकल्पनाओं की जाचें हेतु किया जा सकता है

टी परीक्षण का सूत्र – $t = \frac{m_1 - m_2}{\sqrt{Sd1^2 + Sd2^2}} \sqrt{n_1 + n_2}$

जहाँ t- टी मूल्य

m_1 - प्रथम न्यादर्श समूह का मध्यमान

m_2 - द्वितीय न्यादर्श समूह का मध्यमान

sd_1 - प्रथम न्यादर्श समूह का मानक विचलन

sd_2 द्वितीय न्यादर्श समूह का मानक विचलन

n_1- प्रथम न्यादर्श समूह के सदस्यों की संख्या

n_2 - द्वितीय न्यादर्श समूह के सदस्यों की संख्या

उपसंहार

प्रस्तुत परिच्छेद में सिरोही जिले के जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियो की शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन का पता लगाने हेतु विधि के रूप में प्रयुक्त ''सर्वेक्षण विधि'' तथा सांख्यिकीय प्रविधि के रूप में मध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण आदि का चयन किया गया है साथ ही साथ उपकरण के रुप में स्वनिर्मित उपकरणों का चयन किया है। प्रश्नावली निर्माण के विभिन्न सोपानों का विवरण दिया गया है। साथ ही न्यादर्श, इनके चयन तथा प्रयुक्त विधियों को भी रेखांकित किया गया है जो शोध अध्ययन को अपने लक्ष्य तक पहुँचाने में सहायक है। आगामी परिच्छेद में दत्तं का संकलन, सारणीय, विश्लेषण एवं व्याख्या का विवरण दिया जायेगा।

अध्याय-चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण

चतुर्थ अध्याय

प्रदत्तों का विश्लेषण

परिचय

हमारे देश में वर्तमान में शिक्षा प्रणाली का स्वरूप कोरे किताबी ज्ञान पर आधारित हैं. अंग्रेजों के शासन काल में जो शिक्षा प्रणाली प्रचलित हुई थी, आज भी लगभग वही हैं. हमारा शिक्षा का स्तर एकदम गिरा हुआ, श्रम साध्य एवं व्यय साध्य हैं.

पाठ्यक्रम में विषय वस्तु में कोई समन्वय नहीं हैं.व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं स्वरोजगारोंमुख का अभाव होने से विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने पर भी बेकारी बेरोजगारी के शिकार बन रहे हैं. सात ही उनमें शारीरिक श्रम से दूर रहने की और पाश्चात्यानु करण की बुरी प्रवृत्ति पनप रही हैं. शिक्षा का स्वरूप बहुस्तरीय होने पर भी आज के विद्यार्थियों को उसका पूरा लाभ नहीं मिल रहा हैं और वे परमुखापेक्षी बन रहे हैं. यह स्थिति अतीव चिंतनीय हैं.

समय समय पर शिक्षा स्तर में सुधारात्मक उपाय करने से विद्यार्थियों को यह लाभ मिलेगा कि उनमें स्वावलम्बन की भावना पनपेगी, वे अपना सम्यक चारित्रिक बौद्धिक विकास कर सकेंगे और सामाजिक दायित्व का उचित निर्वाह कर सकेंगे.

शिक्षा सुधार से बेरोजगारी बेकारी नहीं रहेगी. युवा शक्ति का हित देश हित में समुचित उपयोग होगा तथा राष्ट्र के चहुमुखी विकास को उचित गति मिल सकेगी. इस तरह शिक्षा स्तर में सुधार लाने से विद्यार्थियों को अनेक लाभ मिल सकेंगे और वे अच्छे नागरिकों की भूमिका निभा सकेंगे.

विधार्थियों की शैक्षिक स्थिति से सम्बंधित प्रश्नावली द्वारा एकत्रित आंकड़ों का विशेषण निन्न प्रकार है:-

<u>छात्रों हेतु</u>

4.1 कक्षा में संसाधनों का अभाव है।

तालिका :1 संसाधनों का अभाव

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	44	76	91	29	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	32	88	82	38	240
कुल	76	164	173	67	480

कुल 240 छात्रों में से 76 छात्रों ने यह कहा कि निजीविद्यालय में कक्षा में संसाधनों का अभाव है जबकि 164 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति दर्शायी। वहीं राजकीय विद्यालय के 173 छात्रों ने उनकी कक्षा में संसाधनों का अभाव से सहमति दिखाते हुए अपना जवाब दिया जबकि केवल 67 छात्र ने कहा कि अपनी कक्षा में संसाधनो का अभाव नहीं है। अतः यह यह स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालय कि कक्षाओं में निजी विद्यालय की तुलना में कक्षा में संसाधनों का अभाव है।

आरेख :1 संसाधनों का अभाव

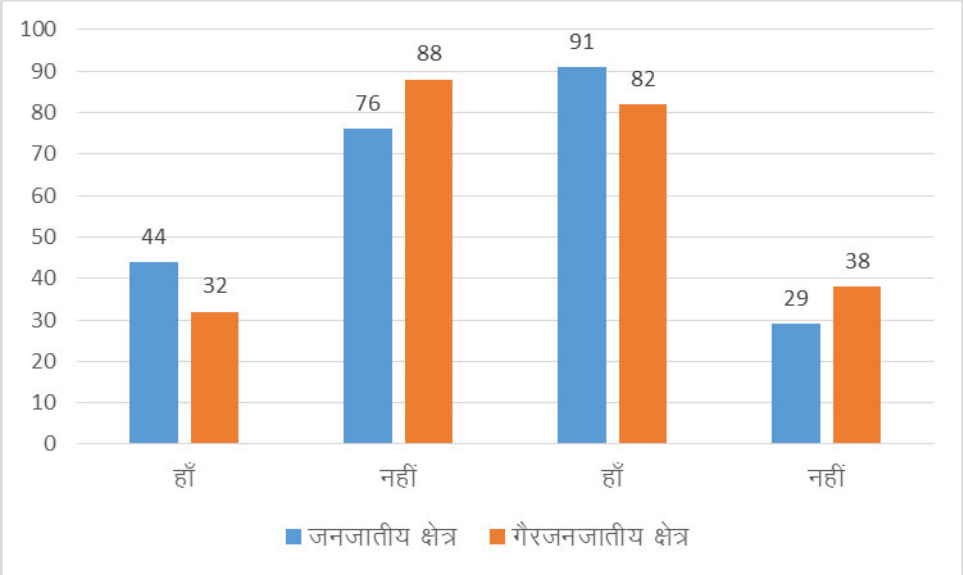

4.2 गतिविधि आपको कक्षा उपरान्त ही कराई जाती है।

तालिका :2 गतिविधि

विवरण	विद्यार्थी				
	निजी विद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	32	88	78	42	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	54	66	81	39	240
कुल	86	154	159	81	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या आपको शैक्षिक गतिविधि कक्षा उपरान्त ही करायी जाती है तो निजीविद्यालय के कुल 240 छात्रों में से 86 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए सहमति जतायी की उनकी शैक्षिक

गतिविधियां कक्षा उपरान्त करायी जाती है जबकि 154 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति दर्शायी। अतः नीजी विद्यालय में कक्षाउपरान्त गतिविधियां नहीं करायी जाती है।

वहीं राजकीय विद्यालय के 159 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए सहमति जतायी की उनकी शैक्षिक गतिविधियां कक्षा उपरान्त करायी जाती है जबकि केवल 81 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति दर्शायी। अतः राजकीय विद्यालय में कक्षाउपरान्त गतिविधियां हीं करायी जाती है।

आरेख रू2 गतिविधि

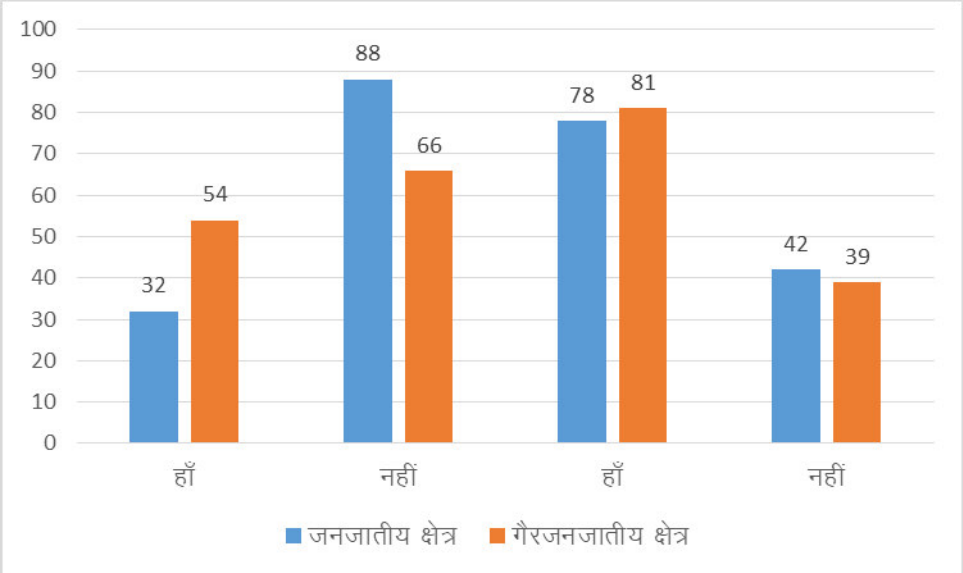

4.3 अध्यापक द्वारा दी गई गतिविधियों को आप रूचिपूर्ण समझते है।

तालिका :3 रूचिपूर्ण

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	21	99	44	76	240
गैर जनजातीय क्षेत्र	34	86	54	66	240
कुल	55	185	98	142	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या अध्यापक द्वारा दी गई गतिविधियों को आप रूचिपूर्ण समझते है, तो निजीविद्यालय के कुल 240 छात्रों में से केवल 55 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए कहा कि शैक्षिक गतिविधियों को वह रूचिपूर्ण समझते है जबकि 185 छात्रों ने जवाब नहीं में देते हुए अपनी अरूचि दर्शायी। अतः नीजी विद्यालय में कक्षा में शैक्षिक गतिविधियों को छात्र रूचिपूर्वक नहीं समझते है।

वहीं राजकीय विद्यालय के भी केवल 98 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए सहमति जतायी की उनकी शैक्षिक गतिविधियों को रूचिपूर्वक वह समझते है जबकि केवल 142 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति दर्शायी। अतः राजकीय विद्यालय कक्षा में भी शैक्षिक गतिविधियों को छात्र रूचिपूर्वक नहीं समझते है।

इससे स्पष्ट होता है कि छात्र कक्षाउपरान्त गतिविधियों को रूचिपूर्वक नहीं समझते है।

आरेख :3 रूचिपूर्ण

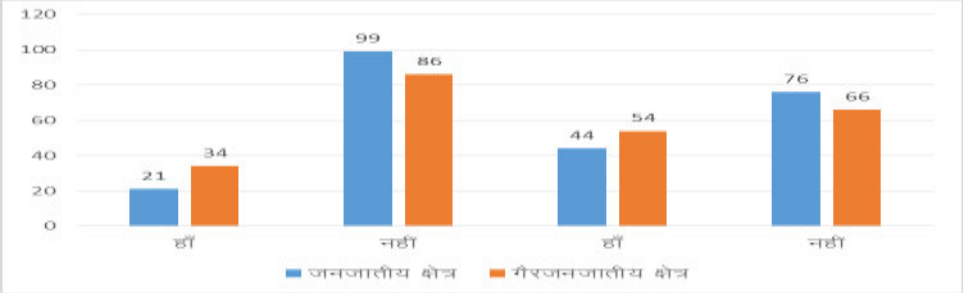

4.4 विद्यालय द्वारा समय–समय पर संबंधित कार्यशाला, सेमीनार का आयोजन होताहै।

तालिका :4 कार्यशाला, सेमीनार का आयोजन

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	48	72	28	92	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	78	42	36	84	240
कुल	126	114	64	176	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या विद्यालय द्वारा समय–समय पर संबंधित कार्यशाला, सेमीनार का आयोजन होता है, तो निजीविद्यालय के कुल 240 छात्रों में से 126 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए कहा कि उनके विद्यालय में समय समय पर कार्यशाला, सेमिनार का आयोजन किया

जाता है, जबकि 114 छात्रों ने जवाब नहीं में देते हुए उनके विद्यालय द्वारा समय–समय पर संबंधित कार्यशाला, सेमीनार का आयोजन नहीं होना बताया है।

वहीं राजकीय विद्यालय के भी केवल 64 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए सहमति जतायी की उनके विद्यालय में समय–समय पर संबंधित कार्यशाला व सेमीनार का आयोजन होता जबकि केवल 176 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति बतायी। अतः राजकीय विद्यालय कक्षा में समय–समय पर संबंधित कार्यशाला, सेमीनार का आयोजन नहीं होता है।

इससे स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालय में समय–समय पर संबंधित कार्यशाला, सेमीनार का आयोजन राजकीय विद्याालय के तुलना में अधिक होता है।

आरेख : 4 कार्यशाला, सेमीनार का आयोजन

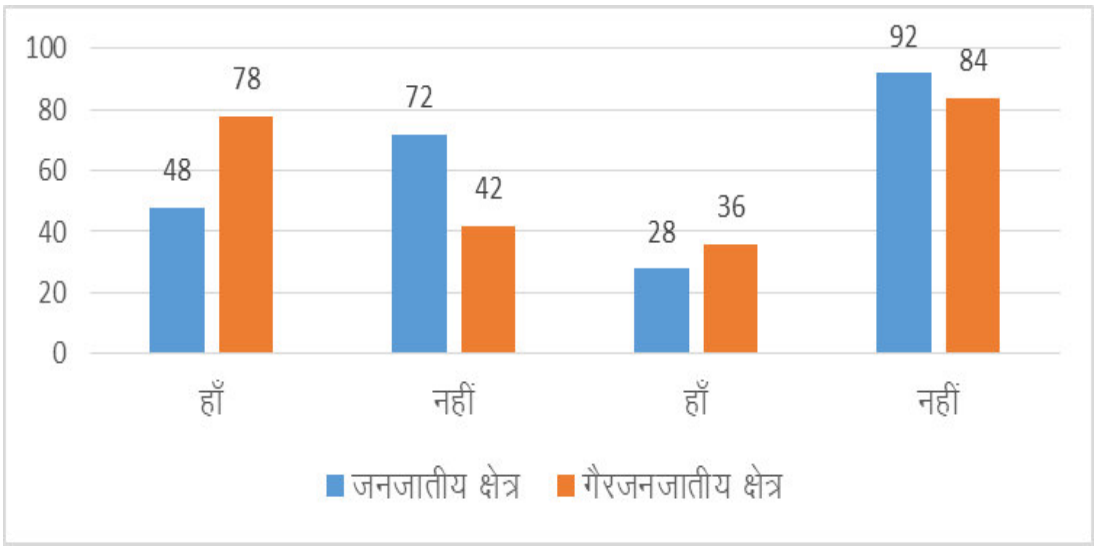

4.5 विद्यालय द्वारा आपको संबंधित कार्यक्रमों में हिस्सा लेने हेतु प्रेरित किया जाता है।

तालिका :5 कार्यक्रमों में हिस्सा लेने हेतु प्रेरित

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	58	62	30	90	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	69	51	42	78	240
कुल	127	113	72	168	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या आपको विद्यालय द्वारा आपको संबंधित कार्यक्रमों में हिस्सा लेने हेतु प्रेरित किया जाता है, तो निजीविद्यालय के कुल 240 छात्रों में से 127 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए कहा कि उनके विद्यालय के द्वारा संबंधित कार्यक्रमों में हिस्सा लेने हेतु उन्हे प्रेरित किया जाता है, जबकि केवल 113 छात्रों ने जवाब नहीं में देते हुए बताया है उन्हे प्ररित नहीं किया जाता है।

वहीं राजकीय विद्यालय के भी केवल 72 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए सहमति जतायी की उनके विद्यालय विद्यालय द्वारा संबंधित कार्यक्रमों में हिस्सा लेने हेतु प्रेरित किया जाता है जबकि 168 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति बतायी। अतः राजकीय विद्यालय कक्षा में विद्यालय के द्वारा शिक्षण संबंधित कार्यक्रमों में हिस्सा लेने हेतु प्रेरित नहीं किया जाता है।

इससे स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालय में छात्रों को शिक्षण संबंधित कार्यक्रमों में हिस्सा लेने हेतु राजकीय विद्यालय की तुलना में अधिक प्रेरित किया जाता है।

आरेख :5 कार्यक्रमों में हिस्सा लेने हेतु प्रेरित

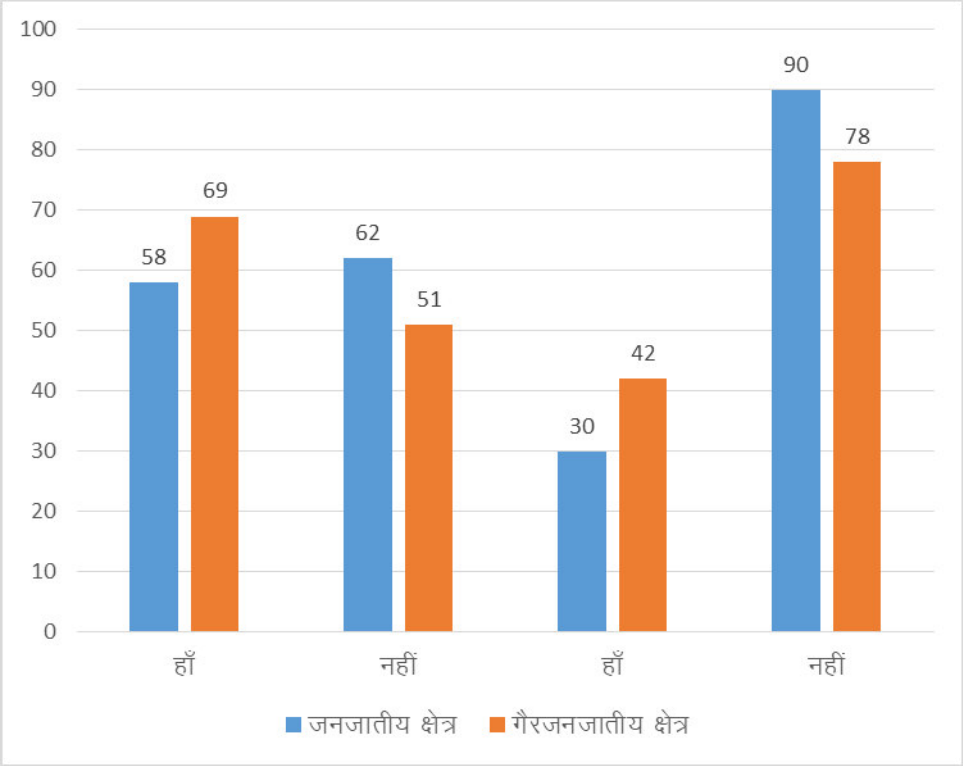

4.6 शिक्षण साम्रगी के प्रति आपको कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

तालिका :6 कठिनाई का सामना

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	58	62	78	42	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	38	82	68	52	240
कुल	96	144	146	94	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या आपको शिक्षण साम्रगी के प्रति कठिनाई का सामना करना पड़ता है, तो निजीविद्यालय के कुल 96 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में दिया, जबकि 144 छात्रों ने जवाब नहीं में देते हुए बताया है उन्हे शिक्षण साम्रगी के प्रति कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता है।

वहीं राजकीय विद्यालय के 146 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए सहमति जतायी की उनके विद्यालय शिक्षण साम्रगी के प्रति आपको कठिनाई का सामना करना पड़ता है जबकि केवल 94 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति बतायी। अतः राजकीय विद्यालय कक्षा में विद्यालय के छात्रों को शिक्षण साम्रगी के प्रति कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

इससे स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालय में छात्रों को शिक्षण साम्रगी के प्रति कठिनाई का सामना राजकीय विद्यालय की तुलना में कम करना पड़ता है।

आरेख :6 कठिनाई का सामना

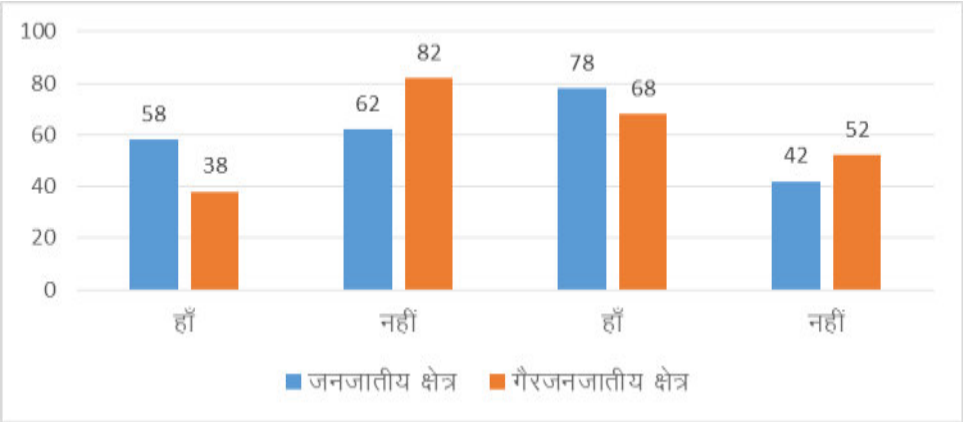

4.7 अध्यापकों द्वारा कक्षा में दिये गये व्याख्यान आपको समझ पाते है।

तालिका :7 व्याख्यान

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	56	64	47	73	**240**
गैरजनजातीय क्षेत्र	74	46	67	53	**240**
कुल	130	110	114	126	**480**

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या आप अध्यापकों द्वारा कक्षा में दिये गये व्याख्यान समझ पाते है, तो निजीविद्यालय के कुल 130 छात्रों ने

अपना जवाब हाँ में दिया और बताया कि वह अध्यापकों के द्वारा कक्षा में दिये गये व्याख्यान को समझा पाते है, जबकि 110 छात्रों ने जवाब नहीं में देते हुए बताया है उन्हे अध्यापकों द्वारा कक्षा में दिये गये व्याख्यान को वह नहीं समझ पाते है।

वहीं राजकीय विद्यालय के 114 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए सहमति जतायी की वह

अध्यापकों द्वारा कक्षा में दिये गये व्याख्यान आपको समझ पाते है जबकि 126 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति बतायी।

इससे स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालय में छात्र राजकीय विद्यालय के छात्रों की तुलना में अध्यापकों द्वारा कक्षा में दिये गये व्याख्यान को कम समझ पाते है।

आरेख :7 व्याख्यान

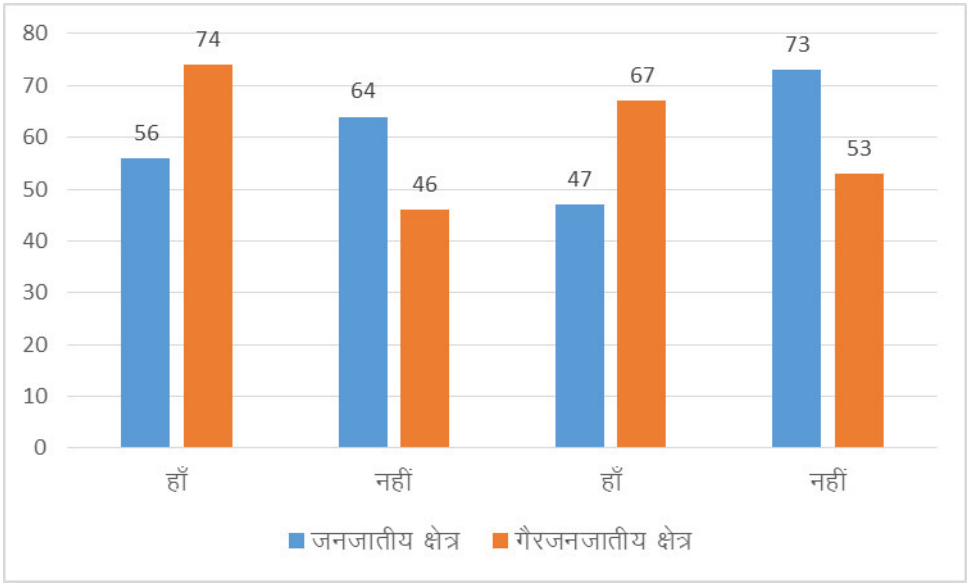

4.8 अध्यापकों द्वारा कक्षा में कराये गये संबंधित समस्याओं पर चर्चा की जाती है।

तालिका :8 समस्याओं पर चर्चा

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	68	52	29	91	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	90	30	40	80	240
कुल	158	82	69	171	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या अध्यापकों द्वारा कक्षा में शिक्षण संबंधित समस्याओं पर चर्चा की जाती है तो निजीविद्यालय के 158 छात्रों ने कहा कि उनके कक्षा में अध्यापकों के द्वारा संबंधित समस्याओं पर चर्चा कि जाती है जबकि 82 छात्रों ने अपनी असहमति जतायी। वहीं राजकीय विद्यालयों 240 छात्रों में से कुल 171 छात्रों ने असहमति बताते हुए कहा की अध्यापकों के द्वारा कक्षा में समस्याओं पर संबंधित चर्चा नहीं कि जाती है।

उक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालय में छात्रों से अध्यापकों द्वारा संबंधित समस्या पर चर्चा की जाती है जबकि राजकीय विद्यालय में कम की जाती है।

आरेख 8 : समस्याओं पर चर्चा

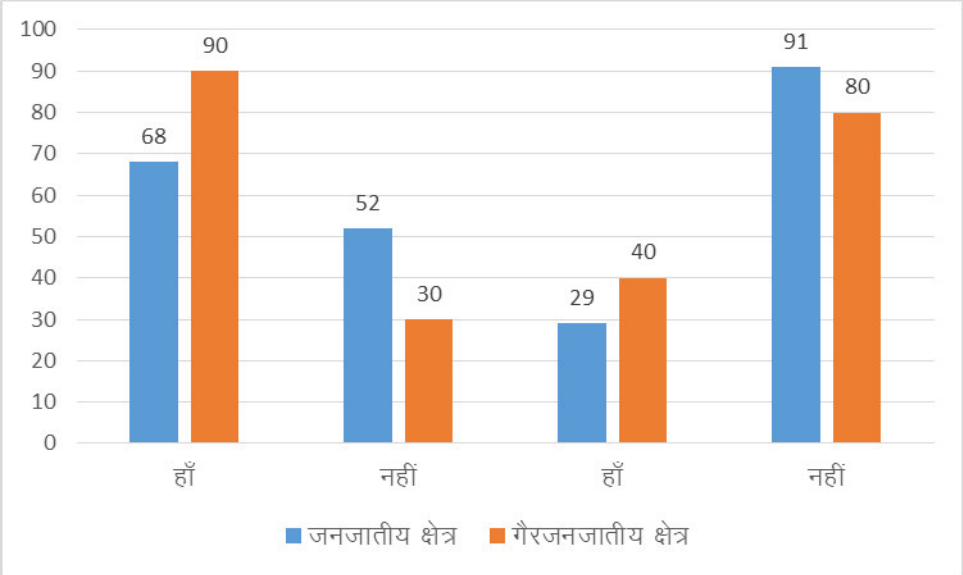

4.9 अध्यापको द्वारा प्रश्न/उत्तर का आदान–प्रदान करते समय आपको नये विचारों का ज्ञान प्राप्त होता है।

तालिका 9: नये विचारों का ज्ञान

विवरण	विद्यार्थी				
	निजी विद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	48	72	40	80	**240**
गैरजनजातीय क्षेत्र	66	54	84	36	**240**
कुल	114	126	124	116	**480**

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या अध्यापको द्वारा प्रश्न/उत्तर का आदान–प्रदान करते समय आपको नये विचारों का ज्ञान प्राप्त होता है, तो

निजी विद्यालय के 114 छात्र ने सहमति दिखायी जबकि 126 छात्रों ने अपनी असहमति बतायी। वहीं राजकीय विद्यालय के 124 छात्रों ने इस कथन का सहमत किया व बाकि के 116 छात्रों ने इन्कार किया। अतः यह स्पष्ट है कि राजकीय विद्यालय के छात्रों के विचारों में ज्ञान अर्जन अध्यापको के द्वारा प्रश्न–उत्तर करते समय अधिक होता है जबकि निजी विद्यालयों में इसकी तुलना में कम होता है।

आरेख :9 नये विचारों का ज्ञान

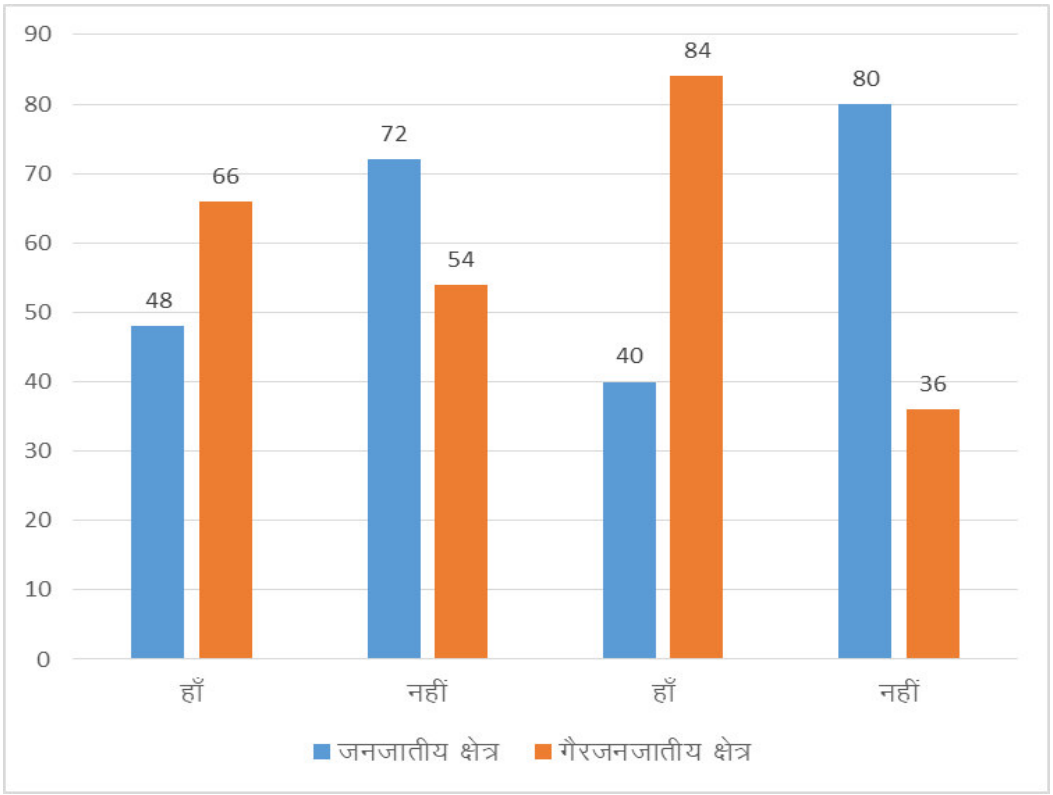

4.10 कक्षाओं में नवीन विधियों का प्रयोग किया जाता है?

तालिका :10 नवीन विधियों का प्रयोग

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	47	73	36	84	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	57	63	45	75	240
कुल	104	136	81	159	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या कक्षाओं में नवीन विधियों का प्रयोग किया जाता है, तो निजी विद्यालय के 240 छात्रों में से 136 छात्रों ने असहमति दिखायी की नवीन विधियों का प्रयोग नहीं किया जाता, वहीं राजकीय विद्यालय के भी 240 छात्रों में से 159 छात्रों ने भी अपनी असहमति बतायी।

अतः यह स्पष्ट है कि राजकीय व निजी विद्यालय के छात्रों में नवीन विधियों का प्रयोग नहीं होता है व अध्यापक वही पुरानी विधियों से शिक्षण प्रक्रिया का निर्वहन करते है।

आरेख :10 नवीन विधियों का प्रयोग

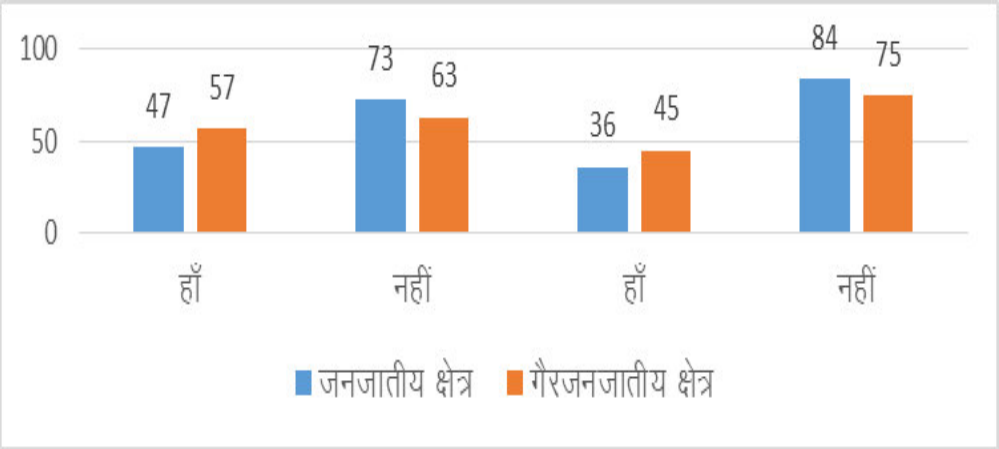

4.11 कक्षाओं का संचालन निरन्तर चलता रहता है।

तलिका :11 कक्षाओं का संचालन

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	102	18	85	35	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	79	41	90	30	240
कुल	181	59	175	65	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या कक्षाओं का संचालन निरन्तर चलता रहता है, तो निजी विद्यालय के 240 छात्रों में से 181 छात्रों ने सहमति दिखायी की उनकी कक्षा का संचालन निरन्तर चलता है व केवल 59

छात्रों ने नियमित संचालन न होने कि बात कही। वहीं राजकीय विद्यालय के भी 240 छात्रों में से 175 छात्रों ने भी अपनी सहमति बतायी।

अतः यह स्पष्ट है कि राजकीय व निजी विद्यालय के छात्रों में कक्षाओं का संचालन निरन्तर नियमित रूप से चलता रहता है।

आरेख :11 कक्षाओं का संचालन

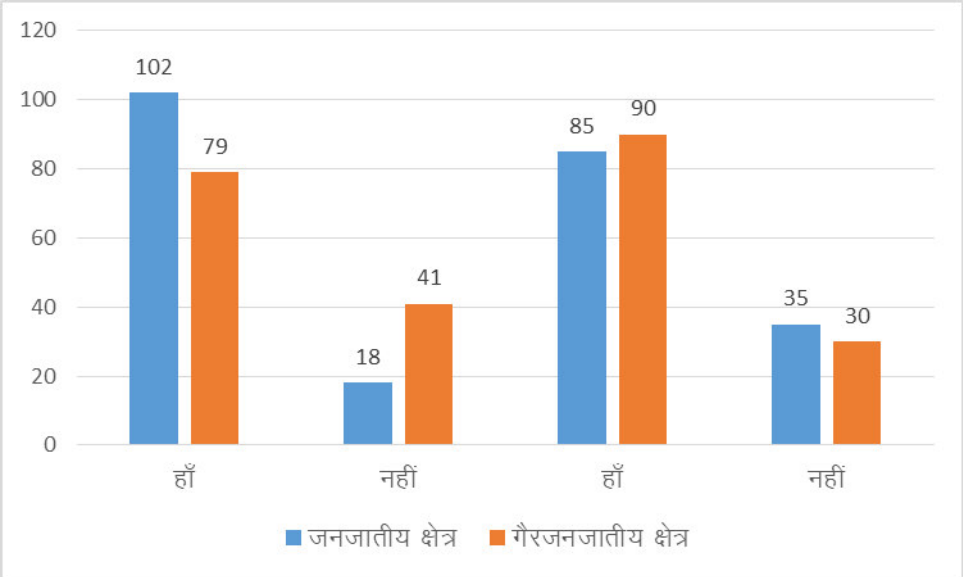

4.12 विद्यालय में छात्रावासों की पूर्ण सुविधा है।

तालिका :12 छात्रावासों की पूर्ण सुविधा

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	**26**	**94**	**85**	**35**	**240**
गैरजनजातीय क्षेत्र	**38**	**82**	**90**	**30**	**240**
कुल	64	176	175	65	**480**

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या आपके विद्यालय में छात्रावासों की पूर्ण सुविधा है, तो निजी विद्यालय के 240 छात्रों में से 64 छात्रों ने सहमति दिखायी की उनके विद्यालय में छात्रावास की पूर्ण सुविधा है व 176 छात्रों ने पूर्ण सुविधा न होने कि बात कही। वहीं राजकीय विद्यालय के भी 240 छात्रों में से 175 छात्रों ने भी अपनी सहमति बतायी की उनके विद्यालय के छात्रावास की पूर्ण सुविधा है जबकि केवल 65 छात्रों ने असहमति बतायी।

इससे यह स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालय में छात्रावास की पूर्ण सुविधा नही है जबकि राजकीय विद्यालय में छात्रावास की पूर्ण सुविधा है।

आरेख :12 छात्रावासों की पूर्ण सुविधा

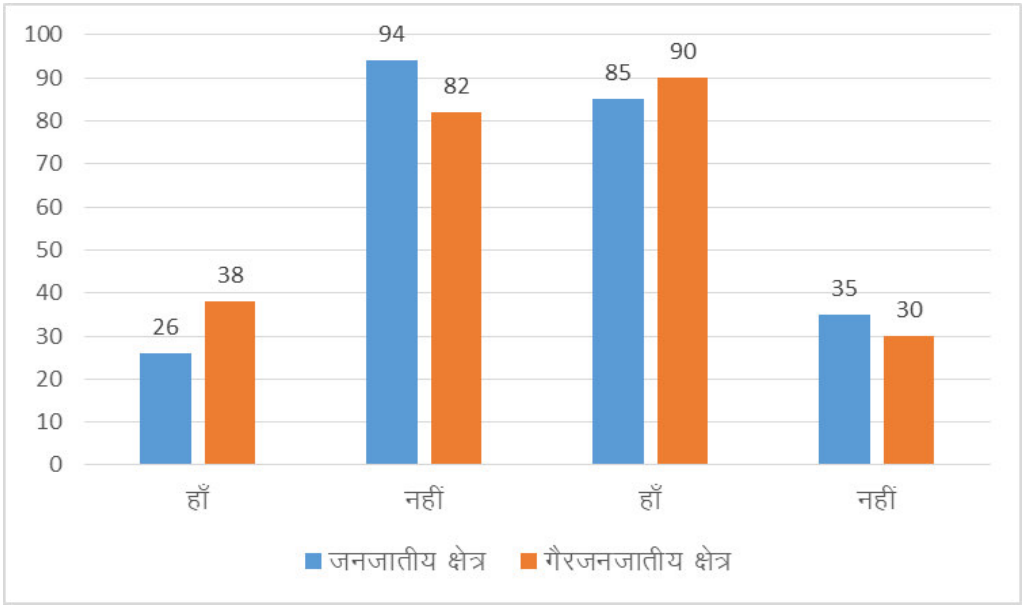

4.13 लाईब्रेरी में पत्र–पत्रिकाओं का अभाव है।

तालिका :13 पत्र–पत्रिकाओं का अभाव

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	74	46	77	43	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	40	80	65	55	240
कुल	114	126	142	98	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या आपके विद्यालय में लाईब्रेरी में पत्र–पत्रिकाओं का अभाव है, तो निजी विद्यालय के 240 छात्रों में से 114 छात्रों ने सहमति दिखायी की उनके विद्यालय में लाईब्रेरी में पत्र–पत्रिकाओं का अभाव है व 126 छात्रों ने अभाव नहीं होने की बात कही। वहीं राजकीय विद्यालय के भी 240 छात्रों में से 142 छात्रों ने अपनी सहमति बतायी की उनके विद्यालय के लाईब्रेरी में पत्र–पत्रिकाओं का अभाव होने की बात कही जबकि केवल 98 छात्रों ने असहमति बतायी।

इससे यह स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालय में लाईब्रेरी में पत्र–पत्रिकाओं का अभाव है जबकि निजी विद्यालय में उस तुलना में कम अभाव है।

आरेख :13 पत्र–पत्रिकाओं का अभाव

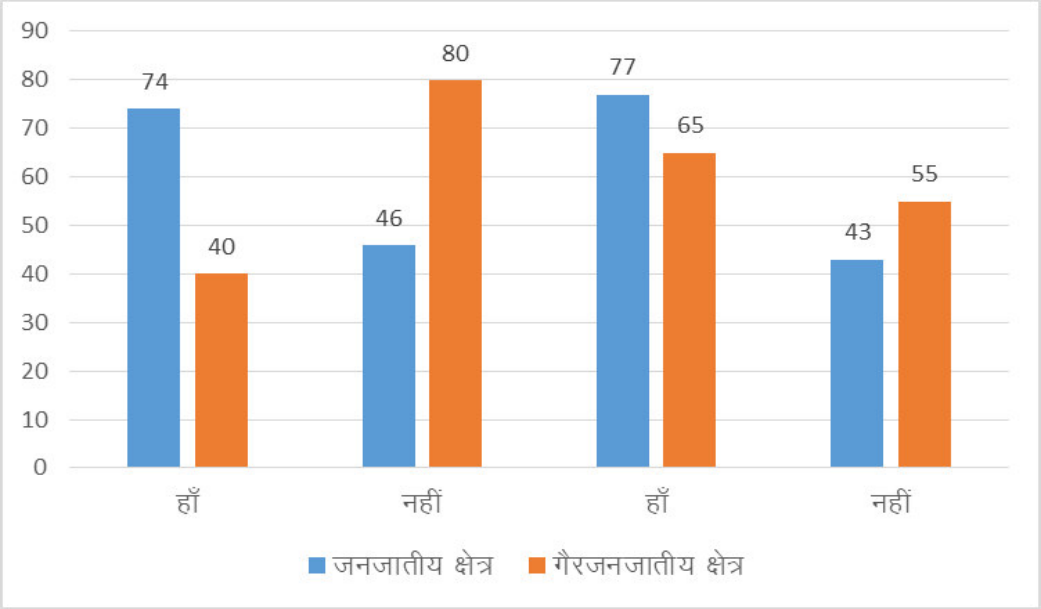

4.14 आपको घर पर अध्ययन के अलावा अन्य कार्य करना पड़ता है।

तालिका :14 अध्ययन के अलावा अन्य कार्य

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	42	78	37	83	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	26	94	41	79	240
कुल	68	172	78	162	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या आपको घर पर अध्ययन के अलावा अन्य कार्य करना पड़ता है, तो निजी विद्यालय के 240 छात्रों में से 68

छात्रों ने सहमति दिखायी की उनके अन्य काम भी करना पडता है व 176 छात्रों ने कहा की वह कोई अन्य काम नहीं करते है। वहीं राजकीय विद्यालय के भी 240 छात्रों में से 78 छात्रों ने अपनी सहमति बतायी उन्हें पर अध्ययन के अलावा अन्य कार्य करना पड़ता है जबकि केवल 162 छात्रों ने असहमति बतायी।

इससे यह स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालय व निजी विद्यालय के अत्यधिक छात्र अध्ययन के अलावा अन्य कार्य नहीं करते है।

आरेख :14 अध्ययन के अलावा अन्य काय

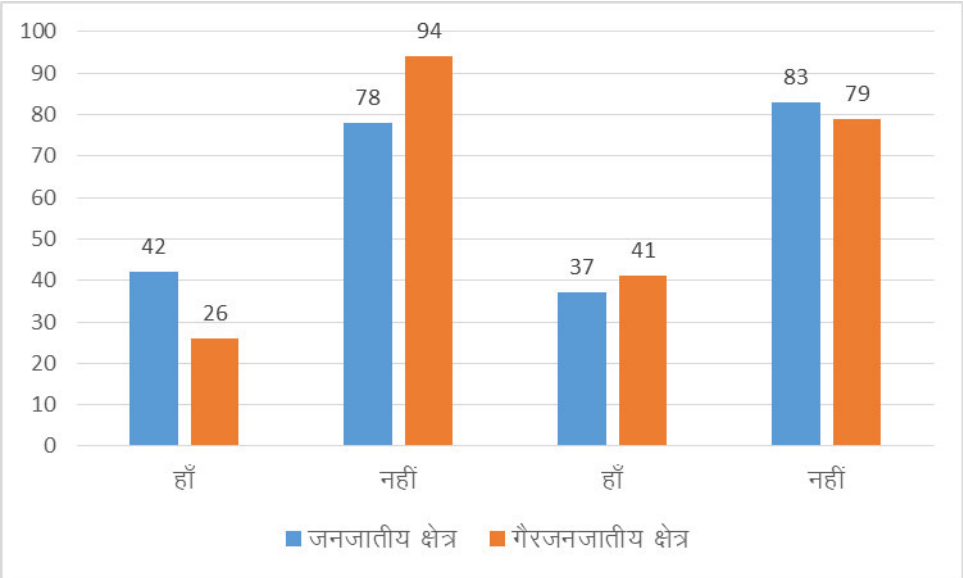

4.15 आपके पास आय का कोई स्त्रोत है।

तालिका :15 आय का स्त्रोत

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	18	102	28	92	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	26	94	22	98	240
कुल	44	196	50	190	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या आपके पास आय का कोई स्त्रोत है, तो निजी विद्यालय के 240 छात्रों में से 44 छात्रों ने सहमति दिखायी की उनके पास आय का स्त्रोत है व 196 छात्रों ने कहा की उनके पास कोई आय का स्त्रोंत नहीं है। वहीं राजकीय विद्यालय के भी 240 छात्रों में से 50 छात्रों ने अपनी सहमति बतायी की उनके पास आय का स्त्रोत है जबकि केवल 190 छात्रों ने असहमति बतायी।

इससे यह स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालय व निजी विद्यालय के छात्रों के पास आय का कोई स्त्रोंत नहीं है।

आरेख :15 आय का स्त्रोत

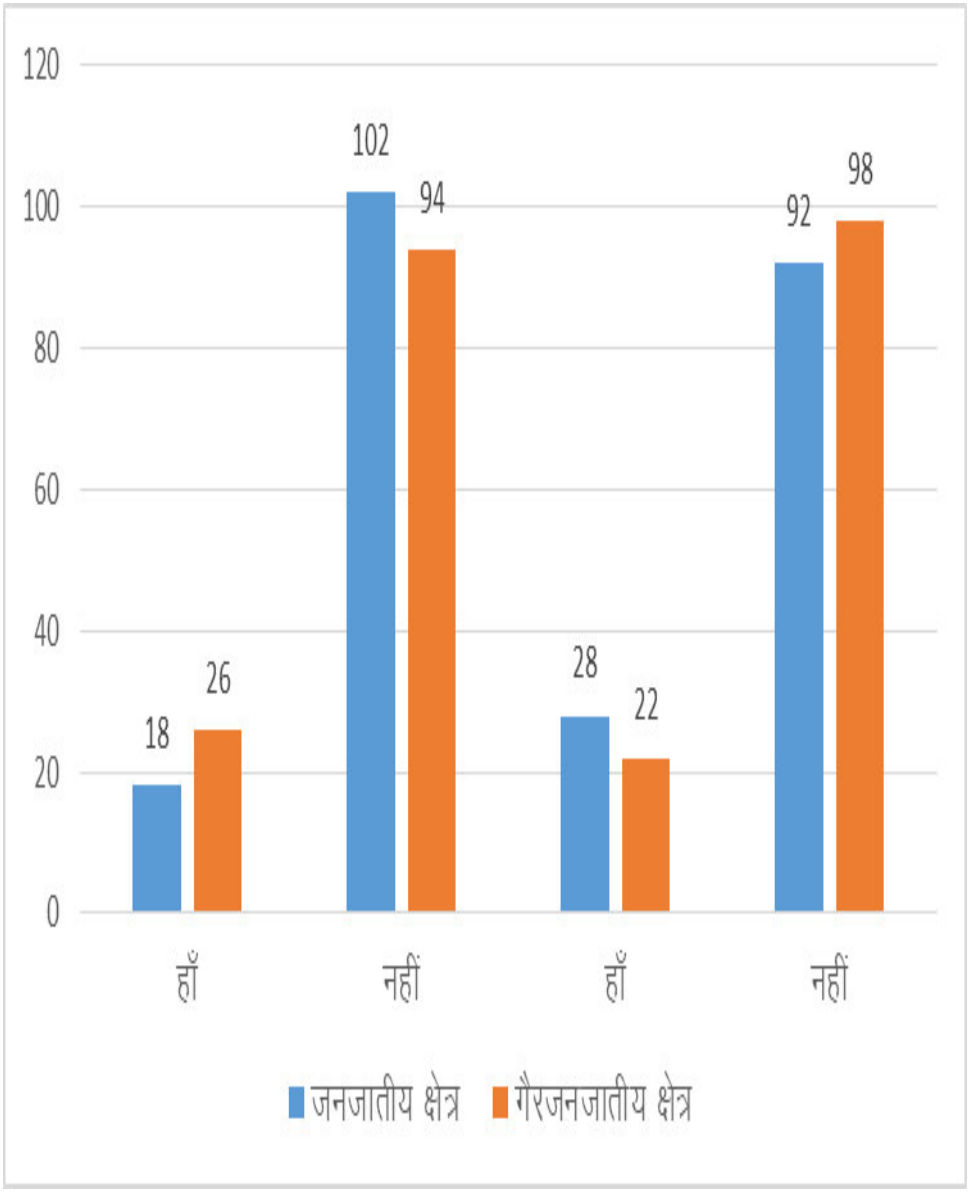

परिकल्पना परीक्षण

H1 जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका :16 जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति में अंतर

t-Test: Paired Two Sample for Means		
	Variable 1	*Variable 2*
Mean	36	44
Variance	266.5	469.5
Observations	5	5
Pearson Correlation	0.924446	
Hypothesized Mean Difference	0	
df	4	
t Stat	-1.97546	
P(T<=t) one-tail	0.05971	
t Critical one-tail	2.131847	
P(T<=t) two-tail	0.119421	
t Critical two-tail	2.776445	

जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-1.97546) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति में अंतर है।

आरेख : 16 **t-Test: Paired Two Sample for Means**

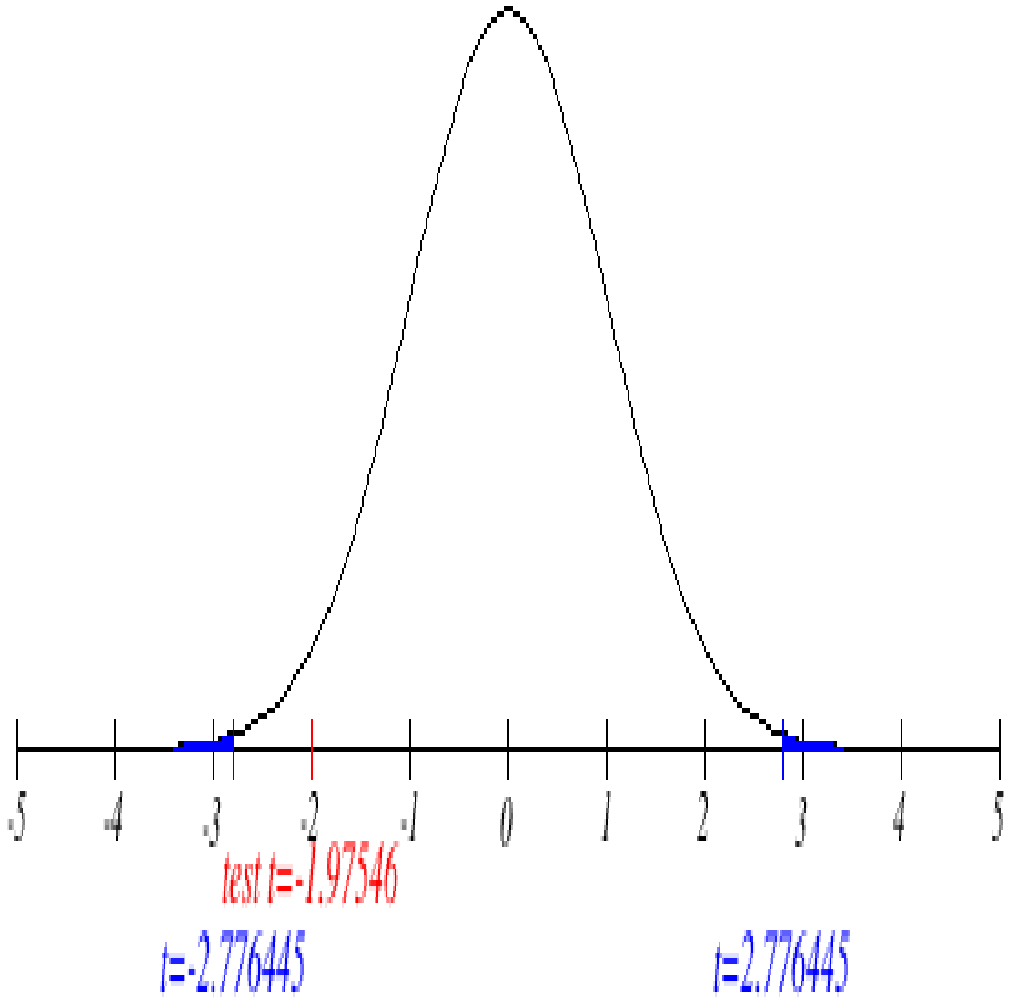

H2 जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका :17 जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति अंतर

t-Test: Paired Two Sample for Means		
	Variable 1	*Variable 2*
Mean	47.6	48.4
Variance	596.3	767.3
Observations	5	5
Pearson Correlation	0.980459	
Hypothesized Mean Difference	0	
df	4	
t Stat	-0.29329	
P(T<=t) one-tail	0.391942	
t Critical one-tail	2.131847	
P(T<=t) two-tail	0.783884	
t Critical two-tail	2.776445	

जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-0.29329) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में अंतर है।

आरेख :17 **t-Test: Paired Two Sample for Means**

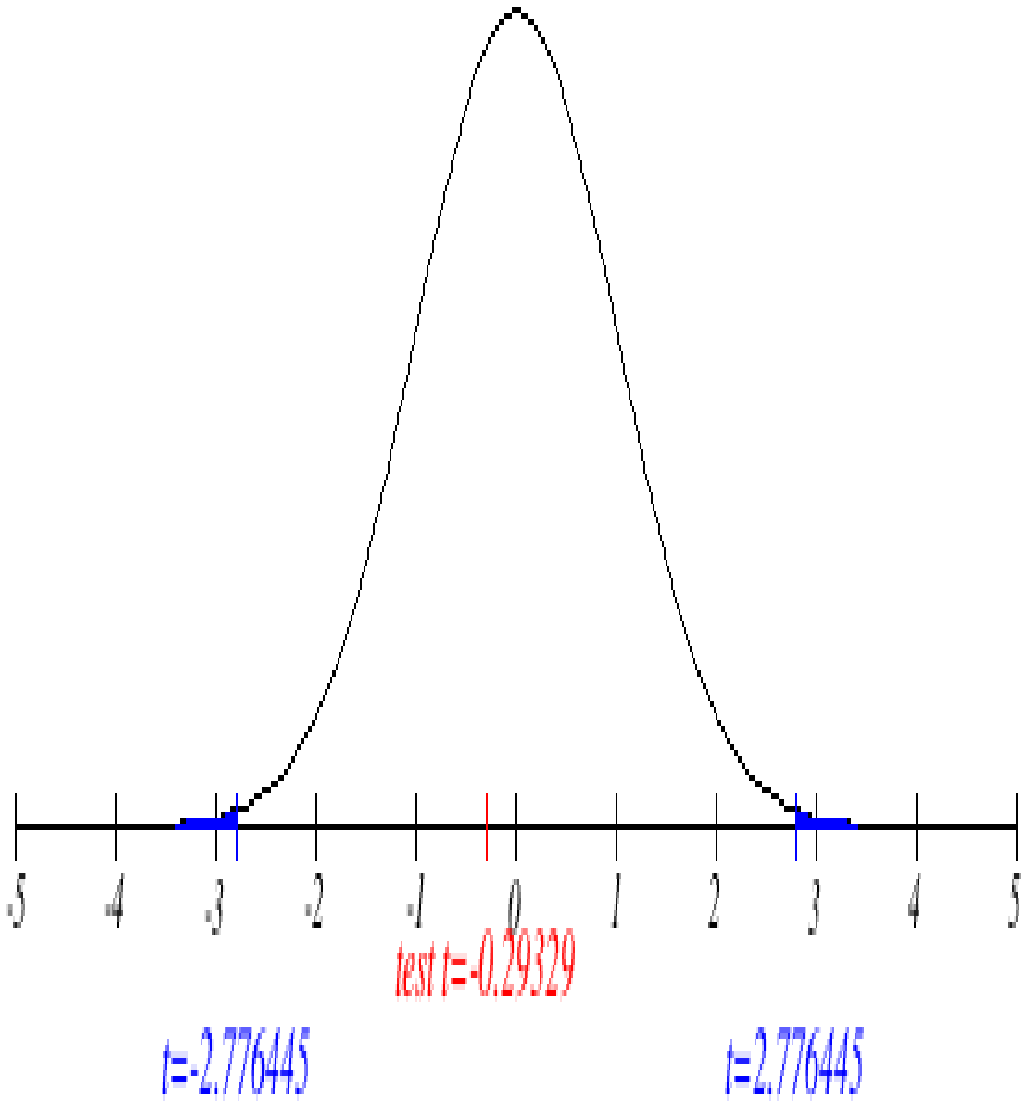

H3 गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका :18 गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में अंतर

t-Test: Paired Two Sample for Means		
	Variable 1	*Variable 2*
Mean	46	50
Variance	442.5	774.5
Observations	5	5
Pearson Correlation	0.980066	
Hypothesized Mean Difference	0	
df	4	
t Stat	-1.07288	
P(T<=t) one-tail	0.171869	
t Critical one-tail	2.131847	
P(T<=t) two-tail	0.343739	
t Critical two-tail	2.776445	

गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-1.07288) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में अंतर है।

आरेख :18 **t-Test: Paired Two Sample for Means**

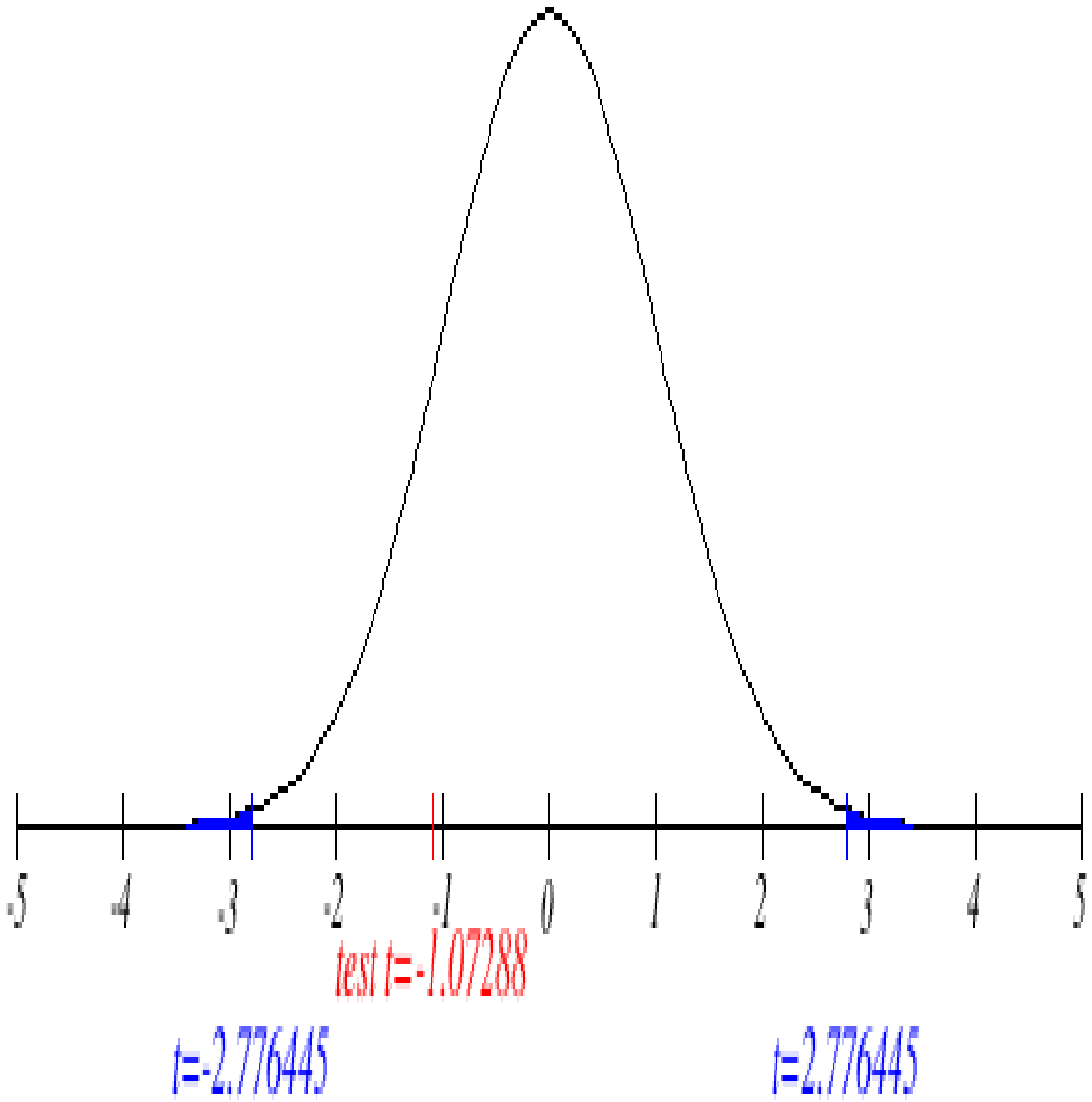

H4 जनजातिय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका :19 जनजातिय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं में अंतर

t-Test: Paired Two Sample for Means		
	Variable 1	*Variable 2*
Mean	47	49
Variance	629	771
Observations	5	5
Pearson Correlation	0.958156	
Hypothesized Mean Difference	0	
df	4	
t Stat	-0.55258	
P(T<=t) one-tail	0.304988	
t Critical one-tail	2.131847	
P(T<=t) two-tail	0.609976	
t Critical two-tail	2.776445	

जनजातियएवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-0.55258) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की जनजातिय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं में अंतरं है।

आरेख :19 **t-Test: Paired Two Sample for Means**

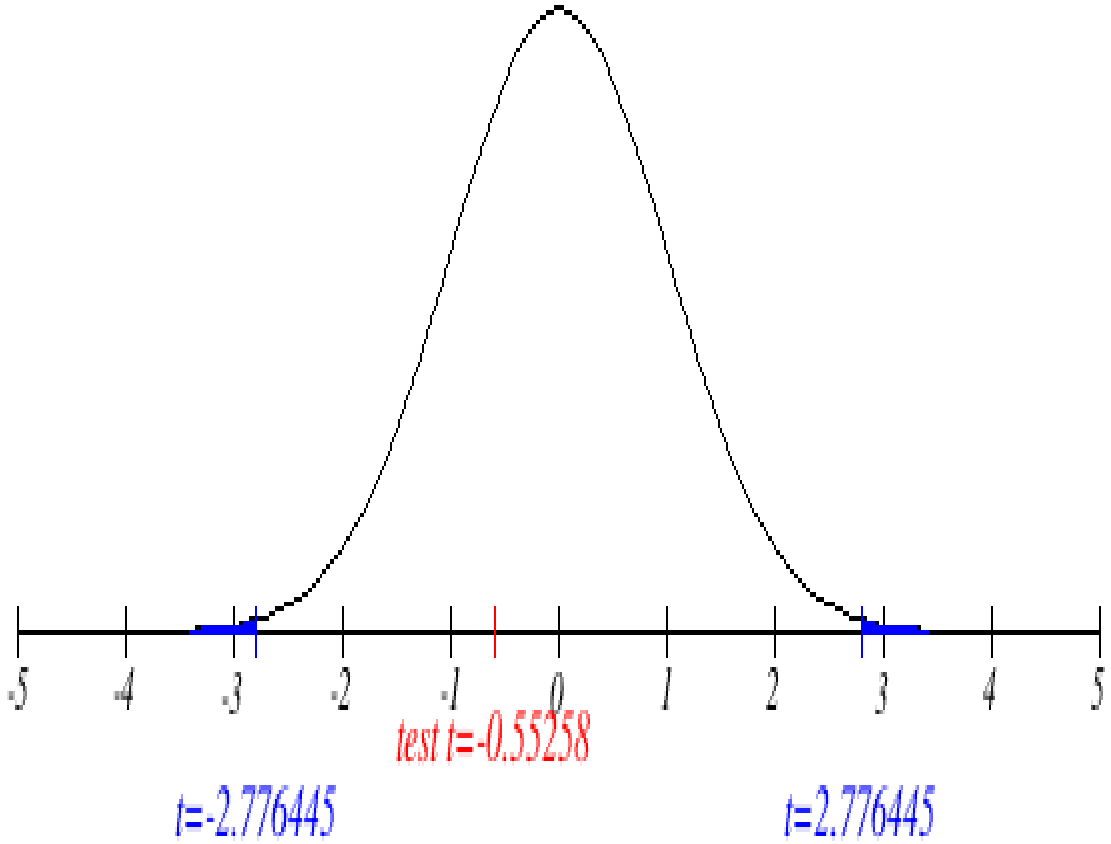

H5 जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका :20 जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में अंतर

t-Test: Paired Two Sample for Means		
	Variable 1	*Variable 2*
Mean	47.6	48.4
Variance	711.8	678.8
Observations	5	5
Pearson Correlation	0.985751	
Hypothesized Mean Difference	0	
df	4	
t Stat	-0.39801	
P(T<=t) one-tail	0.355474	
t Critical one-tail	2.131847	
P(T<=t) two-tail	0.710948	
t Critical two-tail	2.776445	

जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-0.39801) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में अंतर है।

आरेख :20 **t-Test: Paired Two Sample for Means**

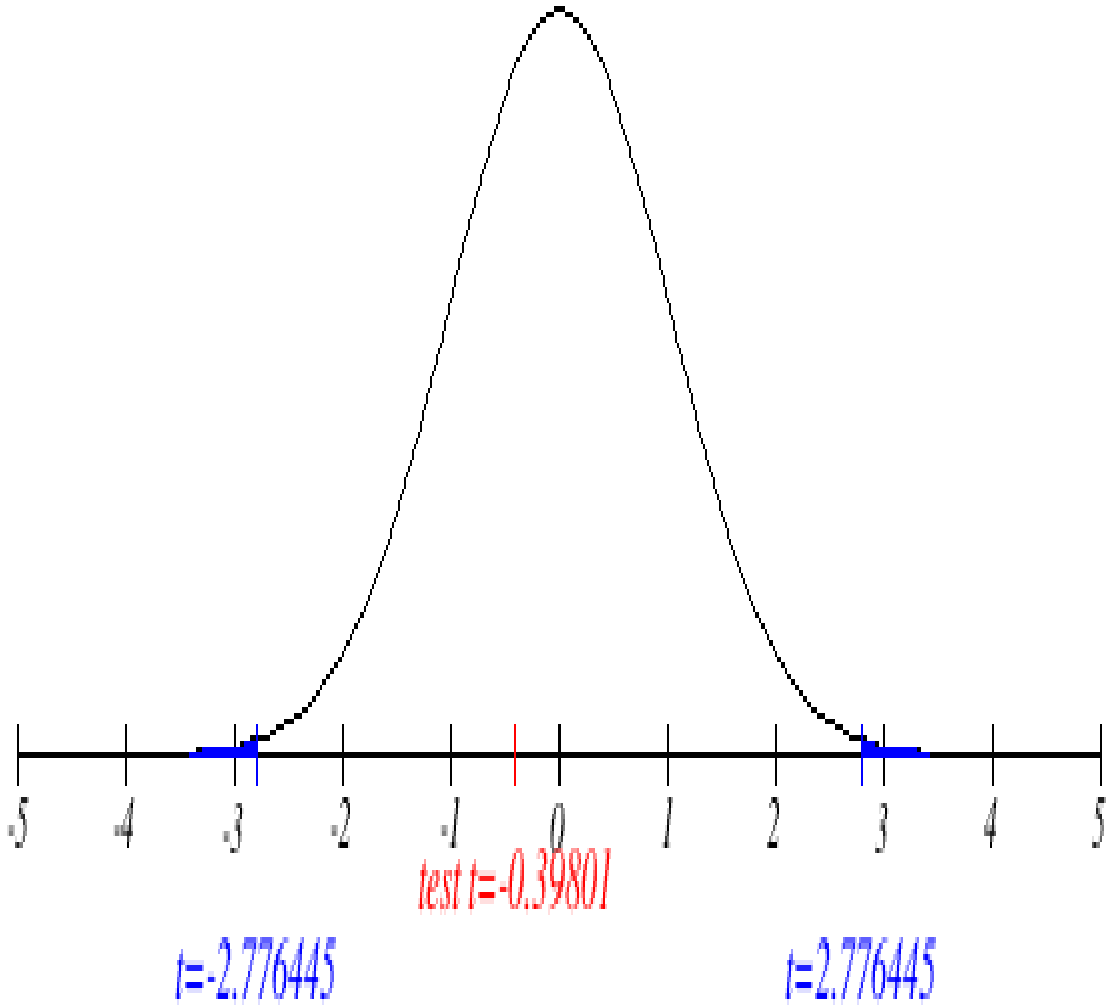

H6 गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका :21 गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में अंतर

t-Test: Paired Two Sample for Means		
	Variable 1	*Variable 2*
Mean	46.6	49.4
Variance	930.3	760.8
Observations	5	5
Pearson Correlation	0.929166	
Hypothesized Mean Difference	0	
df	4	
t Stat	-0.55405	
P(T<=t) one-tail	0.30453	
t Critical one-tail	2.131847	
P(T<=t) two-tail	0.60906	
t Critical two-tail	2.776445	

गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-0.55405) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में अंतर है।

आरेख :21 **t-Test: Paired Two Sample for Means**

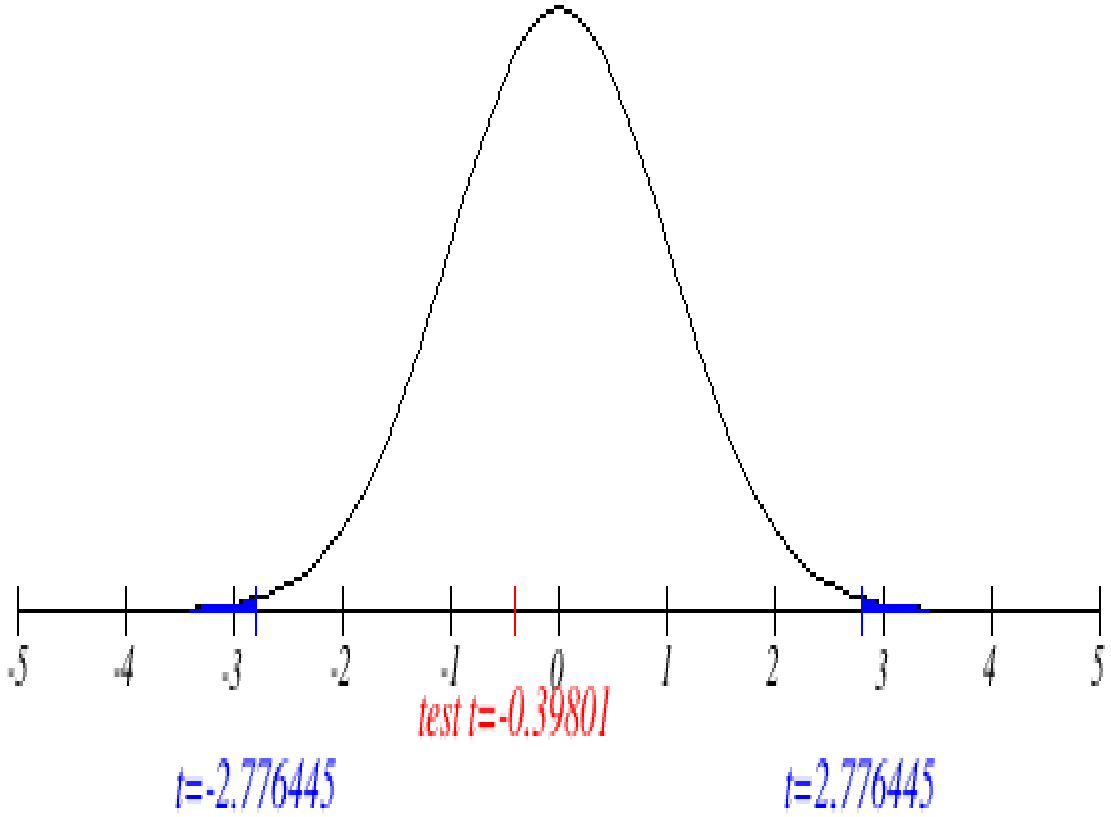

अध्याय-पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं व्याख्या

पंचम अध्याय

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं व्याख्या

प्रस्तावना

किसी भी शोध कार्य का एक महत्वपूर्ण भाग होता है शोध का सारांश । एक उत्तम शोध कार्य की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि उसके निष्कर्ष शोध विधियों के सम्यक प्रयोग एवं तर्क संगत व्याखाओं पर आधारित होते हैं। उनमें वस्तुनिष्ठता होती है। वह अपने निष्कर्ष के द्वारा ही अपने शोध कार्य को अंतिम रूप प्रदान कर सकता है, या यों कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी कि बिना निष्कर्ष के निकले उसके शोध कार्य को अपूर्ण माना जाता है।

जिस प्रकार किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व उद्देश्यों की आवश्यकता होती है। बिना उद्देश्यों के कोई भी कार्य सफल नहीं माना जा सकता, ठीक उसी प्रकार शोध कार्य के पूर्ण हो जाने पर निष्कर्ष आवश्यक होते हैं और उन्हीं प्राप्त निष्कर्षों के माध्यम से ही शोध कार्य की शैक्षिक उपयोगिता के सम्बन्ध में आवश्यक सुझाव दिये जा सकते हैं।

जिस प्रकार एक माली बीज बोता है, उसमें खाद, पानी देता है, उसकी देखभाल करता है तथा उम्मीद करता है कि ये बीज फसल के रूप में परणित होंगे। ऐसा होने पर ही उसकी मेहनत सफल होती है अन्यथा उसके द्वारा किये गये कार्य का कोई मतलब नहीं निकलता इसी प्रकार चयन की समस्या के सम्बंध में निर्धारित किये गये उद्देश्यों की पूर्ति हो जाऐ तो उसका अनुसंधान कार्य पूर्णतया सफल माना जाता है।

अनुसंधान कार्य चयन की समस्या की राह है तथा निष्कर्ष एवं सुझाव उसकी मंजिल। अतः एक अनुसंधान कार्य में निष्कर्ष व सुझाव का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

प्रस्तुत अध्याय में अध्ययन के लक्ष्यों एवंम् प्राकल्पनाओं के सन्दर्भ में विश्लेषित तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किये गये हैं क्योंकि हम यह कह सकते हैं कि किसी शोध अध्ययन में उस शोध के निष्कर्ष महत्वपूर्ण अंग होते हैं। इसके बिना शोध अर्थहीन होता है।

शोध सारांश

किसी भी समाज समुदाय में सर्वांगीण विकास में चाहे वह आर्थिक हो, सामाजिक हो या सांस्कृति हो लेकिन इन सबसे ज्यादा सर्वप्रथम शैक्षिक विकास प्रमुख स्थान रखता है। भारत में सामाजिक एवं धार्मिक सुधारकों ने शिक्षा को महत्वपूर्ण माना था और उन्होनें शिक्षा के उत्थान के लिये कार्य भी किये। उन्होने यह अनुभव किया कि पिछड़ी जातियों एवं जनजातियों का आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान केवल शैक्षणिक सुधार द्वारा ही संभव है। शिक्षा के स्तर के आधार पर ही किसी समाज की सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रगति का अनुमान लगाया जा सकता है क्योंकि शिक्षा का संस्कृति के साथ अभूतपूर्व संबंध होता है। इसलिये विशेषकर आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा के प्रति व्यापक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति एवं उसके वातारण के बीच परस्पर सम्बन्ध पाया जाता है। व्यक्तित्व के प्रत्येक पहलू पर वातावरण का व्यापक प्रभाव पड़ता है

और वह इन सबसे निर्देशित होता है। अतः शिक्षा संस्कृति पर निर्भर है और संस्कृति शिक्षा से संबंधित है।

आदिवासी नाम उन लोगों को दिया जाता है जो पहले से ही इन क्षेत्रों में बसे हुए थे। इनके पिछड़े हुए होने का प्रमुख कारण आदिवासी शिक्षा का स्तर अन्य जातियों से निम्नतम स्तर पर होना है। जनजाति के लोग आर्थिक क्षेत्र में पराश्रित, शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े हुए और सामाजिक दृष्टि से सर्वाधिक कष्टभोगी, अलगाव व अस्पृश्यता के शिकार रहे है जहां तक आदिवासियों का संबंध है उनके सबसे बड़ी समस्या या कठिनाई अलगांव है जिसके फसलस्वरूप इनमें शिक्षा का अभाव है।

"सिरोही जिले के जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन"

प्रथम अध्याय में शोध के विषय **"सिरोही जिले के जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन"** पर चर्चा की गयी है । शिक्षा के महत्त्व के बारे में बताया गया है, अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व के बारे में अध्ययन किया गया है अध्ययन का औचित्य बताया गया है । अध्ययन के उद्देश्य पर चर्चा की गया है तथा परिकल्पनाएँ निर्धारित की गई है तथा शोध शीर्षक में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या प्रस्तुत की गयी है अध्ययन का परिसीमन बताया गया है।

द्वितीय अध्याय में साहित्य के पुनरवलोकन का अध्ययन किया गया है । इस अध्याय में पूर्व में किए गए शोध कार्यों एवं प्रस्तुत अध्ययनों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तावित शोध के क्षेत्र में पहचानी गई रिक्तता को बताया गया है।

तृतीय अध्याय में शोध प्रविधि का विवरण प्रस्तुत किया गया है शोध में प्रयोग में लिए गये शोध न्यादर्श की व्याख्या की गयी है शोध में प्रयुक्त सर्वेक्षण विधि का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में प्रश्नावली द्वारा प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण किया गया तथा सारणी एवं तालिकाओ के माध्यम से उनका प्रस्तुतीकरण किया गया । विश्लेषण के प्राप्त परिणाम निम्न हैरू–

तालिका :1 कुल 240 छात्रों में से 76 छात्रों ने यह कहा कि निजीविद्यालय में कक्षा में संसाधनों का अभाव है जबकि 164 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति दर्शायी। वहीं राजकीय विद्यालय के 173 छात्रों ने उनकी कक्षा में संसाधनों का अभाव से सहमति दिखाते हुए अपना जवाब दिया जबकि केवल 67 छात्र ने कहा कि अपनी कक्षा में संसाधनो का अभाव नहीं है। अतः यह यह स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालय कि कक्षाओं में निजी विद्यालय की तुलना में कक्षा में संसाधनों का अभाव है।

तालिका :3 जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या अध्यापक द्वारा दी गई गतिविधियों को आप रूचिपूर्ण समझते है, तो निजीविद्यालय के कुल 240 छात्रों में से केवल 55 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए कहा कि शैक्षिक

गतिविधियों को वह रूचिपूर्ण समझते है जबकि 185 छात्रों ने जवाब नहीं में देते हुए अपनी अरूचि दर्शायी। अतः नीजी विद्यालय में कक्षा में शैक्षिक गतिविधियों को छात्र रूचिपूर्वक नहीं समझते है।

वहीं राजकीय विद्यालय के भी केवल 98 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए सहमति जतायी की उनकी शैक्षिक गतिविधियों को रूचिपूर्वक वह समझते है जबकि केवल 142 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति दर्शायी। अतः राजकीय विद्यालय कक्षा में भी शैक्षिक गतिविधियों को छात्र रूचिपूर्वक नहीं समझते है।

इससे स्पष्ट होता है कि छात्र कक्षाउपरान्त गतिविधियों को रूचिपूर्वक नहीं समझते है।

तालिका :6 जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या आपको शिक्षण साम्रगी के प्रति कठिनाई का सामना करना पड़ता है, तो निजीविद्यालय के कुल 96 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में दिया, जबकि 144 छात्रों ने जवाब नहीं में देते हुए बताया है उन्हे शिक्षण साम्रगी के प्रति कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता है।

वहीं राजकीय विद्यालय के 146 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए सहमति जतायी की उनके विद्यालय शिक्षण साम्रगी के प्रति आपको कठिनाई का सामना करना पड़ता है जबकि केवल 94 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति बतायी। अतः राजकीय विद्यालय कक्षा में विद्यालय के छात्रों को शिक्षण साम्रगी के प्रति कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

इससे स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालय में छात्रों को शिक्षण साम्रगी के प्रति कठिनाई का सामना राजकीय विद्यालय की तुलना में कम करना पड़ता है।

तालिका :9 जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या अध्यापको द्वारा प्रश्न/उत्तर का आदान–प्रदान करते समय आपको नये विचारों का ज्ञान प्राप्त होता है, तो निजी विद्यालय के 114 छात्र ने सहमति दिखायी जबकि 126 छात्रों ने अपनी असहमति बतायी। वहीं राजकीय विद्यालय के 124 छात्रों ने इस कथन का सहमत किया व बाकि के 116 छात्रों ने इन्कार किया। अतः यह स्पष्ट है कि राजकीय विद्यालय के छात्रों के विचारों में ज्ञान अर्जन अध्यापको के द्वारा प्रश्न–उत्तर करते समय अधिक होता है जबकि निजी विद्यालयों में इसकी तुलना में कम होता ळें

तालिका :11 जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या कक्षाओं का संचालन निरन्तर चलता रहता है, तो निजी विद्यालय के 240 छात्रों में से 181 छात्रों ने सहमति दिखायी की उनकी कक्षा का संचालन निरन्तर चलता है व केवल 59 छात्रों ने नियमित संचालन न होने कि बात कही। वहीं राजकीय विद्यालय के भी 240 छात्रों में से 175 छात्रों ने भी अपनी सहमति बतायी।

अतः यह स्पष्ट है कि राजकीय व निजी विद्यालय के छात्रों में कक्षाओं का संचालन निरन्तर नियमित रूप से चलता रहता है।

तालिका :14 जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या आपको घर पर अध्ययन के अलावा अन्य कार्य करना पड़ता है, तो निजी विद्यालय के 240 छात्रों में से 68 छात्रों ने सहमति दिखायी की उनके अन्य काम भी करना पडता है व 176 छात्रों ने कहा की वह कोई अन्य काम नहीं करते है। वहीं राजकीय विद्यालय के भी 240 छात्रों में से 78 छात्रों ने अपनी सहमति बतायी उन्हें पर अध्ययन के अलावा अन्य कार्य करना पड़ता है जबकि केवल 162 छात्रों ने असहमति बतायी। इससे यह स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालय व निजी विद्यालय के अत्यधिक छात्र अध्ययन के अलावा अन्य कार्य नहीं करते है।

परिकल्पना परीक्षण

H1 जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-1.97546) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति में अंतर है।

H2 जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-0.29329) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में अंतर है।

H3 गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-1.07288) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में अंतर है।

H4 जनजातिय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

जनजातिय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-0.55258) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की जनजातिय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं में अंतरं है।

H5 जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-0.39801) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में अंतर है।

H6 गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-0.55405) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में अंतर है।

H7 जनजातिय एवं जनजातीय क्षेत्र के शिक्षकों एवं अभिभावकों में शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

जनजातिय एवं जनजातीय क्षेत्र के शिक्षकों एवं अभिभावकों में शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-0.7984) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की जनजातिय एवं जनजातीय क्षेत्र के शिक्षकों एवं अभिभावकों में शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं में अंतर है।

सुझाव –

सभी बच्चों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि उन्हें कम से कम अच्छी माध्यमिक स्तर की योग्यता रखने वाले शिक्षक पढ़ाएं। इसलिए, सरकारों को अच्छे शिक्षक उम्मीदवारों के दायरे को बढ़ाकर उत्तर माध्यमिक शिक्षा की उपलब्धता में सुधार करने के लिए निवेश करना चाहिए। यह सुधार विशेष रूप से महत्वपूर्ण होगा यदि बेहतर शिक्षित महिला अध्यापकों के पूल को उपेक्षित क्षेत्रों में बढ़ाया जाए। कुछ देशों में इसका अर्थ है कि शिक्षण में और अधिक महिलाओं को आकर्षित करने के लिए सकारात्मक उपाय लागू करने होंगे।

नीति निर्माताओं को अपना ध्यान अल्प–प्रतिनिधित्व वाले समूहों से लेने पर ध्यान देने और शिक्षकों को प्रशिक्षित करने की भी आवश्यकता है, जैसे सजातीय अल्पसंखयक, जो अपने समुदायों में सेवा कर सकें। ऐसे शिक्षक सांस्कृतिक संदर्भ और स्थानीय भाषा से परिचित होते हैं और उपेक्षित बच्चों के शिक्षा अवसरों में सुधार कर सकते हैं।

सभी शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि वे सभी बच्चों की शिक्षण आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। शिक्षकों को कक्षाओं में जाने से पहले उन्हें अच्छी गुणवत्ता वाले सेवा–पूर्व शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में भाग लेना चाहिए जो पढ़ाए जाने वाले विषयों के ज्ञान तथा शिक्षण पद्धतियों के बीच ज्ञान के बीच संतुलन पैदा कर सकें। सेवा–पूर्व शिक्षक शिक्षा के अंतर्गत पर्याप्त कक्षा शिक्षण अनुभव को प्रशिक्षण का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाना चाहिए ताकि वे योग्य शिक्षक बन सकें। इसे शिक्षकों को व्यावहारिक कौशल प्रयास करना चाहिए ताकि

बच्चों को पढ़ना सिखाया जा सके और वे बुनियादी गणित को समझ सकें। सजातीय रूप में विविध समाजों को एक से अधिक भाषा में पढ़ना सिखाना चाहिए। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों को भी ऐसा शिक्षक तैयार करने चाहिए जो अनेक कक्षा और वर्गों को एक ही कक्षा में पढ़ा सकें और यह समझ सकें कि जेंडर भिन्नता के लिए शिक्षक का व्यवहार कैसे शिक्षा के परिणामों को प्रभावित कर सकता है। प्रत्येक शिक्षक के लिए शिक्षण कौशल को विकसित और सुदृढ़ करने हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण महत्वपूर्ण है। यह शिक्षकों को कमजोर छात्रों, विशेषकर शुरुआती कक्षा में छात्रों को नए विचार उपलब्ध करा सकता है, और शिक्षकों को नए पाठ्यक्रम के अनुसार परिवर्तन लाने में मदद कर सकता है। अभिनव दृ ष्टिकोण जैसे दूरस्थ शिक्षक शिक्षा, तथा साथ ही प्रशिक्षण और परामर्श को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि सेवा–पूर्व और सेवाकालीन विषय शिक्षा, दोनों को बड़ी संख्या में शिक्षकों को दिलाया जा सके।

यह सुनिश्चित करने के लिए शिक्षकों को सभी बच्चों कीशिक्षा में सुधार करने के लिए उत्कृष्ट प्रशिक्षण दिया जाए।यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षकों को प्रशिक्षण देने वाले प्रशिक्षकोंको वास्तविक कक्षा शिक्षण चुनौतियों का ज्ञान एवं अनुभव होतथा उनसे कैसे निपटा जाए। इसलिए नीति–निर्माताओं को ऐसे शिक्षक प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करना सुनिचित करना चाहिए जिन्हें कक्षा शिक्षण आवश्यकताओं का पर्याप्त अनुभव हो औरजो कठिन परिस्थितियों में पढ़ाने से जूझ रहे हैं।नए योग्यता प्राप्त शिक्षकों को शिक्षण ज्ञान को कार्यकलापों में परिणत करने में समर्थ बनाना, जिससे सभी बच्चों की शिक्षा मेंसुधार हो। नीति निर्माताओं को

प्रशिक्षित प्रशिक्षक उपलब्ध करानेचाहिए ताकि वे इस बदलाव के अनुरूप बन सकें।

शिक्षकों हेतु सुझाव :–

- विद्यार्थियों को अधिकाधिक ऐसे अवसर प्रदान करने चाहिए, जिससे वे परम्परागत चिन्तन से हटकर नये वातावरण में भाग ले सकें और अपनी बुद्धि का विकास कर सकें।
- विद्यार्थियों की समस्याओं का समुचित ढ़ंग से समाधान करना चाहिए।
- शिक्षक समूह का नेतृत्व कर सके एवं माता–पिता के विकल्प के रूप में भूमिका निभा सकें।
- शिक्षकों को कमजोर एवं कम बुद्धि वाली छात्राओं को विशेष कक्षाएँ लगाकर समालोचना भी करनी चाहिए।
- अपने अध्यापन में शिक्षकों को प्रोजेक्ट विधि एवं समस्या विधि का उपयोग करना चाहिए ताकि छात्राएँ क्रिया शील रहकर ज्ञानार्जन कर सकें।
- विद्यालय में स्वस्थ वातावरण का संचार करना चाहिए जिससे छात्राओं की जीवन संतुष्टि एवं उनकी आध्यात्मिक, सामाजिक तथा सांवेगिक बुद्धि में गुणवत्ता आ सके।
- विद्यार्थियों द्वारा अर्जित उपलब्धियों के प्रति सकारात्मक –दृष्टिकोण अपनाते हुए समय–समय पर पुरस्कार के माध्यम से पुनर्बलित किया जाना चाहिए, क्योंकि पुरस्कार अभिप्रेरणा का स्रोत है जो कि छात्राओं को उत्तरोत्तर प्रगति के लिए अभिप्रेरित करता है।

भावी शोधकार्य हेतु सुझाव :–

- शोध कर्त्री ने प्रस्तुत शोध में जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थिय को न्यायदर्श के रूप में लिया है। भावी षोधकर्ता महाविद्यालयी विद्यार्थियों को भी न्यादर्ष के रूप में ले सकते हैं।
- भावी शोधकर्ता उक्त समस्या के संदर्भ में सरकारी एवं गैर–सरकारी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को अपने अध्ययन का आधार बना सकते हैं।
- भावी शोधकर्ता सरकारी एवं गैर–सरकारी महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को उक्त अध्ययन हेतु चयनित कर सकते हैं।
- इस शोधकार्य हेतु न्यायदर्श 480 लिया गया है। भावी शोधकर्ता इससे बड़ा न्यायदर्श लेकर शोधकार्य कर सकते हैं।
- भावी शोधकर्ता धर्म एवं भौगोलिक आधार पर वर्गीकृत कर अपना शोध कार्य कर सकता है।
- इस शोध में केवल सिरोही जिले को सम्मिलित किया गया है। भावी शोधकर्ता इसे अन्य संभागों, राज्य स्तर एवं राष्ट्र स्तर पर भी कर सकता है।
- इस शोध में केवल शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं को सम्मिलित किया गया है। भावी शोधकर्ता अन्य चर सम्मिलित कर सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ

- Anastasiou, S., & Garametsi, V. (2021). Perceived leadership style and job satisfaction of teachers in public and private schools. *International Journal of Management in Education*, *15*(1), 58-77.
- Bashir, B., & Gani, A. (2021). Empirical investigation of job satisfaction among academics. *International Journal of Indian Culture and Business Management*, *23*(2), 241-262.
- Kumar, P., & Wiseman, A. W. (2021). *Teacher quality and education policy in India: Understanding the relationship between teacher education, teacher effectiveness, and student outcomes*. Routledge.
- Munir, H., Quraishi, U., Mustafa, T., & Hashmi, A. (2021). Relationship Between Emotional Intelligence And Teaching Effectiveness Of Teachers At Secondary School Level In Multan District. *Psychology And Education Journal*, *58*(3), 2292-2303.
- Nagler, M., Piopiunik, M., & West, M. R. (2020). Weak markets, strong teachers: Recession at career start and teacher effectiveness. *Journal of Labor Economics*, *38*(2), 453-500.
- Akram, M. (2019). Relationship between Students' Perceptions of Teacher Effectiveness and Student Achievement at Secondary School Level. *Bulletin of Education and Research*, *41*(2), 93-108.
- Sungoh, S. M. (2019). Influence of emotional intelligence on teacher effectiveness of science teachers. *Psychology*, *10*(13), 1819-1831.
- Zaki, S. (2018). Enhancing teacher effectiveness through psychological Well-Being: A Key to improve quality of teachers. *International Journal of Research in Social Sciences*, *8*(7), 286-295.
- Sehgal, P., Nambudiri, R., & Mishra, S. K. (2017). Teacher effectiveness through self-efficacy, collaboration and principal leadership. *International Journal of Educational Management*.

- D. Godhaber (2015) Teacher Effectiveness Research and the Evaluation of U.S. Teacher Policy, https://files.eric.ed.gov/fulltext/ED560206.pdf
- Kauts, A., & Chechi, V. K. (2014). Teacher Effectiveness in Relation to Type of Institution, Emotional Intelligence and Teaching Experience. *Anadolu Journal of Educational Sciences International*, *4*(2), 63.
- Singh, I., & Jha, A. (2012). Teacher effectiveness in relation to emotional intelligence among medical and engineering faculty members. *Europe's Journal of Psychology*, *8*(4), 667-685.
- Diwan, R. (2010) Small under Resourced Schools in India : Imperatives for Quality Improvement with Reference to RTE Act, 2009. Edusearch, 1(2), 8- 18.
- Verma, S. (2010) Inclusive Education - Preparing Teachers to Meet the Demands of Inclusive Education. Edutracks, 10(4), 13-17.
- Kaur, S. (2008) Correlates of Teacher Effectiveness. Patiala: 21st Century Publications.
- Rockoff, Jonah E. (2008) Relationship between Teacher's Characteristics and Teacher Effectiveness of New Math Teachers in New York City. National Bureau of Economic Research.
- Sridhar, Y. N., & Badiei, H. R. (2008). Teacher efficacy beliefs: A comparison of teachers in India and Iran. *Journal of the Indian Academy of Applied Psychology*.
- Schulte, D. P., Slate, J. R., & Onwuegbuzie, A. J. (2008). Effective high school teachers: A mixed investigation. *International Journal of Educational Research*, *47*(6), 351-361.
- Newa, D.R., (2007) Teacher Effectiveness in relation to Work Satisfaction, Media Utilization and Attitude towards the Use of Information and Communication Technology among Secondary School Teachers of Nepal. Ph.D. Thesis in Education, Panjab University, Chandigarh.
- Douglas N. et al (2007) Models and Predictors of Teacher Effectiveness: A Review of the Literature with Lessons from (and for) other occupations.

- Bansibihari, and Lata, (2006) The Effect of Emotional Maturity on Teacher Effectiveness. Edutracks. 6(1), 37-38.
- Amandeep and Gurpreet (2005) A Study of Teacher Effectiveness in relation to Teaching Competency. Recent Researches in Education and Psychology. 71(6), 137-140.
- Vijyalakshmi, G and Mythill, B., (2004). Impact of Some Personal and Professional Variables on the Teacher Effectiveness and Work Orientation. Recent Researches in Education and Psychology, 9(1), 15-21.
- Vandana, B.K. and Punia (2004) Intuitive Abilities and Human resource Effectiveness; a Study of Journal of Educational Managers. University News. 42(5), 6-10.
- Selsor, M.K. (2003) Rural and Suburban community college students perceptions of teaching effectiveness. Dissertation Abstracts International, 64(2), 380.
- Costle, V. (2003) Development of a Critical Teaching Process : A Multisensorial Integrated Approach. 176 Dissertation Abstracts International, 63(9), 3097- A.
- Singh, G. (2002) A Comparative Study of Job Satisfaction of Teacher Educators in relation to their Values, Attitude towards Teaching and Teacher Effectiveness. Ph.D Thesis Education, Punjab University Chandigarh.
- Abler, D.A. (2002) Relationship of Teacher Organizational Commitment and Teacher Efficacy to School Academic Standing and Teaching Experience. Dissertation Abstracts International, 63(10), 347.
- Ford, J.T. (2002) The Effects of New Teacher Induction of Self Perceived Effectiveness and Satisfaction in Beginning Teachers. Dissertation Abstracts International, 63(2), 438-A.
- Allison, L. (2002) Student and Faculty perceptions of teaching effectiveness of full time and part time associate degree nursing of full time and part time associate degree nursing faculty. Dissertation Abstracts International. 63(8), 2805- A.

- Kagathala, A.B, (2002). A Study of the Effectiveness of Teachers of Secondary School in Gujarat. Journal of Education and Psychology. 59 & 60(3 & 4), 26-33.
- Quandahl, J.E. (2001) The Instructional Practices of Kindergarten Teachers : Effects on Student Achievement. Dissertation Abstracts International, 62(2), 462-A.
- Cheung, H.Y. (2000) The Measurement of Teacher Efficacy : Hong Kong Primary In-Service Teachers. Journal of Education for Teaching, 32(4), 435-451.
- Raj, T. (2000) An Empirical Study of Correlates Teacher Effectiveness. The Educational Review. 107(1), 6- 7.
- Khalaf, A.K. (2000) The Predictors of Chemistry Achievement of 12th Grade Students in Secondary Schools in the United Arab Emirales. Dissertation Abstracts International, 61(2), 479.
- Marsland, Eric (2000) An Examination of the Role of the Multiple Intelligence in Studies of Effective Teaching. Dissertation Abstracts International, 39(3), 639, June 2001.
- Allington, R.L. and Johnston, P.H. (2000) What do We Know about Effective Fourth Grade Teachers and Their Classrooms? www.eric.org.
- Pandey, M. and R. Maikhuri (1999) A study of the attitude of effective and ineffective teachers towards teaching profession. Indian Journal of Psychometry and Education, 30(1), 43-46.
- Kumar, K. (1999) A Study of Teacher Effectiveness among Scheduled Caste and Non-Scheduled Caste Teachers in relation to their Teaching Aptitude and Self-Concept. Ph.D Thesis in Education, Punjab University Chandigarh.
- Bakke, P.A.L. (1999) Perceptions of Characteristics of Effective Teachers. Dissertation Abstracts International. 60(08), 2746-A.

- Treder, D.W. (1998) Teacher Effectiveness and teacher attitudes towards children with special needs. Implications of inclusive education. Dissertation Abstracts International, 59(11), 4106.
- Meadows, P.M. (1997) Teacher Leadership Style and Teacher Effectiveness. Dissertation Abstracts International 58(12), 4555.
- Sikora, D.A. (1997) Observable teacher effectiveness and personality types of family and consumer science teachers. Dissertation Abstracts International, 59(7), 2285-A.
- Indira, B. (1997) An Investigation into Teacher Effectiveness in relation to Work Orientation and Stress. Ph.D Thesis in Education, Indian Educational Abstract (4), 54.
- Wilhelm, J.D. (1996) Teacher Effectiveness in a community college : Student and Teacher Perceptions. Dissertation Abstract International, 57(03), 1103.
- Tisclale, P.A. (1996) The relationship between selfevaluation of teaching effectiveness and administrator evaluation of teaching effectiveness as measured by a state adopted instrument. Dissertation Abstracts International, 58(1), 54.
- Sugiratham, P. and Krishnan, S. Santhana (1995) A Study of Teacher Effectiveness of Girl's Higher Secondary School in Tuticorin. The Progress of Education, LXX (1), 57-58.
- Rao, K. Ganes Wara (1995) A Study of Teacher Effectiveness in relation to Creativity and Interpersonal Relationships, Ph.D. Thesis in Education, Andhra, University, Andhra Pradesh.
- Gupta, S.P. (1995) A Correlation Study of Teacher's Job Satisfaction and their Teaching Effectiveness. The Progress of Education LXIX(10), 207-208.
- Biswas, P. Chandra and Tinku, D. (1995) A Survey on Effectiveness of Secondary Schools Teachers in Tripura. Indian Journal of Psychometry and Education, 26(1), 17-24.

- Seman, Mary B. (1994) The Effect of Direct Instruction on Teacher Effectiveness and Student Performance is Integrated Math Class. Dissertation Abstracts International, 56(8), 3082-A.
- Anyalewechi (1994) A Comparative Study of Teachers and Principals Perception of Characteristics of Effective Teachers and Factors that are Influential in Teacher Effectiveness. Dissertation Abstracts International. 55(4), 806-A.
- Delso, (1993) What Good Teachers Do : A Qualitative Study Approach. Independent Study Karnataka University (UGC funded) in the Fifth Survey of Educational Research (1988-1992), Vol. II, NCERT, 1445.
- Brodney, S.B. (1993) The Relationship between Student Achievement, Student Attitude and Student Perception of Teacher Effectiveness and the Use of Journals as a Learning Tool in Mathematics. Dissertation Abstracts International, 54(8), 2884- A.
- Singh, R.S. (1993) Teacher Effectiveness in Relation to their Sex, Area And Adjustment. Bhartiya Shiksha Shodh Patrika, 12(2), 17-21.
- Johnson, S.D. (1992) Principal's preference for skills, factors, and courses among criteria for secondary 181 teacher effectiveness. Dissertation Abstracts International, 53(12), 4152-A.
- Ballard, K.J. (1992) A Comparison of the Effectiveness of Teaching and Non-teaching Principles in Seventh Day Adventist Secondary Schools. Dissertation Abstracts International, 54(1), 69-A.
- Singh, Daljit (1991) Creativity and Intelligence as Correlates of Teaching Effectiveness of Secondary School Teachers. Ph.D. Thesis in Education, Panjab University, Chandigarh.
- Edwin, S.A. (1991) The Perception of Principals on Teaching Effectiveness and the Midcareer Teacher. Dissertation Abstracts International, 52(5), 1589- A.
- Halpin, T.F. (1991) The Relationship between Elementary Principal's and Teacher's Cognitive Style Match and Teachers Perceptions of Principals Leadership Effectiveness. Dissertation Abstracts International, 52(6), 1963-A.

- Deshpande (1991) Evaluation of Teaching: A Multidimensional Approach. Fifth Survey of Educational Research (1988-1992), Vol. II, NCERT 1445.
- Ross, K.L. (1990) Practices in Evaluating Teaching Effectiveness in Private and Liberal Colleges in Michigan. Dissertation Abstracts International, 52(2), 379-A.
- Daly, J.R. (1990) An Analysis of Student Perceptions of Teacher Effectiveness in Hanover Park high School and Implications for Administrative Evaluation Procedures and Policies. Dissertation Abstracts International. 52(4), 1143-A.
- Kingston, E.A. (1990) A comparison of the analysis of Covariance and the within class regression technique for estimating teacher effectiveness for student achievement data in non-random groups. Dissertation Abstracts International, 51(7), 2357
- Polatcan, M., & Cansoy, R. (2019). Examining Studies on the Factors Predicting Teachers' Job Satisfaction: A Systematic Review. *International Online Journal of Education and Teaching*, *6*(1), 116-134.
- Kulshrestha, S., & Singhal, T. K. (2017). Impact of spiritual intelligence on performance and job satisfaction: A study on school teachers. *International Journal of Human Resource & Industrial Research*, *4*(2), 1-6.
- Adhikari, K., & Barbhuiya, J. H. (2016). Mapping job satisfaction of central university teachers of India. *Splint International Journal of Professionals*, *3*(11), 22-28.
- Agarwal, R. N. (2015). Stress, job satisfaction and job commitment‘s relation with attrition with special reference to Indian IT sector. *Management and Innovation for Competitive Advantage*.
- Gupta, M., & Gehlawat, M. (2013). Job satisfaction and work motivation of secondary school teachers in relation to some demographic variables: a comparative study. *Educationia Confab*, *2*(1), 10-19.
- Basak, R., & Ghosh, A. (2011). School environment and locus of control in relation to job satisfaction among school teachers–A study from Indian perspective. *Procedia-Social and Behavioral Sciences*, *29*, 1199-1208.

- Thomas, K. A. (2010). Work Motivation and Job Satisfaction of Teachers. *Southeastern Teacher Education Journal*, *3*(1).
- Arani, A. M., & Abbasi, P. (2008). A comparative study of secondary school teachers' job satisfaction in relation to school organizational climate in Iran and India. In *Education and Leadership* (pp. 153-171). Brill.
- सक्सेना, एस. एवं सिंह, ए.: विवाहित एवं अविवाहित सेवारत महिलाओ की विभिन्न कार्य क्षेत्रों में कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, अन्वेषिका, वर्ष 8,2007, पृष्ठ संख्या 77-82
- Pandey, S.: A Comparative Study of Teacher Job Satisfaction and Adjustment Between Secondary Teachers and Degree Teachers. Anveshika, vol. 7, 2007, p. 36-42.
- Rathore, P.S. and Byadwal, V.: Effect of Sex and Marital Status on Job Satisfaction Among Teachers (Govt.). Indian Journal of Psychometry and Education, Vol. 37, No. 2, 2006, pp. - 93-96.
- Ayishabi, T.C. and Amruth, G. Kumar : Job Satisfaction of Primary School Teachers In Relation to Their Teaching Competence. Journal of All Indian Association for Educational Research, Vol. 17, No. 1 & 2, 2005, pp.- 106-107.
- Sahaya Mary and Paul R. : Job Satisfaction of Government School Teachers in Pondlcherry Region. Journal of All India Association for Educational Research, Vol. 17, No. 1 & 2, 2005, pp. 80-81.
- अग्रवाल, सरस्वती एवं अग्रवाल, निशा: विद्या भारती द्वारा संचालित कानपूर नगर के सरस्वती विद्या मंदिरो के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष २३, अंक 1,2004, पृष्ठ स.25-28
- Begam, N. H. Lathlfa and Raj, S.S. : Job Satisfaction and Spiritualistic Orientation Among Teachers. Psycho Lingua, Vol. 33, No. 2003, p.-149.
- Bhuyan, 8. and Choudhary, M. : Correlates of Job Satisfaction Among College Teachers. Indian Journal of Psychometry and Education, Vol. 33, No. 2, 2002, p.-143.
- अग्रवाल, सरस्वती एवं जायसवाल, रश्मि: सरस्वती शिशु मंदिर के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन, परिप्रेक्ष्य, वर्ष 10, अंक 3, 2003, पृष्ठ स.97-103

- शुक्ला, ललिता: स्ववित्तपोषित तथा अनुदानित विद्यालयों के अध्यापको की शिक्षण मनोवृत्ति कार्य संतुष्टि और छात्रों की उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबंध, छत्रपति शाहू जी वि. वि. कानपूर, २००२
- Rebero, J. Filomina and Bhargava, M. : Job Satisfaction Among College Teachers. Indian Journal of Psychometry and Education, vol. 33, No. 2, 2002, p. – 143
- Begam , N. H. Lathifa and Dharmagadan , B. : Sex Difference In Job Satisfaction of College Teacher in Keral State. Indian Journal of Psychometry and Education, Vol. 731, No. 1, 2000, p.-67
- Agarwal, Meenakshl : Job Satisfaction of Teachers in Relation to Some Demographic Variables and Values. In Fifth Su,vey of Educational Research. New Deihl: NCERT, 2000, p. 1434.
- Dotia, N.C.: A Study of Factors Affecting Job Satisfaction of Commerce Teachers of Rajasthan and Its Impact on Educational Achievement of Their Pupils. In Fifth Suwey of Educational Research, New Delhi : NCERT, 2000, p. - 1870.
- Annamalal, A.R. : A Study of Job Satisfaction of Teachers in Relation to Certain Selected Variables. Indian Educational Abstract, Issue -7 & 8, 2000, p. 43.
- Abraham, A. : Job Satisfaction and Teachers Effectiveness : A Study of College Teachers. Indian Educational Abstract, Issue-3, 1997, p.-41.
- Chandralah, K. : Effect of Age on Job satisfaction Among College Teachers. Indian Educational Abstract. Issue 3, 1997, p. -24.
- Das, L. and Panda, B.B. : Job satisfaction of College and Higher Secondary Teachers. Indian Educational Abstract, Issue 3, 1997, p.-42.
- Gupta, S.P. : A Correlation Study of Teachers Job Satisfaction and Their Teaching Effectiveness. Indian Educational Abstract, Issue 3, 1997, p. -53.
- Panda, B.N. Pradhan, Nityananda and Senapaty, H. K. : Job Satisfaction of Secondary School Teachers in Relation to Their Mental Health, Age, Sex and Management of School. Indian Educational Abstract, Issue 4, 1998.p. - 14
- Nath, P. : A Comparative Study of Job Satisfaction of Primary School Teachers Working in School Managed by Different Agencies. Unpublished Dissertation, BHU, 1992.

BOOKS

1. Aggarwal Yash (1998), Education and Human Resource Development, Commonwealth, New Dehli.
2. Aggarwal Yash (1995), Resent trends in Literacy Among Scheduled Castes, Occasional Paper No. 20, NIEPA, New Dehli.
3. Aggarwal Yash (1997), Small Schools: Issues in policy and Planning, Occasional Paper No. 23, NIEPA, New Dehli.
4. Aggarwal Yash (1998a), Access and Retention: The Impact of DPEP, Department of Education, Government of India, New Dehli.
5. Anderson, G. (2000), Education Wastage, Commonwealth Publishers, New Dehli.
6. Annual Report, DPEP, 1999-2000, Rajasthan Parathmik Shiksha Parishad, Jaipur.
7. AHMED, MOHAMMED IQBAL (1992), "A Study of the Influence of Parental Values Orientation Teacher Leader Behavior and Student's Mental Health on the Creative of 9 Standard of the Same Socio Economics Status." Ph.D. (Edu.) Bangalore University. Indian Edu. Abstracts Issue, 2 January, 1997 [NCERT]
8. Best, J. W. (1977) : Research In Education, New York, Longman's Green And Company.
9. Best, J.W. Research in Education, therd edition, (1978) Prentice Hall of India Private Limited, New Dehli-110001.
10. Buch, M. B. (1978-83) : Third Survey Of Research In Edcation, New Delhi, Ncert.
11. Centre for Educational Research and Innovation (1998) Education Policy Analysis: 1997, OECD, Paris. VkafV;kfoofolky;] Jh xaxkuxj ¼jkt-½ 121
12. Garrett, Henry E. (1981), Statistics in Psychology and Education, Kalyani Publishers, Ludhiana (Punjab)
13. Garrett, H. E. (1967) : Statitics- Psychology And Education, Vikils Feffer And Simons Pvt. Ltd., New York.
14. Government of India (1997), Selected Educational Statistics, 1997, MHRD, New Dehli.
15. Huey, J. Frances (1965), Teaching Senior Sec. Children, Holt, Rinchrt and Winston, Inc. NewYork.

16. India-2002 (2002), Prakashan Vibhag, Ministry of Information Broadcast, Govt. of India, New Dehli.

17. International Bureau of Education School Repetition: A Global Perspective, UNESCO, paris.

18. Jangira N.K. (1994) Learning and Mathematics: A Synthesis Report, NCERT, New Dehli.

19. MANJUYANT, E. (1990), "Influence of Home and School Environment on the Mental Health Status of Children."Indian Education Review Vol- 24 [NCERT] 28(5), 355-365.

20. MHRD (1997) Selected Educational Statistics, 1996-97, MHRD, New Dehli.

21. NCERT (1992), School Education in the 1990s: Problems and Perspectives. Report of the National Seminar, NCERT, New Dehli.

22. NCERT (1995), Special Number, 1995 on DPEP, Indian Education Review, NCERT, New Dehli.

23. SHARMA, R.R. (1979), "Self-Concept of Aspiration and Mental Health as Factors in Academic Achievement."V th Survey of Educational Research, NCERT. ISSN: 2230-7850

24. Trivedi, Dr. R.N. & Shukla, Dr.D.P. (1999), Research Methodology, College Book Depot, Jaipur. Tantiya University, Ganganagar, Rajasthan,122

25. UNICEF (1997) The Progress of Nations, UNICEF New York.

WEBSITES

www. india educations . net

www. education .org / wiki / Education in India

www. education for all in India . com

www. ncert .nic .in www. ncert . org

www. India education . com

www. education .nic . in

www. ciet . nic. In

www. rajshiksha .gov . in

www. education India . org

परिशिष्ट

- प्रश्नावली
- प्रकाशित शोध - पत्र
- संगोष्ठी प्रमाण-पत्र
- साहित्य जाँच रिपोर्ट

परिशिष्ट

क्र.स.	छात्रों हेतु प्रश्न	हाँ	नहीं
1-	कक्षा में संसाधनों का अभाव है।	( )	( )
2-	गतिविधि आपको कक्षा उपरान्त ही कराई जाती है।	( )	( )
3-	अध्यापक द्वारा दी गई गतिविधियों को आप रूचिपूर्ण समझते है।	( )	( )
4-	विद्यालय द्वारा समय–समय पर संबंधित कार्यशाला, सेमीनार का आयोजन होता है।	( )	( )
5-	विद्यालय द्वारा आपको संबंधित कार्यक्रमों में हिस्सा लेने हेतु प्रेरित किया जाता है।	( )	( )
6-	शिक्षण साम्रगी के प्रति आपको कठिनाई का सामना करना पड़ता है।	( )	( )
7-	अध्यापकों द्वारा कक्षा में दिये गये व्याख्यान आपको समझ पाते है।	( )	( )
8-	अध्यापकों द्वारा कक्षा में कराये गये संबंधित समस्याओं पर चर्चा की जाती है।	( )	( )
9-	अध्यापको द्वारा प्रश्न/उत्तर का आदान–प्रदान करते समय आपको नये विचारों का ज्ञान प्राप्त होता है।	( )	( )
10-	कक्षाओं में नवीन विधियों का प्रयोग किया जाता है?	( )	( )
11.	कक्षाओं का संचालन निरन्तर चलता रहता है।	( )	( )
12.	विद्यालय में छात्रावासों की पूर्ण सुविधा है।	( )	( )
13.	लाईब्रेरी में पत्र–पत्रिकाओं का अभाव है।	( )	( )
14.	आपको घर पर अध्ययन के अलावा अन्य कार्य करना पड़ता है।	( )	( )
15.	आपके पास आय का कोई स्त्रोत है।	( )	( )

मध्य भारती

MADHYA BHARTI

(UGC CARE Group-1, Multi disciplinary)

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that the article entitled

जनजातीय क्षेत्र में शिक्षा के महत्त्व एवं की शिक्षा प्रणाली का अध्ययन

Authored By

डॉ. अंजलि दशोरा

सहायक आचार्य,पैसिफिक एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर (राजस्थान)

University Grants Commission

Published in

Madhya Bharti -Humanities and Social Sciences

(**मध्य भारती**) मानविकी एवं समाज विज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

: ISSN **0974-0066** with IF=6.28

Vol. 84, No. 3, July - December : 2023

UGC Care Approved, Group I, Peer Reviewed, Bilingual, Biannual,

Multi-disciplinary Referred Journal

Chief Editor

प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा

शोध-प्रभा
Shodha Prabha

UGC CARE LISTED
ISSN : 0974-8946

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that the article entitled

सिरोही जिले के जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन

Authored By

डॉ. अंजलि दशोरा
सहायक आचार्य,पैसिफिक एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर (राजस्थान)

Published in

Shodha Prabha; ISSN 0974-8946

Volume (**वर्ष**)-48, **तृतीयांक** (Issue-03), Book No.01 : **2023**

UGC Care Approved, Group I, Peer Reviewed and Referred Journal

Editor
Mandan Mishra

जनजातीय क्षेत्र में शिक्षा के महत्त्व एवं की शिक्षा प्रणाली का अध्ययन

डॉ. अंजलि दशोरा सहायक आचार्य,पैसिफिक एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर (राजस्थान)
स्मृता सिंह मीणा, शोधार्थी पैसिफिक एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर (राजस्थान)

सार

शिक्षा के बिना एक आदमी नींव के बिना एक इमारत की तरह है। हमारे जीवन में शिक्षा का बहुत अधिक महत्व होता है। शिक्षा मानव जीवन का अभिन्न अंग है। शिक्षा और ज्ञान न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि यह अर्थव्यवस्था के विकास के लिए भी आवश्यक है। शिक्षा एक व्यक्ति की सोच का पोषण करती है और उन्हें जीवन में सोचने, कार्य करने और आगे बढ़ने की क्षमता प्रदान करती है। शिक्षा लोगों को सशक्त बनाती है और उन्हें काम के संबंधित क्षेत्रों में रहने और अनुभव के सभी पहलुओं में कुशल बनने में मदद करती है। शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है, यह लोगों के दिमाग को खोलती है और समझ, आगे बढ़ने और विकास करने की क्षमता प्रदान करती है। शिक्षा एकमात्र मूल्यवान संपत्ति है जिसे मनुष्य प्राप्त कर सकता है। शिक्षा एकमात्र आधार है जिस पर मानव जाति का भविष्य निर्भर करता है।

नवजात शिशु असहाय तथा सामाजिक होता है वह न बोलना जानता है और चलना फिरना। उसका न कोई मित्र होता है न शत्रु यही नहीं उसे समाज के रीति रिवाजों तथा परम्पराओं का ज्ञान भी नहीं होता और न ही उसमें किसी आदर्श तथा मूल्य को प्राप्त करने की जिज्ञासा पायी जाती है परन्तु जैसे–जैसे वो बड़ा होता जाता है वैसे वैसे उस पर शिक्षा के औपचारिक तथा अनौपचारिक साधनों का प्रभाव पडता जाता है इस प्रभाव के कारण उसका जहां एक ओर शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक विकास होता जाता है वही दूसरी ओर उसमें सामाजिक भावना भी विकसित होती जाती है परिणामस्वरूप वह शनै–शनै प्रौढ़ व्यक्तियों के उत्तरदायित्वों को सफलतापूर्वक निभाने के योग्य बन जाता है। इस प्रकार बालक के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन लाने के लिए व्यस्थित शिक्षा की परम आवश्यकता है।

प्रस्तावना

भारत की आदिवासी जनजातियाँ देश की सबसे प्राचीन निवासी हैं। सहस्राब्दियों से, जनजातीय समाज हाल ही में आए समूहों के अधीन रहे हैं; उनकी ज़मीनें छीन ली गईं, उन्हें पहाड़ी घाटियों और जंगलों में धकेल दिया गया, और उन्हें अपने उत्पीड़कों के लिए अक्सर बिना भुगतान के काम करने के लिए मजबूर किया गया। आज जनजातीय समूहों, जिनकी संख्या 40 मिलियन से अधिक है, को सरकार से विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, भले ही वे राष्ट्रीय संस्कृति से काफी हद तक अलग–थलग रहते हैं।

अतीत में, कई आदिवासी समूहों को देश की प्रमुख संस्कृति में आत्मसात होने के लिए मजबूर किया गया था। लेकिन भील, गोंड, संथाल, ओरांव, मुंडा, खोंड, मिज़ो, नागा और खासी जैसे कुछ समूहों ने अपनी सांस्कृतिक पहचान और भाषाओं को बनाए रखने के लिए परिवर्तन और आत्मसात का विरोध किया। कई भारतीयों के अनुसार, उनका निरंतर अलगाव राष्ट्रीय एकता के लिए समस्याएँ पैदा करता है। राष्ट्रीय एकता के बैनर तले सरकार अब इन अल्पसंख्यक समूहों को राष्ट्रीय मुख्यधारा में ला रही है। मुख्य प्रश्न यह है कि

क्या आदिवासी समाज अपनी विशिष्ट सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक मान्यताओं को संरक्षित रखते हुए राष्ट्रीय मुख्यधारा में प्रवेश कर सकते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

- जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा के महत्त्व का अध्ययन करना
- जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षण प्रणाली का अध्ययन करना

जनजातीय शिक्षा प्रणाली

सरकारी योजनाकार जनजातीय लोगों को राष्ट्रीय एकता से निपटने में मदद करने के लिए शिक्षा को अपरिहार्य मानते हैं। शिक्षा ही जीवन में उनकी समृद्धि, सफलता और सुरक्षा भी निर्धारित करेगी। जो जनजातियाँ या तो शिक्षा से वंचित रहेंगी या शिक्षा के प्रति लापरवाह रहेंगी, उन्हें इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा।

सामान्य आबादी की साक्षरता दर 29.34% की तुलना में, भारत में जनजातीय लोगों के बीच साक्षरता अधिकतम 6% है। केंद्र और राज्य सरकारों ने आदिवासी युवाओं की शिक्षा के लिए काफी धनराशि खर्च की है, लेकिन परिणाम कम हैं। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति आयुक्त का दावा है कि जब तक जनजातियों के बीच शोषण का मुकाबला शिक्षा के माध्यम से नहीं किया जाएगा और समाप्त नहीं किया जाएगा, तब तक जनजातीय कल्याण में कोई सुधार नहीं होगा। जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा एकीकृत विकास का आधार हो सकती है।

सरकारी रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि आदिवासी शिक्षा योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए स्कूलों, अन्य सुविधाओं या छात्रवृत्ति की कोई कमी नहीं है। हालाँकि, अधिकांश आदिवासी युवाओं को ये प्रोत्साहन अनाकर्षक लगते हैं। नतीजतन, जनजातियों को आत्मसात करने का सरकार का सपना अधूरा रह गया है और ऐसी नीतियों और रणनीतियों के कार्यान्वयन पर बुनियादी सवाल खड़े होते हैं।

जनजातीय छात्रों और शिक्षकों के बीच संबंध

जनजातीय शिक्षा के विभिन्न महत्वपूर्ण कारकों में से जो जीवन की राष्ट्रीय मुख्यधारा में एकीकरण को प्रभावित करते हैं वे छात्र और उनके शिक्षक हैं। आदिवासी छात्रों की पृष्ठभूमि उनके गैर–आदिवासी सहपाठियों से भिन्न होती है और यहां तक कि शिक्षक, जो आम तौर पर बाहरी होते हैं, आदिवासी छात्रों को नहीं समझते हैं। शिक्षकों के लिए, आदिवासी छात्र अव्यवस्थित दिखाई देते हैं, जो आदिवासियों के प्रति उनके पूर्वाग्रहों को पुष्ट करते हैं। ये पूर्वाग्रह भेदभाव के विभिन्न रूपों में व्यक्त होते हैं। आदिवासी युवाओं ने शिकायत की है कि शिक्षक उन्हें स्कूलों में नहीं पढ़ाते क्योंकि उनका मानना था कि अगर वे ऐसा करेंगे

तो आदिवासी छात्र उन पर निर्भर नहीं रहेंगे। आदिवासी युवाओं को यह भी लगता है कि शिक्षक उनके अपने रीति–रिवाजों, तौर–तरीकों, भाषा या सामान्य रूप से उनकी सांस्कृतिक विरासत के प्रति दृष्टिकोण को कमजोर करने का प्रयास करते हैं।

जनजातीय त्यौहार, स्वतंत्रता और युवा बनाम शिक्षा

शैक्षिक कार्यक्रम – स्कूल वर्ष, दैनिक कक्षाएं और छुट्टियाँ – जनजातीय संस्कृतियों की कम समझ के साथ आयोजित की जाती हैं। शैक्षिक समय सारिणी की योजना बनाते समय जनजातीय त्योहारों और समारोहों और कृषि और सभा की मौसमी गतिविधियों को ध्यान में नहीं रखा जाता है। आदिवासी विद्यार्थियों की दैनिक या मौसमी आदतों को नज़रअंदाज़ करते हुए, अक्सर शिक्षक शहरों या कस्बों की तरह कक्षाएं आयोजित करते हैं।

शिक्षण संस्थान

स्कूल और उनका परिवेश वहां आने वाले बच्चों के दिमाग को आकार देता है। अधिकांश जनजातीय स्कूल जनजातीय परिवेश में अच्छी तरह घुल–मिल नहीं पाते हैं। वे आदिवासी गांवों में विदेशी और अक्सर बदसूरत संरचनाएं हैं। विद्यालय खुलने के कुछ समय बाद ही वे उपेक्षित एवं जर्जर भवनों का रूप धारण कर लेते हैं। जनजातीय युवाओं की शिक्षा पूरी होने और उन्हें रोजगार मिल जाने के बाद भी, कक्षा में पाला गया नकारात्मक रवैया एक वास्तविक सामाजिक बाधा बना हुआ है। वे न तो अपनी आदिवासी संस्कृति में हैं और न ही राष्ट्रीय संस्कृति में।

शिक्षा का माध्यम

कुछ जनजातियाँ अभी भी अपनी भाषा बोलती हैं। जबकि वयस्क पुरुष अक्सर द्विभाषी होते हैं, महिलाएं और बच्चे लगभग विशेष रूप से आदिवासी बोलियाँ बोलते हैं। फिर भी, स्कूल में प्रवेश करते ही एक आदिवासी बच्चे से अचानक राज्य की भाषा समझने की अपेक्षा की जाती है। बच्चे शिक्षक को नहीं समझ पाते, प्रश्नों का उत्तर देना तो दूर की बात है। कई शिक्षक मानते हैं कि आदिवासी छात्र धीमे होते हैं; भले ही शिक्षक सहानुभूतिपूर्ण हों, फिर भी इस भाषा बाधा पर काबू पाने के लिए बहुत अधिक प्रयास की आवश्यकता होती है। यदि आदिवासी विद्यार्थियों को स्कूल में उनके पहले वर्षों के दौरान उनकी आदिवासी भाषा में पढ़ाया जाए तो इससे काफी मदद मिलेगी। फिर उन्हें धीरे–धीरे क्षेत्रीय भाषा सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

जनजातीय शिक्षा की सामग्री एवं पद्धति

जनजातीय शिक्षा की सामग्री एवं पद्धति का निष्पक्ष मूल्यांकन किया जाना चाहिए। जनजातीय युवाओं की ऐतिहासिक और सामाजिक पृष्ठभूमि अद्वितीय है, लेकिन दो संस्कृतियों को जोड़ने के उनके प्रयासों में विशेष ध्यान और अभिविन्यास की आवश्यकता है। कई स्कूल और कॉलेज पाठ्यक्रम जिनका सामना आदिवासी युवा करते हैं, वे या तो उनके लिए अप्रासंगिक हैं और/या आदिवासी समाज के बारे में केवल नकारात्मक विचार प्रस्तुत करते हैं। जबकि राष्ट्रीय और राज्य सरकारें, सैद्धांतिक रूप से, आदिवासी छात्रों को कई लाभ, रियायतें और सुविधाएं प्रदान करती हैं, उनमें से कुछ ही इच्छित प्राप्तकर्ताओं तक पहुंचते हैं।

जनजातीय नेताओं की शिक्षा

जनजातीय नेतृत्व को बाहरी प्रभावों और पुलिस, अदालतों और राजनीतिक दलों जैसी एजेंसियों द्वारा विकृत कर दिया गया है। राजनीतिक दलों के मामले में, जनजातीय नेताओं को अक्सर स्थानीय समस्याओं के स्थानीय स्तर पर प्राप्त समाधान खोजने के लिए अपने लोगों का नेतृत्व करने की पहल करने के लिए प्रोत्साहित करने के बजाय वोट प्राप्त करने के लिए हेरफेर किया जाता है। परिणामस्वरूप, गाँव की स्वायत्तता नष्ट हो गई, कानून–व्यवस्था ख़राब हो गई और सत्ता के प्रति सम्मान ख़त्म हो गया। आदिवासी नेताओं ने अपने ही लोगों का राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक शोषण करना शुरू कर दिया।

निष्कर्ष

जनजातियों की आज भी सबसे बड़ी समस्या आर्थिक पिछड़ापन है। इसका समाधान करने लिए रोजगार के अवसरों में वृद्धि करने के साथ ही स्वरोजगार की सुविधाओं को बढ़ाना जरूरी हैं। आदिवासी समुदाय आज भी अपनी दस्तकारी और विभिन्न प्रकार की कलाओं के लिए प्रसिद्ध हैं। स्थानीय स्तर पर यदि इनके द्वारा बनायी गयी वस्तुओं को खरीदकर उनके विक्रय की समुचित व्यवस्था की जाये तो आदिवासियों की आर्थिक समस्याओं को काफी हद तक सुलझाया जा सकता हैं। जनजातीय ग्रामों में सहकारी समितियों की स्थापना करके, श्रमिकों को उचित मजदूरी दे कर, ठेकेदारों और वन अधिकारियों द्वारा उनके शोषण को रोकने एवं कम ब्याज पर कृषि के लिए ऋण की सुविधा देने से भी उनकी आर्थिक स्थिति में काफी किया जा सकता। आदिवासी क्षेत्रों में कृषि की नयी और सस्ती प्रविधियों का प्रचार करना भी एक अच्छा कार्य हो सकता हैं। जनजातियों की शैक्षणिक समस्याओं के निराकरण के लिए जनजातीय क्षेत्रों में व्यावहारिक शिक्षा की बहुत आवश्यकता हैं। यह व्यावहारिक शिक्षा कृषि, दस्तकारी, कृषि उपकरणों के निर्माण तथा हस्तशिल्प से संबंधित होनी चाहिए। विभिन्न अध्ययनों से प्रमाणित हुआ हैं कि जनजातीय बच्चों को छात्रवृत्तियाँ देना अधिक उपयोगी नही हैं क्योंकि इससे उनके माता–पिता का ध्यान छात्रवृत्ति की राशि पर ही रहता हैं। इसके बदले बच्चों को स्कूल में पौष्टिक आहार तथा पुस्तकों की सहायता देना अधिक उपयोगी होगा।

शिक्षा के द्वारा जनजातीय क्षेत्रों में पशुपालन, मछली–पालन, मुर्गी पालन तथा मधुमक्खी–पालन को भी प्रोत्साहन दिया जा सकता है। जनजातीय क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा संस्थाओं का विस्तार करना भी आवश्यक है।

सन्दर्भ

- बेस्ट, जे. डब्लू.. रिसर्चस् इन एजूकेशन, फिफ्टी एडीशन, 1986 भागीरथ, जी. एस.. कोरिलेट्स ऑफ अकेडमिक अचीवमेण्ड एज परसीवड् वाय द टीचर्स एण्ड स्टूडेन्ट्स ऑफ हाईस्कूल, पी.एच.डी. एजूकेशन, पंजाब विवि. 1987
- रेड्डी, आई. वी. आर.. अकेडमिक एडजस्टमेन्ट इन रिलेशन टू स्कोलॉस्टिक अचीवमेन्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल प्यूपिल अ लांगिट्यूडिनल स्टडी, पी. एच. डी साइकोलॉजी, एस. वी. वि.. 1978.
- रेड्डी वी.एल.एन., अ स्टडी ऑफ सरटेन फैक्टर्स एसोसिएट्ड विद अकेडमिक अचीवमेन्ट एट द फर्स्ट इयर डिग्री एक्सामिनेशन, पी. एच. डी. एजूकेशन एम. एस.यू—1973
- राव. डी. जी.. अ स्टडी ऑफ सम फैक्टर्स, रिलेटेड टू स्को लॉस्टिक अचीवमेन्ट, ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, पेज 342, 1965
- चटर्जी, एस. मुखर्जी. एमकृव बनर्जी. एस. एन..इफेक्ट ऑफ सरटेन सोसिओ–इकोनॉमिक फैक्टर्स ऑन द स्का लॉ स्टिक अचीवमेन्ट ऑफ द स्कूल चिल्ड्रेन, सायकोमैट्रिक रिसर्च एण्ड सर्विस यूनिट, फर्स्ट, कलकत्ता, 1971
- राव. एस. एन.. स्टूडेंट्स परफार्मेन्स इन रिलेशन टू सम आसपेक्ट्स ऑफ पर्सनेल्टी एण्ड अकेडमिक अचीवमेन्ट, ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, पेज 342, 1963
- राव, एस. एण्ड सुब्रह्मण्यम एस. ए इन्टेन्सिव स्टडी ऑफ सरटेन फैक्टर्स इन्फ्लुएन्सिंग द रीडिंग अटेन्मेन्ट ऑफ प्राइमरी स्कूल चिल्ड्रेन, डिपार्टमेन्ट ऑफ एजूके श न, एसवी. वि.वि. ,1982 (एन.सी.ई.आर.टी. फाइनेन्सड्)
- सिन्हा, एच. सी. शैक्षिक अनुसंधान, विकास पब्लिशिंग हाउस, 1979.
- सोलंकी, आर. बी. अ स्टडी ऑफ द होम एन्वायरमेन्ट, सो शि यो–इको नॉमिक स्टेट्स एण्ड इकोनामिक मैनजमेन्ट इन रिलेशन टू द अकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ द फर्स्ट इयर कालेज स्टूडेंट्स ऑफ एम. एस. यूनीवर्सिटी, बडौदा, पी–एच.डी. एजूकेशन, एम. ए. वि. वि. बडौदा, 1979

सिरोही जिले के जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. अंजलि दशोरा सहायक आचार्य,पैसिफिक एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर (राजस्थान)
स्मृता सिंह मीणा, शोधार्थी पैसिफिक एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर (राजस्थान)

सार

पारिवारिक वातावरण केवल शैक्षणिक उपलब्धि को ही नहीं बल्कि यह मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। परिवार का अच्छा वातावरण बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखता है और बच्चे अपने जीवन में उचित समायोजन कर पाते हैं वहीं दूसरी तरफ परिवार का खराब वातावरण बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है जिससे बच्चे हमेशा चिन्ता, तनाव व अन्तर्द्वन्द्व आदि समस्याओं से ग्रसित हो जाते हैं।

विद्यालय की विभिन्न कक्षाओं में अनेक प्रकार के छात्र शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते है। समान मानसिक योग्यताओं से सम्पन्न न होने के कारण वे समय की एक ही अवधि में विभिन्न विशयों और कुशलताओं मे विभिन्न सीमाओं तक प्रगति करते हैं। उनकी इसी प्रगति प्राप्ति या उपलब्धि का मापन या मूल्यांकन करने के लिए उपलब्धि परीक्षाओं की व्यवस्था की गई है। अतः हम कह सकते हैं कि उपलब्धि परीक्षाएं वे परीक्षाएं हैं, जिनकी सहायता से विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विशयों और सिखाई जाने वाली कुशलताओं में छात्रों की सफलता या उपलब्धि का ज्ञान किया जाता है।

प्रस्तावना

भारत में जनता की उन्नति के लिये अनेक विविध उपक्रम का अमल करने के बावजूद भी जनजातिय एव ं गैर जनजातिय वर्ग के लोगों की आर्थिक एव ं सामाजिक शैक्षिक परिस्थिति संतोषजनक नहीं है। समाज का यह बड़ा शिक्षा से व ंचित न रह जाये। उन्हें शिक्षित करना, उन्हें आत्मनिर्भर बनाना आज की आवश्यकता बन गई है। उनके रहन–सहन और तौर–तरीके से पता लगता है कि भी जनजातिय एव ं गैर जनजातिय लोग आज भी समाज में कितने पीछे है। इन वर्गो में शिक्षा प्रमाण औसम से कम है। इसका प्रमुख कारण कुपोषण, आर्थिक दरिद्रता काम की अयोग्य आदतें, केलापन, आत्मविश्वास का प्रभाव उच्च वर्ग के लोग तथा छात्रों के साथ समायोजन की समस्या आदि है। आजादी के बाद प्रथम एव ं द्वितीय पंचवर्षीय योजनाओं में कुछ विशेष प्रावधान रखकर उनकी उन्नति की कोशिश की गई। छात्रों की शिक्षा के संदर्भ में मुख्य समस्या उनकी बोली व भाषा है क्योंकि पाठशाला में मानक भाषा का उपयोग होता है छात्रों को अपनी मातृभाषा के अलावा अन्य भाषा को सीखना पड़ता है। इसलिय विद्यार्थी पाठशाला में आने से अप्रसन्न होते है।

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एव ं प्रशासन संस्थान (नीपा) द्वारा 23 से 25 नवम्बर 1985 तक शिक्षा नीति योजना एव ं प्रबन्ध विषयक शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्या के सम्मिलित प्रतिवेदन में यह स्वीकार किया गया कि राष्ट्रीय लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए उत्तरदायित्व की प्रक्रिया की स्पष्टता में शैक्षित स्थिति एव ं समस्या का निवारण किया जा सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 शिक्षा में आयोजन एव ं प्रबन्ध पर बल देती है तथा वास्तव में यह शिक्षा नीति भारतीय शिक्षा में सर्वप्रथम सिद्ध हुई। शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार की इस नीति को दर्शाने वाला ''शैक्षिक स्थिति एव ं शैक्षिक समस्या'' नामक दस्तावेज कई स्थानों पर भारतीय शिक्षा की ओर इंगित किये गये। उक्त योजना वर्ष 1986 के प्रकाशन के पश्चात् ही इसमें गति देखने में आई।

अध्ययन के उद्देष्य

किसी भी शोध कार्य को निश्चित दिशा देने के लिये उसके उद्देश्यों का निरूपण अत्यन्त आवश्यक होता है। ये वस्तुतः शोध प्रश्नों पर आधारित होते है जिन्हें औपचारिक भाषा में लिखा जाता है। प्रस्तावित शोध कार्य के निम्नलिखित उद्देश्य है

- जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति का अध्यन करना।
- जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के निजी एवं राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति का अध्यन करना।

शोध प्रविधि

न्यादर्श एक सम्पूर्ण जनसंख्या का वह अंग है जिसमें समग्र की समस्त विशेषताओं का स्तष्ट प्रतिबिम्ब रहता है। अनुसंधान का महत्वपूर्ण आधार जनसंख्या होती है। चूँकि सम्पूर्ण जनसंख्या पर अध्ययन करना कठिन होता ळें जनसंख्या में से कुछ प्रतिनिधि न्यादर्श का च ुनाव कर लिया जाता है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा न्यादर्श का चयन दक्षिणी राजस्थान के

सिरोही जिले निजी एव ं राजकीय विद्यालय स्तर कुल 320 विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा। प्रत्येक निजी एव ं राजकीय विद्यालय से 160 जनजातीय एव ं160 गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों का यादृच्छिक प्रतिचयन विधि के माध्यम से चयन किया जाएगा। जिसे निम्नानुसार समझा जा सकता है।

<u>छात्रों हेतु</u>

कक्षा में संसाधनों का अभाव है।

तालिका :1 संसाधनों का अभाव

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	44	76	91	29	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	32	88	82	38	240
कुल	76	164	173	67	480

कुल 240 छात्रों में से 76 छात्रों ने यह कहा कि निजीविद्यालय में कक्षा में संसाधनों का अभाव है जबकि 164 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति दर्शायी। वहीं राजकीय विद्यालय के 173 छात्रों ने उनकी कक्षा में संसाधनों का अभाव से सहमति दिखाते हुए अपना जवाब दिया जबकि केवल 67 छात्र ने कहा कि अपनी कक्षा में संसाधनो का अभाव नहीं है। अतः यह यह स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालय कि कक्षाओं में निजी विद्यालय की तुलना में कक्षा में संसाधनों का अभाव है।

अध्यापक द्वारा दी गई गतिविधियों को आप रूचिपूर्ण समझते है।

तालिका :2 रूचिपूर्ण

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	21	99	44	76	240
गैर जनजातीय क्षेत्र	34	86	54	66	240
कुल	55	185	98	142	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या अध्यापक द्वारा दी गई गतिविधियों को आप रूचिपूर्ण समझते है, तो निजीविद्यालय के कुल 240 छात्रों में से केवल 55 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए कहा कि शैक्षिक गतिविधियों को वह रूचिपूर्ण समझते है जबकि 185 छात्रों ने जवाब नहीं में देते हुए अपनी अरूचि दर्शायी। अतः नीजी विद्यालय में कक्षा में शैक्षिक गतिविधियों को छात्र रूचिपूर्वक नहीं समझते है।

वहीं राजकीय विद्यालय के भी केवल 98 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए सहमति जतायी की उनकी शैक्षिक गतिविधियों को रूचिपूर्वक वह समझते है जबकि केवल 142 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति दर्शायी। अतः राजकीय विद्यालय कक्षा में भी शैक्षिक गतिविधियों को छात्र रूचिपूर्वक नहीं समझते है।

इससे स्पष्ट होता है कि छात्र कक्षाउपरान्त गतिविधियों को रूचिपूर्वक नहीं समझते है।

अध्यापक/अभिभावक : न्यादर्श :

आप द्वारा परिवार में बालकों को सुविधाएं दी जाती है।

तालिका :3 बालकों को सुविधाएं

विवरण	अभिभावक				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	7	6	7	4	24
गैरजनजातीय क्षेत्र	5	6	6	7	24
कुल	12	12	13	11	48

जब उत्तरदाताओं (अभिभावकों) से यह प्रश्न किया गया कि क्या आपके द्वारा परिवार में बालकों को सुविधाएं दी जाती है, तो निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के 24 अभिभावकों में से 12 अभिभावकों ने सहमति दिखायी की वह बालकों को सुविधाएं देते है व 12 अभिभावकों ने कहा की वह बालकों को सुविधाएं नहीं है। वहीं राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के 24 अभिभावकों में भी 13 अभिभावकों के द्वारा छात्रों को सुविधाएं दि जाती है व 11 अभिभावकों के द्वारा छात्रों को सुविधाएं नहीं दि जाती ।

इससे यह स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालय व निजी विद्यालय के छात्रों के अभिभावक द्वारा छात्रों को सुविधाएं देने या न देने का अनुपात एक ही है।

आपको शिक्षण कौशल में वृद्धि हेतु प्रशिक्षण दिये जा रहे है।

तालिका : 4 कौशल में वृद्धि हेतु प्रशिक्षण

विवरण	अध्यापक				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	10	2	7	5	24
गैरजनजातीय क्षेत्र	9	3	6	6	24
कुल	19	5	13	11	48

जब उत्तरदाताओं (अध्यापकों) से यह प्रश्न किया गया कि क्या आपको शिक्षण कौशल में वृद्धि हेतु प्रशिक्षण दिये जा रहे है, तो निजी विद्यालय के 24 अध्यापकों में से 19 अध्यापकों ने सहमति दिखाई की उन्हे शिक्षण प्रशिक्षण प्राप्त होता है व 5 अध्यापकों नें इससे इन्कार किया। वहीं राजकीय विद्यालय के 24 अध्यापकों में 13 अध्यापकों ने सहमति दिखायी व 11 अध्यापकों ने असहमति दिखाई।

इससे यह स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालय व राजकिय विद्यालय के अध्यापकों को शिक्षण कौशल में वृद्धि के लिए प्रशिक्षण दियाजाता है जिससे अध्यापकों के शिक्षण प्रक्रिया में और अधिक वृद्धि हो।

निष्कर्ष

सभी शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि वे सभी बच्चों की शिक्षण आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। शिक्षकों को कक्षाओं में जाने से पहले उन्हें अच्छी गुणवत्ता वाले सेवा–पूर्व शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में भाग लेना चाहिए जो पढ़ाए जाने वाले विषयों के ज्ञान तथा शिक्षण पद्धतियों के बीच ज्ञान के बीच संतुलन पैदा कर सकें। सेवा–पूर्व शिक्षक शिक्षा के अंतर्गत पर्याप्त कक्षा शिक्षण अनुभव को प्रशिक्षण का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाना चाहिए ताकि वे योग्य शिक्षक बन सकें। इसे

शिक्षकों को व्यावहारिक कौशल प्रयास करना चाहिए ताकि बच्चों को पढ़ना सिखाया जा सके और वे बुनियादी गणित को समझ सकें। सजातीय रूप में विविध समाजों को एक से अधिक भाषा में पढ़ना सिखाना चाहिए। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों को भी ऐसा शिक्षक तैयार करने चाहिए जो अनेक कक्षा और वर्गों को एक ही कक्षा में पढ़ा सकें और यह समझ सकें कि जेंडर भिन्नता के लिए शिक्षक का व्यवहार कैसे शिक्षा के परिणामों को प्रभावित कर सकता है। प्रत्येक शिक्षक के लिए शिक्षण कौशल को विकसित और सुदृढ़ करने हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण महत्वपूर्ण है। यह शिक्षकों को कमजोर छात्रों, विशेषकर शुरुआती कक्षा में छात्रों को नए विचार उपलब्ध करा सकता है, और शिक्षकों को नए पाठ्यक्रम के अनुसार परिवर्तन लाने में मदद कर सकता है। अभिनव दृष्टिकोण जैसे दूरस्थ शिक्षक शिक्षा, तथा साथ ही प्रशिक्षण और परामर्श को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि सेवा–पूर्व और सेवाकालीन विषय शिक्षा, दोनों को बड़ी संख्या में शिक्षकों को दिलाया जा सके।

सन्दर्भ

- जायसवाल , सीताराम : शिक्षा में निर्देशन और परामर्श , विनोद पुस्तक प्रकाशन आगरा 1990
- माथुर , एस . एस., शिक्षा मनोविज्ञान विनोद पुस्तक प्रकाशन , आगरा 1993
- कपिल , एच . के ., अनुसंधान विधियाँ , हरी प्रसाद भागर्व प्रकाशन आगरा 1980
- Alexander, J.H. & Rajendran, K. (1992). Influence of Self Concept, Sex, Area and Parents Education on Students Adjustment Problems. Journal of Educational Research and Extension, 28 (3), January.
- Anand, A. & Kavita (2012). Relationship of Academic Performance of Prospective Teachers with Achievement Motivation, Emotional Intelligence and Creativity. Researcher's Tandem, 3 (11).
- Arora, R. (2016). Emotional Intelligence of Adolescents in Relation to Creativity. Imperial Journal of Interdisciplinary Research (IJIR), 2(4), 85-90.
- Batey, M. et al (2006). Creativity, Intelligence, and Personality: A Critical Review of the Scattered Literature. Genetic, Social, and General Psychology Monographs, 132, 355- 429.
- Batey, M. et al (2010). Individual Differences in Ideational Behavior: Can the big five and Psychometric Intelligence Predict Creativity Scores? Creativity Research Journal, 22, 90- 97.

Two Days International Seminar on Multidisciplinary Research in

Education, Entrepreneurship, Employment & Economic Development

DATE : 11-12 December, 2022

VENUE : Conference Hall, (J.D.S.S.S.), Sneh Sadan South Civil Lines, Jabalpur (Madhya Pradesh), INDIA

Certificate

This is to certify that Prof/Dr/Shri/Mrs./Mr./Ku.

Smrita Singh Meena

University / College / Organization

Research Scholar, Pacific Academy of Higher Education & Research University, Udaipur

Registration No. **283** Subject **Education**

In the Two Days International Seminar on Multidisciplinary Research in Education, Entrepreneurship, Employment & Economic Development. International Seminar jointly organized by Swami Vivekanand University, Sagar (M.P.), Mahakaushal University, Jabalpur (M.P.), Radiant Group of Institutions, Jabalpur (M.P.), India, Madhya Pradesh Management Association, International Youth Economic Association & Social Science & Management Welfare Association.

He / She successfully attended / Participated / Presented a paper entitled

सिरोही जिले के जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Jairus Casian Mlowe	Dr. Bless Maricar B. Ramos	Dr. Muthmainnah, S.Pdi.,M.Pd.	Er. Nitin Basedia	Dr. Praveen Kumar Jha
Vice President International Youth Economic Association & Social Science & Management Welfare Association, Tanjania, Africa Advisory Board Member SSMWA & IYEA	International Head Women ISSMWA Department of Education, Philippines Advisory Board Member ISSMWA	Seminar Co-Convener Department of Education, Universitas Al Asyariah Mandar West Sulawesi, Indonesia Advisory Board Member ISSMWA	Director Radiant Group of Institutions Jabalpur (M.P.), India	Seminar Convener President Youth Economic Association

Jointly Organized By

Mahakaushal University, Jabalpur (M.P.), India, Swami Vivekanand University, Sagar (M.P.)
Radiant Group of Institutions, Jabalpur (M.P.), Madhya Pradesh Management Association
International Youth Economic Association & Social Science & Management Welfare Association

Office : 320, Sanjeevani Nagar, Veer Sawarkar Ward Garha, Jabalpur (M.P.), INDIA-482003, Cell - 8305476707, 9770123251, 7509086613

www.issmwa.com

MULTI-DISCIPLINARY ONE DAY INTERNATIONAL E-CONFERENCE

On

WOMEN EMPOWERMENT : ROLE OF LAWS, SOCIETY, CULTURE, POLITICS, LITERATURE AND MEDIA

Organized by

IQAC, Dr. Babasaheb Ambedkar College of Arts, Commerce and Science, Bramhapuri, Dist. Chandrapur, Maharashtra, India - 441206

CERTIFICATE

This is to certify that Prof./~~Dr.~~/~~Mr.~~/Mrs./Ms Smrita Singh Meena.

of Pacific Academy of Higher Education & Research University Udaipur.

has successfully participated in INTERNATIONAL E-CONFERENCE ON " **WOMEN EMPOWERMENT : ROLE OF LAWS, SOCIETY, CULTURE, POLITICS, LITERATURE AND MEDIA**" organized by IQAC, Dr. Babasaheb Ambedkar College of Arts, Commerce and Science, Bramhapuri, Dist. Chandrapur, Maharashtra, India on 17th August 2023.

She/~~He~~ has Presented/~~Published~~ Paper entitled जनजातीय क्षेत्र में शिक्षा के महत्व एवं शिक्षा प्रणाली का अध्ययन

in the Conference / ~~UGC Care Listed Journal~~ / Peer Reviewed Journal.

Convener	Co-Convener	Principal
Dr. Snigdha R. Kamble	Dr. Dharmapal B. Fulzele	Dr. Devesh M. Kamble

Digital Receipt

This receipt acknowledges that Turnitin received your paper. Below you will find the receipt information regarding your submission.

The first page of your submissions is displayed below.

Submission author:	L M
Assignment title:	03
Submission title:	COMPARATIVE STUDY OF EDUCATIONAL STATUS AND EDUCA...
File name:	FULL_THESIS.pdf
File size:	2.08M
Page count:	159
Word count:	37,806
Character count:	139,673
Submission date:	23-Feb-2024 11:02PM (UTC-0800)
Submission ID:	2303074446

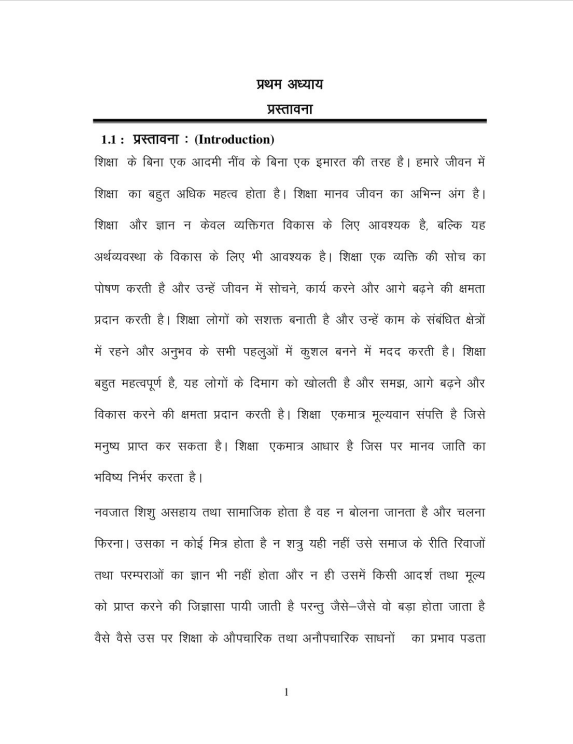

प्रथम अध्याय

प्रस्तावना

1.1 : प्रस्तावना : (Introduction)

शिक्षा के बिना एक आदमी नींव के बिना एक इमारत की तरह है। हमारे जीवन में शिक्षा का बहुत अधिक महत्व होता है। शिक्षा मानव जीवन का अभिन्न अंग है। शिक्षा और ज्ञान न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि यह अर्थव्यवस्था के विकास के लिए भी आवश्यक है। शिक्षा एक व्यक्ति की सोच का पोषण करती है और उन्हें जीवन में सोचने, कार्य करने और आगे बढ़ने की क्षमता प्रदान करती है। शिक्षा लोगों को सशक्त बनाती है और उन्हें काम के संबंधित क्षेत्रों में रहने और अनुभव के सभी पहलुओं में कुशल बनने में मदद करती है। शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है, यह लोगों के दिमाग को खोलती है और समझ, आगे बढ़ने और विकास करने की क्षमता प्रदान करती है। शिक्षा एकमात्र मूल्यवान संपत्ति है जिसे मनुष्य प्राप्त कर सकता है। शिक्षा एकमात्र आधार है जिस पर मानव जाति का भविष्य निर्भर करता है।

नवजात शिशु असहाय तथा सामाजिक होता है वह न बोलना जानता है और चलना फिरना। उसका न कोई मित्र होता है न शत्रु यही नहीं उसे समाज के रीति रिवाजों तथा परम्पराओं का ज्ञान भी नहीं होता और न ही उसमें किसी आदर्श तथा मूल्य को प्राप्त करने की जिज्ञासा पायी जाती है परन्तु जैसे–जैसे वो बड़ा होता जाता है वैसे वैसे उस पर शिक्षा के औपचारिक तथा अनौपचारिक साधनों का प्रभाव पडता

1

Copyright 2024 Turnitin. All rights reserved.

COMPARATIVE STUDY OF EDUCATIONAL STATUS AND EDUCATIONAL PROBLEMS OF THE STUDENTS OF TRIBAL AND NON TRIBAL AREA OF SIROHI DISTRICT

ORIGINALITY REPORT

6%	3%	1%	4%
SIMILARITY INDEX	INTERNET SOURCES	PUBLICATIONS	STUDENT PAPERS

PRIMARY SOURCES

1	Submitted to Pacific University Student Paper	1%
2	baadalsg.inflibnet.ac.in Internet Source	1%
3	Submitted to Shri Jagdishprasad Jhabarmal Tibrewala University Student Paper	1%
4	urban.rajasthan.gov.in Internet Source	1%
5	unesdoc.unesco.org Internet Source	<1%
6	Submitted to University of Hull Student Paper	<1%
7	bohalshodhmanjusha.com Internet Source	<1%
8	Submitted to Banaras Hindu University Student Paper	<1%